राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में भारतीय ...

देवेंद्र फडणवीस को दी चुनौती तो भड़के एकनाथ शिंदे ... 12

वर्ष : 12 | अंक : 113 | पटना, शनिवार, 03 अगस्त, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

तीन नए कानूनों के लागू होने से देश में न्याय व्यवस्था का एक नया युग शुरू हुआ : मुर्मू

राष्ट्रपति ने राज्यपालों के दो दिवसीय सम्मेलन का किया उद्घाटन

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रपति भवन में राज्यपालों के दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। राष्ट्रपति ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि इस सम्मेलन के एजेंडे में सावधानीपूर्वक चुने गए मुद्दे शामिल हैं जो हमारे राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि सम्मेलन में होने वाले विचार-विमर्श सभी प्रतिभागियों के लिए एक समृद्ध अनुभव होंगे और उन्हें उनके कामकाज में मदद करेंगे। राष्ट्रपति ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, गरीब और वंचित वर्गों के विकास, युवा विकास, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक खेती सहित विभिन्न मुद्दों पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र को उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह मंत्री ने भी संबोधित किया। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने राज्यपालों की शपथ का उल्लेख किया और उनसे पिछले दशक के दौरान हुए सामाजिक कल्याण योजनाओं और अविश्वसनीय विकास के बारे में लोगों को जागरूक करने की अपनी संवैधानिक जिम्मेदारी का निर्वहन करने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राज्यपालों से आग्रह किया कि वे केन्द्र और राज्य के बीच प्रभावी सेतु की भूमिका निभाएं तथा लोगों और सामाजिक संगठनों के साथ इस प्रकार संवाद करें कि वंचित लोगों को भी इसमें शामिल किया जा सके। उन्होंने कहा कि राज्यपाल का पद एक महत्वपूर्ण संस्था है जो संविधान के ढांचे के भीतर राज्य के लोगों के कल्याण में, विशेषकर जनजातीय क्षेत्रों के संदर्भ में, महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दो दिवसीय सम्मेलन में होने वाली चचाओं की रूपरेखा बताई और राज्यपालों से लोगों में विश्वास पैदा करने और विकास कार्यों को बढ़ावा देने के लिए जीवंत गांवों और आकांक्षी जिलों का दौरा करने का आग्रह किया। राष्ट्रपति ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि आपराधिक न्याय से संबंधित तीन नए कानूनों के लागू होने से देश में न्याय व्यवस्था का एक नया युग शुरू हुआ है। उन्होंने कहा कि हमारी सोच में बदलाव इन कानूनों के नामों से स्पष्ट है: भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम। राष्ट्रपति ने कहा कि लोकतंत्र के सुचारू संचालन के लिए यह जरूरी है कि विभिन्न केंद्रीय एजेंसियां सभी राज्यों में बेहतर समन्वय के साथ काम करें। उन्होंने राज्यपालों को सलाह दी कि वे इस बारे में सोचें कि वे संबंधित राज्यों के संवैधानिक प्रमुख के रूप में इस समन्वय को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा एक अमूर्त संपत्ति है क्योंकि यह व्यक्तिगत विकास और सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ नवाचार और आर्थिक प्रगति को भी बढ़ावा देती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शैक्षणिक संस्थानों की मान्यता और मूल्यांकन प्रणाली में सुधार पर जोर दिया गया है। उन्होंने राज्यपालों से राज्य विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति के रूप में अपनी क्षमता में इस सुधार प्रक्रिया में योगदान देने का आग्रह किया। राष्ट्रपति ने कहा कि भारत सरकार गरीबों, सीमावर्ती क्षेत्रों, वंचित वर्गों और क्षेत्रों तथा विकास यात्रा में पीछे छूट गए लोगों के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने बताया कि हमारी जनजातीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा अनुसूचित और जनजातीय क्षेत्रों में रहता है, और उन्होंने राज्यपालों से इन क्षेत्रों के लोगों के समावेशी विकास को प्राप्त करने के तरीके सुझाने का आग्रह किया।

संक्षिप्त खबरें

राष्ट्रपति 5 से 10 अगस्त तक तीन देशों की यात्रा पर जाएंगी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 5 से 10 अगस्त तक फिजी, न्यूजीलैंड और तिमोर-लेस्ते की राजकीय यात्रा करेंगी। यह भारत के किसी राष्ट्राध्यक्ष की फिजी की पहली यात्रा होगी। राष्ट्रपति की तीन देशों की यात्रा से पहले शुक्रवार को विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व) जयदीप मजूमदार ने विशेष ब्रीफिंग में कहा कि भारत के फिजी, न्यूजीलैंड और तिमोर-लेस्ते के साथ मजबूत, गहरे और ऐतिहासिक संबंध हैं। उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों में भारत-न्यूजीलैंड के बीच मधुर एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों में वृद्धि देखी गई, जिसे राष्ट्रपति मुर्मू की यात्रा से और गति मिलेगी। मजूमदार ने कहा कि राष्ट्रपति मुर्मू फिजी के राष्ट्रपति रातू विलियम मैवलिली काटोनीवरे के निमंत्रण पर 5-6 अगस्त को फिजी का दौरा करेंगी। यह भारत के किसी राष्ट्राध्यक्ष की फिजी की पहली यात्रा होगी। राष्ट्रपति मुर्मू वहां राष्ट्रपति काटोनीवरे और प्रधानमंत्री सिटिवेनी राबुका के साथ द्विपक्षीय बैठकें करेंगी। राष्ट्रपति मुर्मू का फिजी की संसद को संबोधित करने और फिजी में भारतीय प्रवासियों से बातचीत करने का कार्यक्रम है। यह यात्रा फिजी के साथ द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के लिए भारत की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

वज्रपात से 08 लोगों की मौत पर मुख्यमंत्री ने जताया शोक

पटना। पिछले 24 घंटे में वज्रपात से पटना में 03, औरंगाबाद में 03, नवादा में 01 एवं सारण में 01 व्यक्ति की मौत पर मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आपदा की इस घड़ी में वे प्रभावित परिवारों के साथ हैं। मुख्यमंत्री ने मृतक के परिजनों को अविलंब चार-चार लाख रुपए अनुग्रह अनुदान देने के निर्देश दिये हैं। मुख्यमंत्री ने लोगों से अपील की है कि सभी लोग खराब मौसम में पूरी सतर्कता बरतें। खराब मौसम होने पर वज्रपात से बचाव के लिये आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किये गये सुझावों का अनुपालन करें। खराब मौसम में घरों में रहें और सुरक्षित रहें।

पीठ ने कहा - तथ्यों के मुताबिक परीक्षा में कोई प्रणालीगत उल्लंघन नहीं हुआ

नीट यूजी परीक्षा के लिए मानक संचालन प्रक्रिया बनाये एनटीए व सरकार : सुप्रीम कोर्ट

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने स्नातक स्तर की मेडिकल और संबंधित अन्य पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आयोजित होने वाली राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट-यूजी) के प्रश्नपत्र बनाने से लेकर परीक्षा केंद्र पर सुरक्षित पहुंचाने, सुरक्षित रखने, संबंधित परीक्षार्थियों को समय पर देने और कड़ी जांच सुनिश्चित करने के लिए शुक्रवार को केंद्र सरकार और राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी को एक मानक संचालन प्रक्रिया बनाने का निर्देश दिया। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ तथा न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने पांच मई 2024 को आयोजित नीट-यूजी में गड़बड़ी समेत अन्य अनियमितताओं के खिलाफ दायर याचिकाओं पर विस्तृत फैसला सुनाते हुए यह निर्देश दिया। पीठ ने 23 जुलाई के अपने फैसले में नीट परीक्षा दोबारा कराने की गुहार ठुकरा दी थी। पीठ ने आज अपने विस्तृत फैसले में कहा कि उपलब्ध तथ्यों से पता चलता कि परीक्षा में कोई प्रणालीगत उल्लंघन नहीं हुआ कि परीक्षा रद्द कर दोबारा कराने का आदेश दिया जाए। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने नीट-यूजी परीक्षा आयोजित करने के लिए निष्पक्ष, पूर्णतः सुरक्षित, पारदर्शी और मजबूत प्रणाली सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

पीठ ने धोखाधड़ी को रोकने के लिए विभिन्न चरणों में पहचान जांच बढ़ाने और तकनीकी नवाचारों का भी आदेश दिया। शीर्ष अदालत ने नीट-यूजी 2024 के प्रश्न पत्र सार्वजनिक होने और अन्य अनियमितताओं की जांच के लिए केंद्र सरकार द्वारा गठित के राधाकृष्णन विशेषज्ञ समिति के दायरे को भी बढ़ाते हुए कहा कि समिति को एक मजबूत परीक्षा प्रक्रिया के लिए सात चरणों को शामिल करना चाहिए। सात चरणों में मूल्यांकन समिति, मानक संचालन प्रक्रिया, परीक्षा केंद्र आवंटित करने की प्रक्रिया की समीक्षा, बढ़ी हुई पहचान जांच के लिए प्रक्रिया, परीक्षा केंद्रों की सीसीटीवी निगरानी, पेपर में छेड़छाड़ न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षित लॉजिस्टिक प्रदाता और एक मजबूत शिकायत निवारण तंत्र की सिफारिश करना शामिल है। पीठ ने यह भी कहा कि विशेषज्ञ समिति को परीक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करना चाहिए। शीर्ष अदालत ने प्रश्नपत्र केंद्रों तक पहुंचाने के लिए खुले ई-रिक्शा के बजाय वास्तविक समय के लॉक वाले बंद वाहनों का उपयोग करने की व्यवहार्यता पर विचार करने का भी निर्देश दिया। पीठ ने कहा कि यदि किसी छात्र को फैसले में हल किए गए मुद्दों से संबंधित किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत शिकायत है तो वह संबंधित उच्च न्यायालयों में जाने के लिए स्वतंत्र होगा। पीठ ने इस बात पर भी जोर दिया कि वह इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि प्रश्न पत्र सार्वजनिक होने की घटनाएं केवल पटना और हजारीबाग तक ही सीमित थीं। प्रश्नपत्रों का कोई व्यवस्थित तौर पर दुरुपयोग नहीं हुआ है। उच्चतम न्यायालय ने 23 जुलाई को नीट 2024 दोबारा परीक्षा आयोजित करने का आदेश देने की याचिका को खारिज कर दिया था। उसने तब कहा था कि रिकॉर्ड पर उपलब्ध तथ्य यह संकेत नहीं देते है कि प्रश्न पत्र सार्वजनिक होने की घटनाओं के कारण पूरी परीक्षा की पवित्रता प्रभावित हुई थी।

आयुष्मान भारत के तहत 29,000 अस्पताल सूचीबद्ध हुए : जेपी नड्डा

बोलें- सभी सूचीबद्ध अस्पतालों ने समझौता ज्ञापन पर किए हस्ताक्षर

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने शुक्रवार को लोकसभा को बताया कि गत 30 जून तक 12,625 निजी सहित 29,000 से अधिक अस्पतालों को आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत सूचीबद्ध किया गया है। उन्होंने कहा कि सभी सूचीबद्ध अस्पतालों ने अपनी-अपनी राज्य स्वास्थ्य एजेंसियों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

नड्डा ने कहा कि पैनल में शामिल अस्पतालों द्वारा इलाज से इनकार करने या योजना से संबंधित किसी अन्य मुद्दे के संबंध में लोग वेब आधारित पोर्टल केंद्रीकृत शिकायत निवारण प्रबंधन प्रणाली (सीजीआरएमएस), केंद्रीय और राज्य कॉल सेंटर सहित विभिन्न मीडिया का उपयोग करके अपनी शिकायतें दर्ज करा सकते हैं और इन शिकायतों का निवारण भी करा सकते हैं।

उन्होंने कहा कि लाभार्थी अस्पतालों को पैनल से हटाने सहित दोषी अस्पतालों के खिलाफ कार्रवाई के लिए राज्य स्वास्थ्य एजेंसी से संपर्क कर सकते हैं। लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में नड्डा ने कहा कि सभी सूचीबद्ध अस्पताल पात्र लाभार्थियों को उपचार प्रदान करने के लिए उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा कि अस्पताल को सूचीबद्ध करना एक सतत प्रक्रिया है।

जन औषधि केंद्रों से दवाएं खरीदने से मरीजों को 28,000 करोड़ रुपये की बचत हुई: केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे पी नड्डा ने शुक्रवार को लोकसभा में कहा कि प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना के तहत सस्ती कीमतों पर बेची जाने वाली दवाओं और चिकित्सा उपकरणों से लोगों को अब तक 28,000 करोड़ रुपये से अधिक की बचत करने में मदद मिली है। उन्होंने कहा कि देश भर में जन औषधि केंद्रों के माध्यम से 1,965 दवाएं और 235 चिकित्सा उपकरण बेचे जाते हैं और ये इन केंद्रों पर 52 से 80 प्रतिशत तक की रियायती कीमत पर उपलब्ध हैं। प्रश्नकाल के दौरान नड्डा ने एक पूरक प्रश्न के उत्तर में कहा कि जन औषधि केंद्रों पर कीमतों में कमी के कारण मरीज अब तक 28,000 करोड़ रुपये बचाने में सफल रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्री के अनुसार, उपचार के लिए किफायती दवाएं और विश्वसनीय प्रतिरोपण (अमृत) योजना के तहत दवाएं और चिकित्सा उपकरण खरीदने के बाद मरीजों ने 24,273 करोड़ रुपये की बचत की है।

मेरे खिलाफ ईडी की छापेमारी की तैयारी, दिल खोलकर इंतजार है : राहुल

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को दावा किया कि सदन में चक्रव्यूह वाले भाषण के बाद उनके खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय की छापेमारी की तैयारी हो रही है। उन्होंने यह भी कहा कि वह ईडी के लोगों का दिल खोलकर इंतजार कर रहे हैं तथा उन्हें वह अपनी तरफ से चाय एवं बिस्कुट की पेशकश करेंगे। कांग्रेस नेता ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया, जाहिर है कि 2 इन 1 को मेरा चक्रव्यूह वाला भाषण अच्छा नहीं लगा। ईडी के अंदरूनी सूत्रों ने बताया है कि छापेमारी की तैयारी हो रही है। मैं ईडी का दिल खोलकर इंतजार कर रहा हूं। मेरी तरफ से चाय और बिस्कुट। इसी से जुड़े एक अन्य घटनाक्रम में, कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने भाजपा सरकार द्वारा राजनीतिक उत्पीड़न के लिए ईडी, सीबीआई और आयकर विभाग जैसी एजेंसियों का दुरुपयोग किए जाने पर चर्चा की मांग करते हुए लोकसभा में कार्यस्थगन प्रस्ताव का नोटिस दिया।

कांग्रेस वायनाड में 100 से अधिक घर बनाएगी : लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को घोषणा की कि कांग्रेस वायनाड में 100 से अधिक घर बनाएगी। उन्होंने कहा कि केरल ने पहले किसी भी क्षेत्र में ऐसी त्रासदी नहीं देखी है और वह इस मुद्दे को राज्य व केंद्र दोनों के समक्ष उठाएंगे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी इन दिनों वायनाड में राहत शिविरों का दौरा कर रहे हैं, जो तीन बड़े भूस्खलनों से प्रभावित हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप 275 से अधिक लोगों की मौत हो गई और कई घर नष्ट हो गए। राहुल गांधी ने कहा कि वे कल गुरुवार से वायनाड में हैं। उन्होंने कहा कि यह एक भयानक त्रासदी है। हम कल साइट पर गये थे। हम शिविरों में गए, हमने वहां की स्थिति का आकलन किया। आज शुक्रवार को हमने प्रशासन और पंचायत के साथ बैठक की। उन्होंने हमें हताहतों की संख्या, क्षतिग्रस्त हुए घरों की संख्या और अपनी रणनीति के बारे में जानकारी दी।

राज्यसभा में नीट को समाप्त करने संबंधी गैर सरकारी संकल्प का सत्ता पक्ष ने किया विरोध

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। राज्यसभा में शुक्रवार को राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा और राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी को समाप्त करने के प्रावधान वाले एक गैर सरकारी संकल्प पर, सरकार एवं सत्ता पक्ष के सदस्यों ने सदन में चर्चा कराये जाने का यह कहते हुए विरोध किया कि जब इस मामले में उच्चतम न्यायालय का निर्णय आ चुका है तो इस पर चर्चा करना उचित नहीं होगा। शुक्रवार होने के कारण उच्च सदन में दोपहर दो बजे जब गैर सरकारी कामकाज शुरू हुआ तो द्रमुक के एम मोहम्मद अब्दुल्ला ने आसन की अनुमति से शिक्षा को समवर्ती सूची से हटाकर राज्य सूची में डालने के प्रावधान वाले गैर सरकारी संकल्प को चर्चा के लिए पेश किया। इसी संकल्प में नीट-यूजी और एनटीए को समाप्त करने का प्रावधान है। जब द्रमुक सदस्य इस गैर सरकारी संकल्प को चर्चा के लिए रख रहे थे तब शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने इसका विरोध करते हुए कहा कि नीट परीक्षा के बारे में उच्चतम न्यायालय का निर्णय भी आ चुका है। चौधरी ने कहा कि सरकार ने भी इस मामले पर गौर किया और कई विशेषज्ञों वाली एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति का गठन किया है। उन्होंने कहा कि यह समिति पूरी परीक्षा प्रणाली तथा राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) के कामकाज पर अध्ययन कर अपनी सिफारिशें देगी। उन्होंने कहा कि इस परिस्थिति में यदि सदन एनटीए और नीट परीक्षा को समाप्त करने के बारे में चर्चा करता है तो यह उच्चतम न्यायालय के निर्णय की भावना के विरूद्ध होगा। उन्होंने द्रमुक सदस्य से उनका प्रस्ताव वापस लेने का अनुरोध किया। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के जॉन ब्रिटास ने कहा कि नीट परीक्षा उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर नहीं शुरू हुई थी बल्कि केंद्र सरकार के प्रस्ताव पर सर्वोच्च न्यायालय ने सहमति व्यक्त की थी। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय के निर्णय का बहाना बनाकर सरकार को, सदस्यों के निजी विधेयक सदन में लाने के अधिकार को सीमित करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। भाजपा के घनश्याम तिवाड़ी ने कहा कि उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर भारत सरकार ने नीट परीक्षा शुरू करवायी थी। उन्होंने कहा कि अब जबकि सरकार ने एक समिति बना दी है तो इस पर सदन में चर्चा करना उचित नहीं है। उन्होंने इस संकल्प को चर्चा के लिए पेश करने के मुद्दे का फैसला सदन में मत विभाजन के जरिये कराने की मांग की संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने शिक्षा राज्य मंत्री चौधरी और भाजपा सदस्य तिवाड़ी की बातों का समर्थन करते हुए कहा कि इसको लेकर सदन में मत विभाजन कराना उपयुक्त होगा। कांग्रेस के शक्ति सिंह गोहिल ने कहा कि यह मामला अदालत में विचाराधीन नहीं है क्योंकि उच्चतम न्यायालय का निर्णय आ गया है। उन्होंने कहा कि जब सदन के सभापति ने इसे पेश करने को अपनी अनुमति दे दी है तो किसी सदस्य को उसके अधिकारों के प्रयोग से कैसे रोका जा सकता है?

महोत्सव | **मखाना एवं इसके प्रसंस्कृत उत्पाद एवं निर्यात क्षमता को बढ़ाना महोत्सव का उद्देश्य : सचिव**

मखाना महोत्सव का आयोजन आज से, उत्पादकों व खरीदारों का होगा जुटान

ज्ञान भवन में आयोजित दो दिवसीय महोत्सव का कृषि मंत्री करेंगे उद्घाटन

प्रातः किरण

पटना। दो दिवसीय मखाना महोत्सव का आयोजन आज यानी शनिवार से पटना के ज्ञान भवन में किया जा रहा है, जिसका उद्घाटन कृषि मंत्री मंगल पाण्डेय करेंगे। महोत्सव में उत्पादकों, वैज्ञानिकों एवं व्यापारियों का जुटान होगा। उक्त जानकारी कृषि विभाग के सचिव संजय अग्रवाल ने दी। श्री अग्रवाल ने बताया कि मखाना महोत्सव 2024 के आयोजन का मुख्य उद्देश्य मखाना एवं इसके प्रसंस्कृत उत्पाद एवं निर्यात क्षमता को बढ़ाना है। फलस्वरूप इस महोत्सव में मखाना के प्रगतिशील कृषकों एवं उत्पादक कंपनी, देश एवं राज्य के प्रमुख निर्यातकों, ट्रेडर्स, वैज्ञानिक आदि को आमंत्रित किया गया है। उन्होंने बताया कि मखाना उत्पादन के आधुनिक तकनीकी से कृषकों को रूबरू कराना, मखाना व्यापार के नये आयाम को खोजना एवं विकसित करना तथा मखाना के औषधीय एवं पोषक गुणों के प्रति आमजन को जागरूक करना है। महोत्सव के माध्यम से मखाना उत्पादक कृषकों, वैज्ञानिकों, व्यापारियों, संबद्ध विभागों को एक मंच प्रदान किया जाता है, जहाँ कृषक अपनी सफलता का प्रदर्शन कर पाते हैं, वहीं वैज्ञानिक, निर्यातक, संबद्ध विभाग से मिलकर अपनी समस्याओं का निराकरण प्राप्त करते हैं एवं अपने उत्पाद को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मार्केटिंग के विभिन्न पहलू पर ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं।

महोत्सव के प्रथम दिन मखाना के उत्पादन में वृद्धि की संभावना, पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट, यंत्रीकरण, देश के बाजार के लिए बिहार के मखाना की आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना, वैश्विक पहुंच के लिए बिहार के मखाना की मार्केटिंग रणनीतियों को बढ़ाना आदि विषयों पर चर्चा होगी। इसमें देश के प्रमुख निर्यातक के एमएस एक्सपोर्ट्स, डीपी ग्रूप आदि, संस्थागत क्रेता, बिग बास्केट, रिलायन्स, फ्लिपकार्ट, डाबर इंडिया, स्विग्गी आदि भाग लेंगे।

बिहार तथा अन्य राज्यों स्थित कई प्रोसेसर भाग ले रहे हैं। मखाना किसानों को कृषि ऋण की जानकारी सुचारु रूप से प्राप्त हो इसलिए राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति द्वारा भी स्टॉल लगाया गया है। खाद्य प्रसंकरण इकाईयों के लिए बिहार सरकार द्वारा दी जा रही सहायताओं की जानकारी साझा करने हेतु उद्योग विभाग, बिहार सरकार द्वारा भी स्टॉल लगाया गया है।

मखाना उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु सहायतानुदान का प्रावधान

मखाना के आर्थिक महत्व को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार के द्वारा मखाना विकास योजना का संचालन किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत मखाना के उन्नत प्रभेदों के बीज उत्पादन एवं प्रत्यक्षण तथा क्षेत्र विस्तार को बढ़ावा देने हेतु सहायतानुदान का प्रावधान किया गया है। राज्य सरकार की पहल से मखाना भण्डारण की भी सहायता वर्ष 2023-24 से मखाना उत्पादकों को दी जा रही है जिसमें भण्डारण इकाई पर 75 प्रतिशत सब्सिडी का प्रावधान है। इसी प्रकार, राज्य में बिहार कृषि निवेश प्रोत्साहन नीति अन्तर्गत चयनित 7 सेक्टर्स में मखाना को भी शामिल किया गया है, जिसके अन्तर्गत मखाना प्रोसेसिंग को बढ़ावा देने हेतु पूंजीगत अनुदान का प्रावधान है।

प्रधानमंत्री आज कृषि अर्थशास्त्रियों के 32वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का करेंगे उद्घाटन

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शनिवार को यहां कृषि अर्थशास्त्रियों के 32वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। भारत में यह सम्मेलन 65 सालों के बाद आयोजित हो रहा है। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) की ओर से जारी एक बयान में शुक्रवार को यह जानकारी दी गई। कृषि अर्थशास्त्रियों के अंतरराष्ट्रीय संगठन की ओर से आयोजित छह दिवसीय त्रैवार्षिक सम्मेलन का विषय सतत कृषि-खाद्य प्रणालियों की ओर रूपांतरण है। सम्मेलन में लगभग 75 देशों के लगभग 1,000 प्रतिनिधि भाग लेंगे।

इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का कम होना, बढ़ती उत्पादन लागत और संघर्षों जैसी वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में टिकाऊ कृषि की आवश्यकता से निपटना है। पीएमओ ने कहा कि सम्मेलन वैश्विक कृषि चुनौतियों के लिए भारत के सक्रिय दृष्टिकोण को रेखांकित करेगा और कृषि अनुसंधान और नीति में देश की प्रगति को प्रदर्शित करेगा। बयान में कहा गया, आईसीएई 2024 युवा शोधकताओं और प्रमुख पेशेवरों के लिए वैश्विक साथियों के साथ अपने काम और नेटवर्क को पेश करने के लिए एक मंच के रूप में काम करेगा। इसका उद्देश्य अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालयों के बीच साझेदारी को मजबूत करना, राष्ट्रीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर नीति निर्माण को प्रभावित करना और डिजिटल कृषि और टिकाऊ कृषि-खाद्य प्रणालियों में प्रगति सहित भारत की कृषि प्रगति को प्रदर्शित करना है।

प्रधानमंत्री से मिले नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर : पूर्व मुख्यमंत्री व नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने शुक्रवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। उन्होंने हिमाचल में बादल फटने से हुई तबाही की भी प्रधानमंत्री को जानकारी दी। प्रधानमंत्री मोदी ने इस त्रासदी से निपटने में हिमाचल प्रदेश का सहयोग करने का पूरा भरोसा दिया और कहा कि राहत और बचाव कार्य के लिए एनडीआरएफ समेत अन्य केंद्रीय बलों को लगाया गया है। उन्होंने जयराम को भरोसा दिया कि इस त्रासदी से निपटने के लिए भविष्य में जिस भी संसाधन की आवश्यकता होगी, वह भी तत्काल उपलब्ध करवाई जाएगी। जयराम ठाकुर ने बताया कि प्रधानमंत्री ने भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं और जन प्रतिनिधियों से भी राहत और बचाव कार्य में जुटकर प्रभावितों की हर संभव मदद करने का आह्वान किया।

संक्षिप्त खबरें

32 मीटर एंटी क्रीप वायर के साथ एक गिरफ्तार

फतुहा। बीते गुरुवार को फतुहा आरपीएफ द्वारा इस्लामपुर नटेसर सेक्शन में स्थित हरसिंगरा हाल्ट और कटारी स्टेशन के बीच के मध्य एंटी क्रीप वायर को काटकर चोरी किए गए एक मामले का उद्भेदन किया गया है। इसकी जानकारी देते हुए आरपीएफ इंस्पेक्टर विनोद कुमार विश्वकर्मा ने बताया कि जूनियर इंजीनियर के सूचना पर आरपीएफ पोस्ट फतुहा के स्टाफ एवं टास्क टीम द्वारा अपराधिक गतिविधियों के निगरानी के दौरान बुधवार की रात्रि को एक मोटरसाईकिल पर तीन व्यक्ति को संदिग्ध अवस्था में बैरा गांव की ओर पीछा करने पर घटना स्थल से लगभग 400 मीटर उत्तर स्थित पानी भरा पाइन से रोल किया हुआ लगभग 32 मीटर एंटी क्रीप वायर तथा लोहा काटने वाला एक हेक्सा ब्लेड बरामद किया। संदेह पुख्ता होने पर घेरकर पूछताछ करने पर पिछले महीने के 18 जुलाई की घटना को स्वीकार करते हुए कहा कि उक्त तार को काटकर चोरी करने के बाद पुलिस जांच के चलते हमलोगों ने तार को पानी में छुपा दिया था। जिसमे से 8 किलो तार बिहार शरीफ के कबाड़ी दुकान छोटू ठठेरा को बेच दिया था। बाकी बचा हुआ तार आज लेने आए थे। तीन अपराधियों में से दो अपराधी मोटरसाईकिल से भागने में सफल रहा। गिरफ्तार अपराधी नालंदा जिले के खुदागंज थानांतर्गत चीनी चौधरी का पुत्र गुड्डू चौधरी है एवं मौके से फरार दोनों अपराधी मिश्री चौधरी का पुत्र बबलू चौधरी तथा बैद्यनाथ चौधरी का पुत्र परमानंद चौधरी उर्फ खुराना है। आगे की कारवाई कर पकड़े गए तथा अभियुक्त को माननीय न्यायालय अग्रसारित किया गया।

रेलवे स्टेशन से दो पॉकेटमार गिरफ्तार

फतुहा। बीते गुरुवार की रात्रि रेलवे स्टेशन से आरपीएफ ने दो पॉकेटमारों को चोरी में इस्तेमाल होने वाले औजार के साथ गिरफ्तार किया। जानकारी अनुसार फतुहा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या तीन से दोनों को गुरुवार की देर शाम पकड़ा गया। दोनों की तलाशी लेने पर एक व्यक्ति के पास 3050 रुपए नगद और एक दाढ़ी बनाने वाला ब्लेड तथा दूसरे व्यक्ति के पास से 1900 रुपए और दो दाढ़ी बनाने वाला ब्लेड बरामद हुआ। एक पॉकेटमार पटना सिटी के चौक थानांतर्गत मुर्चा रोड का रहने वाले स्वर्गीय फौजदारी गोप का पुत्र अनिल कुमार एवं दूसरा पटना सिटी के मालसलामी थानांतर्गत राजेंद्र चौधरी का पुत्र रवि कुमार बताया जा रहा है। इसकी जानकारी फतुहा आरपीएफ इंस्पेक्टर विनोद कुमार विश्वकर्मा दी गई। दोनों पॉकेटमारों के विरुद्ध मामला दर्ज कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

अधिवक्ता के साथ मारपीट करने के मामले में अधिवक्ता संघ से तीन सदस्यीय जांच दल दानापुर व्यवहार न्यायालय पहुंचे

दानापुर। नगर के अंतर्गत अधिवक्ता के साथ मारपीट करने के मामले में बिहार अधिवक्ता संघ से तीन सदस्यीय जांच दल दानापुर व्यवहार न्यायालय पहुंचे। जांच दल ने दानापुर अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष के उपस्थित में अधिवक्ताओं के साथ पीड़ित से भी मिले व घटना के बारे में जानकारी ली। दानापुर अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष मिथिलेश कुमार यादव ने बताया कि अधिवक्ता के साथ पुलिस द्वारा की घटना को लेकर बिहार बार एसोसिएशन में लिखित शिकायत की गयी थी। जिसके आधार पर शुक्रवार को बिहार बार एसोसिएशन से जांच टीम आयी थी। जिसमें अधिवक्ता सूर्यदेव प्रसाद यादव, अधिवक्ता जय प्रकाश सिंह व ब अधिवक्ता जितेन्द्र प्रसाद सिन्हा शामिल थे। जांच दल में शामिल अधिवक्ताओं ने घटना के संबंध में जानकारी ली। पीड़ित अधिवक्ता से भी पूछताछ की। जांच कमेटी रिपोर्ट बिहार बार एसोसिएशन में देगी। जिसके बाद आगे कार्रवाई की जायेगी।

22 नमूना की जांच में डेंगू के मिले दो मरीज

पटना सिटी (प्राकि)। एनएमसीएच के माइक्रोबायोलॉजी विभाग में अस्पताल से डेंगू जांच के लिए शुक्रवार को 22 नमूना भेजा गया। इन सबों की जांच की गई। जांच के बाद दो नमूने में डेंगू का लक्षण पाया गया। माइक्रोबायोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉप्रो संजय कुमार ने बताया कि 22 नमूना की जांच में दो डेंगू संक्रमित पाया गया। इसमें गुलजारबाग का 18 वर्ष का युवक और अगमकुआं के कांटी फैक्ट्री रोड का 31 साल का युवक भी डेंगू से संक्रमित है। अधीक्षक डॉक्टर बिनोद कुमार और उपाधीक्षक डॉक्टर सरोज कुमार ने बताया कि 30 बेड डेंगू मरीजों के लिए सुरक्षित है। इसमें पांच बेड शिशु रोग विभाग में है। डेंगू मरीजों के इलाज के लिए पूरी व्यवस्था और दवा उपलब्ध है।

पंथ में किसी समिति या उच्च पद पर ज्ञानी इकबाल सिंह की नियुक्ति को लेकर विरोध

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता (आनंद केसरी)

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में अपने कार्यकाल के दौरान ज्ञानी इकबाल सिंह ने अनेक ऐसे काम किए, जो पंथक सिद्धांत के खिलाफ थे। सिख संगठन के भारी विरोध के कारण ही उन्हें जत्थेदार पद से हटा दिया गया था।

इसके बाद 6 दिसंबर, 2022 को श्री अकाल तख्त साहिब के आदेशों की अवहेलना करने पर उन्हें तनखैया घोषित कर दिया गया था। उनका विवादास्पद बयान भी सुर्खियों में रहा है। हाल ही उन्होंने श्री अकाल तख्त साहिब के समक्ष पेश होकर अपनी गलती को स्वीकार करते हुए लगाई गई धार्मिक सजा को भी उन्होंने पूरा किया है।

इस संबंध में पटना साहिब पंथ सेवक जत्था के संरक्षक चरणजीत सिंह ने श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघुवीर सिंह को पत्र भेजा है। इसमें उन्होंने कहा है कि तख्तश्री पटना साहिब के पूर्व जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंह ने 10 दिनों की कीर्तन सेवा, जपुजी साहिब का पाठ और श्री अकाल तख्त साहिब पर 500 रुपया का भोग की माफी की खबर से परेशान रहे। पटना साहिब पंथ सेवक जत्था सिख समुदाय की तरह श्री अकाल तख्त साहिब के प्रति समर्पित है और उनके फैसले को सर्वोच्च मानता है। लेकिन ज्ञानी इकबाल सिंह के द्वारा गुरु मर्यादा का अपमान, जघन्य कृत और गद्दीनशी पटना साहिब होने पर घोर अनियमितताओं ने आम सिख संगत और खासकर पटना साहिब की संगतों को झकझोर कर रख दिया है।

जत्था के सदस्यों ने 24 जुलाई को बैठक की। इसमें तख्तश्री पटना साहिब के पूर्व जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंह को लगाए गए धार्मिक सजा के मुद्दे पर चर्चा की गई। श्री अकाल तख्त साहिब के द्वारा लगाए गए धार्मिक सजा के बाद एक बार फिर उनके द्वारा अदालतों के माध्यम से या तख्त पटना साहिब में अपने आधिकारिक दृष्टिकोण के माध्यम से कुछ गैर सांप्रदायिक कार्यों की आशंका लगातार बनी हुई है। जत्थेदार के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान ज्ञानी इकबाल सिंह ने अनेक ऐसे काम किए, जो पंथक सिद्धांतों के खिलाफ थे। सिख संगत के भारी विरोध के कारण उन्हें जत्थेदार पद से हटा दिया गया था। इसके बाद 6 दिसंबर, 2022 को श्री अकाल तक साहिब के आदेशों की अवहेलना करने पर उन्हें तनखैया घोषित कर दिया गया था।

उनके विवादित बयान की सिख लव-कुश के वंशज हैं, स्थानीय और विदेशी मीडिया में व्यापक रूप से प्रचारित प्रसारित हुआ था। इससे दुनिया भर के सिखों के मन को गहरी ठेस पहुंची। इनके अलावा ज्ञानी इकबाल सिंह ने पटना साहिब में पूरी कमेटी पर झूठा केस किया था। ज्ञानी इकबाल सिंह के बेटे गुर प्रसाद सिंह शराब तस्करी के आरोप में बिहार में कानूनी कार्रवाई का सामना कर रहा है। उसने नशीली दवाओं के ओवरडोज के कारण अर्धबेहोशी की स्थिति में पटना साहिब के गलियारे में धूम्रपान करने के आरोप में वीडियो वायरल हुआ था। उन पर और अन्य भी आरोप लगते रहे हैं। हालांकि इस संबंध में ज्ञानी इकबाल सिंह ने एक वीडियो वायरल किया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि उनके बेटे को शराब और सिगरेट पीते जो वीडियो वायरल किया हुआ है,

उसमें वह अपने को निर्दोष साबित करे। जब तक वह वैसा नहीं करता है, वह उसके चल-अचल संपत्ति से वंचित रहेगा। मगर इसके बाद में भी वह (गुरु प्रसाद) शराब तस्करी के कांड में नामजद हुआ और अभी भी उस पर कानूनी प्रक्रिया चल रही है। यानी इकबाल सिंह की माफी से सिख जगत, खासकर पटना के सिख संगत के मन में यह डर पैदा हो गया है कि कहीं इकबाल सिंह दोबारा श्री पटना साहिब के जत्थेदार के पद पर काबिज ना हो जाएं। यहां के संगतों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए जत्था आप सभी सिंह साहिबानों से अपील करती है कि कम से कम ज्ञानी इकबाल सिंह को पंथ में किसी भी समिति या संगठन के द्वारा किसी भी उच्च पद पर नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए। बैठक में मनोहर सिंह बग्गा, महाराजा सिंह सोनू, दीपक लांबा, लकी बग्गा आदि शामिल थे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष से मिले आयुष विभाग के संयोजक डॉ अजय प्रकाश

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भाजपा बिहार के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष डॉ दिलीप जयसवाल से भाजपा आयुष के प्रदेश संयोजक डॉ अजय प्रकाश मिले। सरकारी आवास पर आयुष विभाग की टीम के साथ मुलाकात कर अंग वस्त्र, पुष्प गुच्छ एवं पुस्तक देकर प्रदेश अध्यक्ष बनने की शुभकामनाएं एवं बधाई दी। प्रदेश अध्यक्ष ने आगामी समय में विशेष परिचर्चा कर विकास करने की बात कही। मिलने वालों मे एक्युप्रेशर महागुरू डॉ सर्वदेव प्रसाद गुप्त, सोशल मीडिया प्रभारी विकास मौड़ीवाल, डॉ एचपी सिंह एवं डॉ अंशु तिवारी शामिल थे। भाजयुमो के मीडिया प्रभारी अश्विनी राज यादव के नेतृत्व में प्रदेश कार्यालय में बिहार भाजपा के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जयसवाल से मुलाकात कर शुभकामनाएं प्रेषित किया और सफल कार्यकाल को अग्रिम बधाइयां दीं। मौके पर युवा मोर्चा के गुंजन कुमार, मुरारी कुमार, आकाश केसरी, अल्पसंख्यक मोर्चा के फैयाज काजिमी आदि उपस्थित रहे।

ममतामयी प्रियदर्शनी को इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन का स्टेट चेयरपर्सन का प्रभार

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम । बिक्रम विधानसभा क्षेत्र की पूर्व प्रत्याशी डॉ ममतामयी प्रियदर्शिनी को इंडियन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन दिल्ली का स्टेट चेयरपर्सन मनोनीत किया गया है । डॉ प्रियदर्शिनी को चेयरपर्सन बनाए जाने पर उनके समर्थक व एसोसिएशन के पदाधिकारी काफी उत्साहित हैं । वहीं चेयरपर्सन बनाए जाने पर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरज सिंघल, दिल्ली के पूर्व चेयरपर्सन डॉ लक्ष्मीकांत पाण्डेय, वर्तमान सेक्रेटरी, वाइस चेयरपर्सन और दिल्ली के विभिन्न जिलों के कन्वेनर्स आदि समेत कई अन्य समर्थकों ने उन्हें बधाई व शुभकामनायें दी हैं । वहीं डॉ प्रियदर्शिनी ने पत्रकारों से हुई बातचीत में बताया कि यह सत्य है कि बिना किसी फल की चिंता किए, सच्ची मेहनत और लगन से किया गया कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाता । उन्होंने यह भी कहा कि मैं इंडियन इन्डस्ट्रीज एसोसिएशन की आभारी हूं जिन्होंने मेरी काबिलियत पर भरोसा करते हुए स्टेट चेयरपर्सन का कार्यभार सौंपा है । इसके लिए डॉ प्रियदर्शनी ने एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महासचिव, राष्ट्रीय सीनियर वाइस प्रेसिडेंट समेत समस्त एमएसएमई समुदाय के प्रति आभार जताया है । उन्होंने एसोसिएशन को विश्वास दिलाते हुए कहा कि आईआईए राष्ट्रीय नेतृत्व व दिल्ली के ऊजार्वान पदाधिकारियों के साथ मिलकर एसोसिएशन के सभी हितधारकों व एमएसएमई समुदाय से जुड़े सभी लोगो की 360-डिग्री विकास के लिए संपूर्ण और समर्पित प्रयास करूंगी ।

ट्रेन के बोगी से एक युवक की शव किया गया बरामद

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर रेल पुलिस ने प्लेट फार्म संख्या 2 पर खड़ी ट्रेन संख्या 03252 के कोच संख्या एस-11 व एस-12 के बीच शौचालय के पास से एक अज्ञात पुरूष का शव बरामद किया। मृतक गुलाबी रंग का चेकरदार सर्ट व उजला पैंट पहने हुए है। उम्र लगभग 40 के प्रतित होता है। रेल पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बीमारी के कारण स्वभाविक मृत्यु की बात कही जा रही है। रेल थानाध्यक्ष ने बताया कि पोस्टमार्टम के बाद मौत के कारण का पता चल पायेगा। शव के शिनाख्त के लिए रखा गया है।

पटना सिटी बार एसोसिएशन के 12 पदों के लिए नामांकन शुरू

अब तक करीब 15 प्रत्याशियों ने नामजदगी का परचा भरा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी बार एसोसिएशन के चुनाव के लिए अधिसूचना जारी होने के साथ ही नामांकन की प्रक्रिया भी शुरू हो गई है। नामांकन एक से शुरू होकर सात जुलाई तक चलेगा। चुनाव पदाधिकारी दिलीप कुमार झा बनाए गए हैं, जबकि सहायक चुनाव पदाधिकारी के रूप में राकेश प्रसाद सिन्हा, संजय कुमार मेहता और कंचन कुमार हैं। कंप्यूटर कार्य के लिए अधिवक्ता संजय कुमार सहयोग करेंगे। चुनाव पदाधिकारी ने बताया कि अध्यक्ष पद के लिए एक, उपाध्यक्ष के लिए तीन, महासचिव के एक, कोषाध्यक्ष के लिए एक, संयुक्त सचिव के लिए तीन, सहायक सचिव के लिए तीन पद के लिए चुनाव कराया जाएगा। वहीं 12 कार्यकारिणी सदस्य के लिए भी चुनाव होगा। इसमें पांच वरीय सदस्य और सात सदस्य का चुनाव मतदान के द्वारा किया जाएगा। इसके अलावा ऑडिटर के भी दो पद रखे गए हैं। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और महासचिव पद के लिए नामांकन फार्म का शुल्क एक हजार, जबकि कोषाध्यक्ष, संयुक्त सचिव और सहायक सचिव के लिए पांच सौ, कार्यकारिणी सदस्य और ऑडिटर के लिए ढाई सौ रुपया नामांकन शुल्क रखा गया है। एक और दो जुलाई को मिलाकर करीब 15 लोगों ने विभिन्न पदों के लिए नामांकन दाखिल किया है। खासकर महासचिव पद के लिए दीपक कुमार गुप्ता, अशोक कुमार और अनुज कुमार ने नामांकन पत्र दाखिल किया है। इस बार विभिन्न पदों के लिए नए चेहरे मैदान में उतरेंगे। हालांकि अब तक 30 से अधिक नामांकन फार्म की बिक्री हो चुकी है। सोमवार को अधिक नामांकन होने की संभावना जताई जा रही है। वैसे पर्चा दाखिल करने का अंतिम दिन बुधवार सात अगस्त है। चुनाव को लेकर कोर्ट परिसर में वकीलों के बीच गहमागहमी की स्थिति बनी है। साथ ही चचाओं का बाजार भी गर्म है।

भाजपा नेता अतुल कुमार ने प्रदेश अध्यक्ष का किया स्वागत

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम । भाजपा के युवा नेता सह बिक्रम विधान सभा के पूर्व प्रत्यार्थी अतुल कुमार ने शुक्रवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय मे बिहार प्रदेश के अध्यक्ष डॉ दिलीप जायसवाल का स्वागत किया` बता दें कि डॉ दिलीप जायसवाल को प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर पर भाजपा नेता अतुल बिक्रम विधान सभा के पार्टी कार्यकताओं के साथ शुक्रवार को उन्हें बधाई देने प्रदेश कार्यालय पहुंचे थे` मौके पर भाजपा नेता अतुल ने बिक्रम की जनता की ओर से उन्हें अंग वस्त्र पुष्प गुच्छ के साथ एक पेड़ देकर प्रदेश अध्यक्ष का स्वागत अभिनंद किया` वहीं पार्टी द्वारा चलाये जा रहे एक पेड़ मॉ के नाम कार्यक्रम के साथ भाजपा संगठन एवम अगामी कार्यक्रम पर चर्चा की। मुलाकात के बाद अतुल ने पत्रकारों से हुई बातचीत में कहा कि प्रदेश अध्यक्ष डॉ जायसवाल के नेतृत्व मे संगठन और मजबुत होगा ` 2025 के विधान सभा चुनाव में फिर बिहार मे एनडीए की पूर्ण बहुमत की सरकार बनेगी` मौके पर जिला उपाध्यक्ष पटना ग्रामीण रजनीश कुमार, बिहार प्रदेश भाजपा युवा मोर्चा के क्षेत्रीय प्रभारी श्रीराम शर्मा व सह संयोजक रजनीश तिवारी समेत कई अन्य लोग मौजूद थे।

बिहार राज्य में अवस्थित भारतीय खाद्य निगम के विभिन्न गोदामों से ई-नीलामी के द्वारा चावल की बिक्री

- वित्त वर्ष 2024-25 की पहली ई-नीलामी में, बिहार राज्य में एफसीआई के विभिन्न डिपो के 11 केंद्रों से बिक्री के लिये निविदाएं आमंत्रित

प्रात :किरण संवाददाता

पटना । भारतीय खाद्य निगम के द्वारा खुले बाजार विक्रय योजना (घरेलू) के माध्यम से उपलब्ध स्टॉक से निर्धारित आधार मूल्य पर चावल बेचा जा रहा है, ताकि बाजार में चावल की कमी न हो और कीमतों को नियंत्रित किया जा सके।

भारत सरकार ने चावल की बढ़ती कीमतों को कम करने के लिए भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से केंद्रीय पूल स्टॉक से ई-नीलामी के माध्यम से देश भर के खुले बाजार में चावल की निश्चित मात्रा बेचने का निर्णय लिया है। चावल खरीदार जैसे चावल उत्पादों के निमार्ता / चावल प्रोसेसर (न्यूनतम बोली मात्रा 01 मीट्रिक टन और अधिकतम बोली मात्रा 2000 मीट्रिक टन) इसमें भाग ले सकते हैं। वित्त वर्ष 2024-25 की पहली ई-नीलामी में, बिहार राज्य में स्थित एफसीआई के विभिन्न डिपो के 11 केंद्रों से 21,000 मीट्रिक टनएफ.आर. के चावल (14000 मीट्रिक टन रॉ फोटीर्फाइड चावल और 7000 मीट्रिक टन पारबोइल्ड फोटीर्फाइड चावल) की बिक्री के लिए निविदाएं आमंत्रित की गई हैं। सभी इच्छुक बोलीदाताओं से अनुरोध है किया गया है कि वे पात्रता के अनुसार इस नीलामी में भाग लें और यह सुनिश्चित करें कि नीलामी से खरीदा गया चावल सार्वजनिक उपयोग के लिए बाजार में लाया जाए। चावल का आधार मूल्य 2800 रुपये प्रति क्विंटल है और आधार मूल्य में फोर्टिफिकेशन लागत (73 रुपये प्रति क्विंटल), रेल माल भाड़ा शुल्क और सड़क परिवहन लागत जोड़ी जाएगी।

विश्व स्तनपान सप्ताह 2024: बिहार में ग्राम पंचायत नेतृत्व के माध्यम से शीघ्र एवं सम्पूर्ण स्तनपान को बढ़ावा देने की पहल

प्रात :किरण संवाददाता

पटना- विश्व स्तनपान सप्ताह को अगस्त 1990 में राष्ट्रीय सरकार, नीति निमार्ताओं एवं विभिन्न संगठनों द्वारा हस्ताक्षरित इन्नोसेंटी घोषणा का स्मरण क[illegible] जाता है ताकि स्तनपान को संरक्षित, बढ़ावा और समर्थन दिया जा सके. इस वर्ष की थीम है ह्लअंतर को बंद करना: सभी के लिए स्तनपान समर्थनह्व. विश्व स्तनपान सप्ताह का उद्देश्य लोगों को स्तनपान के महत्व के बारे में सूचित करना, स्तनपान समर्थन को एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य जिम्मेदारी के रूप में स्थापित करना, अधिक प्रभाव के लिए व्यक्तियों और संगठनों के साथ जुड़ना और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए स्तनपान के संरक्षण पर कार्रवाई को प्रेरित करना है। स्तनपान चैंपियन के रूप में पंचायत प्रतिनिधियों की भूमिका बिहार राज्य कार्यालय, सेंटर फॉर कैटेलाइजिंग चेंज के राज्य प्रमुख, प्रकाश रंजन ने बताया, हालांकि व्यक्तिगत स्तर पर समर्थन निस्संदेह महत्वपूर्ण है, स्तनपान को एक सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दा भी माना जाना चाहिए जिसके लिए सभी स्तरों पर निवेश की आवश्यकता है. सेंटर फॉर कैटेलाइजिंग चेंज के मार्गदर्शन में, मुखियाओं द्वारा1 अगस्त से 7 अगस्त, 2024 तक विश्व स्तनपान सप्ताह का अवलोकन किया जा रहा है, जिसका फोकस ह्लअंतर को बंद करना: सभी के लिए स्तनपान समर्थन थीम पर है. इस पहल का उद्देश्य सरकारों, समुदायों और व्यक्तियों को स्तनपान को बढ़ावा देने में शामिल करना है.

नवाचार: प्रकाश रंजन ने बताया कि मुखियाजनों द्वारा स्तनपान को बढ़ावा देने वाले संदेशों को प्रचारित करने के लिए रक्षाबंधन के त्योहार का उपयोग कर रहे हैं. त्योहार के दौरान, उन्होंने राखी, कंगन वितरित किए जिनमें प्रारंभिक और विशिष्ट स्तनपान के महत्व पर प्रकाश डाला जा रहा है. उन्होंने बताया कि कई पंचायत स्तरीय प्रतिनिधियों ने अपने संबंधित ग्राम पंचायतों को ह्लदूध की बोतल और फॉमूर्ला दूध मुक्तह्व घोषित किया है, इस अभियान के तहत आई. एम्. एस. एक्ट के अंतर्गत ग्राम पंचायतों ने पंजीकृत डॉक्टर के पर्चे के बिना फॉमूर्ला दूध और दूध की बोतलों की बिक्री पर रोक लगाने का काम कर रही है. इसके अलावा ग्राम पंचायत भवनों के भीतर स्तनपान के लिए विशेष कमरे का आवंटन करना सुनिश्चित किया, जिससे स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए एक गरिमापूर्ण स्थान सुनिश्चित हुआ. विशिष्ट स्तनपान के लाभों पर जोर दिया जा रहा है, बोतल से दूध पिलाने की सक्रिय रूप से हतोत्साहित करना और स्तनपान कराने वाली माताओं और उनके शिशुओं के लिए पोषणयुक्त खाद्य पदार्थों के सेवन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

एम्स पटना में "अंगदान जन जागृति अभियान" पर लोगों को किया गया जागरूक

अंग दान उन रोगियों को दूसरा जीवन देने का एक महान कार्य है जो अंग विफलता से पीड़ित है : डॉ. जीके पाल

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। एम्स पटना ने आज कार्यकारी निदेशक डॉ. जी.के. पाल. के नेतृत्व में अंगदान जन जागृति अभियान लॉन्च किया। इसे बढ़ावा देने क लिए एक रैली आयोजित की गयी जो एम्स पटना के प्रशासनिक ब्लॉक से शुरू हुई और अंग दान को बढ़ावा देने और प्रत्यारोपण आवश्यकताओं और उपलब्ध दाताओं के बीच अंतर को संबोधित करने के लिए ओपीडी ब्लॉक तक गई। डॉ. जी.के.पाल , संस्था के प्रमुख पाल ने समुदाय से अपने परिवारों और समाजों में अंग दान की अवधारणा को बढ़ावा देने का आग्रह किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अंग दान नया जीवन प्रदान कर सकता है और अंग विफलता से पीड़ित व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है। रैली में डीन (ए) डॉ. प्रेम कुमार, ट्रॉमा सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष और ईडी के ओएसडी डॉ. अनिल कुमार, नेत्र विभागाध्यक्ष डॉ. अमित राज, यूरोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. कमलेश गुंजन सहित 300 से अधिक लोगों ने भाग लिया। एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. असीम सरफराज, मिस आकांशा (कार्यकारी निदेशक के पीएस), सुरक्षा अधिकारी श्री प्रेम नाथ राय, सुरक्षा कर्मचारी, आघात और आपातकालीन विभाग के कर्मचारी, सीएचएस कर्मचारी, और संस्थान के कई अन्य कर्मचारी भी शामिल थे । प्रतिभागियों ने प्रतिभागियों ने कई प्रभावशाली नारे लगाए जैसे:- जीवन उपहार दें, अंग दान करें, एक नायक बनें, अपने अंग दान करें, और एक अंग दाता आठ जिंदगियां बचा सकता है जैसे प्रभावशाली नारे लगाए। अन्य नारों में अंगदान महादान, हमलोगो ने ठाना है अंगदान करवाना है, अंधविश्वास का त्याग करो - अंगदान का प्रयास करो,अंधविश्वास छोड़िए - अंगदान कीजिए, चिता में जाएगी तो रख हो जाएगी - कब्र में जाएगी शामिल हैं। तो मिट्टी हो जाएगी, कर दो अपना अंगदान - किसी की जिंदगी गुलजार हो जाएगी, और स्वर्ग में अगर चाहिए अस्थान - करना होगा अंगदान। इन नारों ने अभियान के विषय को रेखांकित किया और अंग दान के महत्व को प्रभावी ढंग से संप्रेषित किया।

चोरों ने दो मकान का ताला तोड़ करीब 15 लाख की संपत्ति पर किया हाथ साफ

पटना सिटी, अगमकुआं थाना क्षेत्र के दो मकान का ताला तोड़कर चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम दिया है। दोनों के यहां से चोरों ने करीब 15 लाख की संपत्ति पर हाथ साफ किया है। दरअसल अगमकुआं थाना क्षेत्र के सृष्टि विहार कॉलोनी के रहने वाले धर्मवीर कुमार के कमरे का ताला तोड़कर चोरों ने अलमीरा और बक्सा का भी ताला तोड़ डाला। उन दोनों में रखे सोने व चांदी के जेवरात गायब कर दिया। पीड़ित ने पुलिस को बताया है कि चोरों ने सोने का मंगलसूत्र, कानबाली, पायल और 90 हजार रुपया नगद समेत अन्य सामान की चोरी कर लिया है। इन सबों की कीमत लगभग चार लाख रुपया बताया गया है। इसी थाना क्षेत्र के सेवा नगर रोड नंबर-5 में रह रहे सुधीर कुमार के घर का भी ताला चोरों ने तोड़ डाला। यहां से करीब 10 लाख से अधिक की संपत्ति चोरी कर ली गई। पीड़ित के अनुसार चोरी गए सामान में छह लाख रुपया नगद, सोने का चेन, कानबाली, झुमका, अंगूठी, हार, पायल आदि कीमती सामान शामिल है।

कुसुम राज मनीअम पब्लिक स्कूल में मना ग्रीन डे, पौधारोपण सहित कई प्रतियोगिताएं आयोजित

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम। प्रखंड क्षेत्र के मोरीयावां स्थित कुसुम राज मनीअम पब्लिक स्कूल में शुक्रवार को ग्रीन डे मनाया गया । मौके पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए बच्चे हरे रंग के परिधान डालकर व अलग अलग फलों के वेशभूषा में स्कूल पहुंचे। पर्यावरण को बचाने व हरियाली लाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से स्कूली बच्चों ने भाषण, गीत, कविता एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। हरियाली से जुड़ा हुआ पेंटिंग व प्रोजेक्ट आदि सहित कई मनोरंजक कार्यक्रम भी कराए गए जिसमें छात्रों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। रैंप वॉक, डांस, गीत संगीत, भाषण, पेंटिंग व प्रोजेक्ट आदि में बच्चों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के दौरान प्राचार्या शिल्पी प्रसाद ने भी सभी बच्चों को हरियाली व पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व और होने वाले लाभ को बताया। वहीं निदेशक डॉ अमरेश ने स्कूली बच्चों की हौसला अफजाई की व कार्यक्रम का सफल आयोजन के लिए शिक्षकों की सराहना की` निदेशक डॉ अमरेश ने सबों से पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने आसपास अधिक से अधिक पेड़ लगाने की अपील की` डांस शिक्षिका व एक्टिविटी इंचार्ज शादया, प्रिया व अंजली ने कार्यक्रम व गतिविधियों का संचालन किया` मौके पर स्कूली बच्चे, सभी शिक्षक व कर्मी मौजूद थे।

आरक्षण के नाम पर जातियों को बांटने का काम करता रहा है राजद : जायसवाल

बोले- लालू परिवार जब तक सत्ता में रही इन्हें आरक्षण की याद नहीं आई

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने शुक्रवार को आरक्षण को लेकर राजद के नेता तेजस्वी यादव और पूरे लालू प्रसाद को घेरते हुए कहा कि लालू परिवार जब तक सत्ता में रही इन्हें आरक्षण की याद नहीं आयी। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि क्या कभी एक भी आरक्षण यह परिवार सत्ता में रहते दिलवाया है। यह सिर्फ दूसरे के बांसुरी पर ताल दे रहे हैं। राजद आरक्षण के नाम पर जातियों को बांटने का काम करता रहा है । प्रदेश कार्यालय में पत्रकारों से चर्चा करते हुए मंत्री श्री जायसवाल ने कहा कि जिन चार विधानसभा क्षेत्रों में उप चुनाव होना है, उसे लेकर भाजपा कार्यकताओं के साथ बैठक की गई। उन्होंने कहा कि किस पार्टी को कहां से लड़ना है यह करीब तय है। उन्होंने कहा कि लालू प्रसाद यादव के परिवार को आरक्षण के मुद्दे पर बोलने का हक नहीं है। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार के नेतृत्व में आरक्षण का मुद्दा बिहार में आया है और उसे अमलीजामा पहनाने की चिंता भी नीतीश कुमार का नेतृत्व कर रहा है। उन्होंने कहा कि बिहार आरक्षण के मामले पर सर्वोच्च न्यायालय सितंबर में सुनवाई करेगा, लेकिन इस पर भी अफवाह उड़ा दिया गया कि कोर्ट रिजेक्ट कर दिया। राजद नेता तेजस्वी यादव की बिहार यात्रा को लेकर पूछे गए एक सवाल पर उन्होंने कहा कि उन्हें कोई काम नहीं है कुछ तो करेंगे। राहुल गांधी के ईडी के डर से संबंधित एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि देश में जो भी गलत करेगा यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रतिबद्धता है कि उसे जेल जाना होगा। कोई भ्रष्टाचारी नहीं बचेगा। राहुल गांधी को खुद मूल्यांकन करना चाहिए।

हर घर तिरंगा को लेकर प्रदेश अध्यक्ष ने की बैठक

बोले- कार्यक्रम, एक यूनिक फेस्टिवल बन चुका है

पटना। बिहार भाजपा ने स्वतंत्रता दिवस को लेकर हर घर तिरंगा अभियान को लेकर अपनी तैयारी शुरू कर दी है। इस कार्यक्रम के समन्वय की दृष्टि से प्रदेश भाजपा की एक टीम बनाई गई है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के मंत्री दिलीप जायसवाल ने इस टीम के साथ बैठक की और इस कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर चर्चा की। बैठक में श्री जायसवाल ने कहा कि 15 अगस्त को प्रत्येक बूथ पर बूथ अध्यक्ष के नेतृत्व में झंडोत्तोलन किया जाए यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए 11 से 13 अगस्त के बीच भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी तथा 12 अगस्त को महापुरुषों की प्रतिमा और स्मारक पर स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा। इसके अतिरिक्त 13 अगस्त को भारत माता एवं महापुरुषों की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि की जाएगी। 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका को याद करते हुए स्मृति दिवस मनाया जाएगा। इसके तहत जिला स्तरीय संगोष्ठी और सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। हर घर तिरंगा के लिए बनाई गई टीम में प्रदेश महामंत्री शिवेश राम के साथ राधामोहन शर्मा, पिंकी कुशवाहा, ओम प्रकाश भुवन और सत्यपाल नरोत्तम को रखा गया है।

भवन निर्माण विभाग
विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, पटना

अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं0–09 वर्ष 2024–25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत कार्य प्रमंडल संख्या–2 भवन निर्माण विभाग, पटना।
2. परिमाण विपत्र की बिक्री की अंतिम तिथि : 16.08.2024 2:00 बजे अप0 तक।
3. निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय : 17.08.2024 3:00 बजे अप0 तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : 17.08.2024 (4:00 बजे अप0)
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, विद्युत कार्य प्रमंडल संख्या–2, पटना। विद्युत कार्य अवर प्रमंडल, दानापुर एवं विद्युत अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, विद्युत कार्य अंचल, दक्षिण बिहार, पटना
6. निविदा प्राप्ति का स्थान : क्रमांक 5 के अनुरूप।

क्रम सं0	कार्य का नाम	परिमाण विपत्र की राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य समाप्ति की अवधि
1	S/R with addition & alteration in Main building (Gr +1st + 2nd Floor) of Muk Badhir School at Gaighat, Patna.	4,86,612.00	9,800.00	750.00	30 Days

विस्तृत जानकारी state.bihar.gov.in/prdbihar से प्राप्त की जा सकती है।

PR- 005177 (BCD) 2024-25

विद्युत कार्यपालक अभियंता
विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, पटना

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार

पथों का ससमय गुणवत्तापूर्ण निर्माण हमारी प्राथमिकता है : विजय

पथ निर्माण मंत्री ने प्रगतिशील परियोजनाओं एवं आगामी कार्य योजना की समीक्षा की

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उप मुख्यमंत्री सह पथ निर्माण विजय कुमार सिन्हा ने बिहार राज्य पथ विकास निगम लि, पथ निर्माण विभाग के सभागार में राज्य में प्रगतिशील परियोजनाओं एवं आगामी कार्य योजना की समीक्षा की। बैठक में बिहार राज्य पथ विकास निगम के सभी पदाधिकारी एवं संबंधित संवेदकों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक को संबोधित करते हुए मंत्री ने कहा कि राज्य में ससमय गुणवत्तापूर्ण निर्माण हमारी प्राथमिकता है। बैठक में संवेदकों को आमंत्रित करने का मूल उद्देश्य उन्हें सरकार की प्राथमिकता से अवगत कराना है। साथ ही उनकी समस्याओं को जानकर उसका निराकरण करना भी है। बिहार राज्य पथ विकास निगम द्वारा क्रियान्वित महत्वपूर्ण योजनाओं के संबंध में प्रबंध निदेशक शीर्षत कपिल अशोक द्वारा विस्तृत प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया गया। संवेदकों द्वारा कुछ समस्याएं उप मुख्यमंत्री सह पथ निर्माण मंत्री के समक्ष रखी गई, जिसे यथाशीघ्र निस्तारित करने का निदेश संबंधित पदाधिकारियों को दिया गया। बैठक में उपस्थित मेगा परियोजना से संबंधित संवेदकों द्वारा इसे बहुत अच्छी शुरूआत बताया गया, और यह उम्मीद भी जतायी गई कि भविष्य में भी शीर्ष नेतृत्व द्वारा हमारी समस्याओं को सुनकर निराकरण किया जायेगा। उप मुख्यमंत्री सह पथ निर्माण मंत्री द्वारा निदेशित किया गया कि गंगा नदी पर 6-लेन पुल एवं जेपी गंगा पथ परियोजना ससमय पूर्ण किया जाय। बिहार राज्य पथ विकास निगम द्वारा निर्मित मोहम्मदपुर - करणकुदरिया, सिवान - सिसवन, बीरपुर - उदाकिशुनगंज, सकड्डी - सहार, हाजीपुर - अरेराज आदि सड़कों के रख-रखाव के संबंध में भी उप मुख्यमंत्री द्वारा आवश्यक निदेश दिये गये। जेपी गंगा पथ के अन्तर्गत दीघा से दीदारगंज की सम्पर्कता जनवरी 2025 तक पूर्ण कर लिये जाने का लक्ष्य है। भूपतिपुर (एनएच-30) से एलिवेटेड पथ महुली तक की सम्पर्कता दिसम्बर 2024 तक पूर्ण कर लिये जाने का लक्ष्य है। सिपारा आरओबी का काम जून 2025 तक पूर्ण किये जाने का लक्ष्य है। महुली से पुनपुन तक 4-लेन सड़क निर्माण कार्य मार्च 2025 तक पूर्ण कर लिये जाने का लक्ष्य है। उप मुख्यमंत्री सह पथ निर्माण मंत्री ने संबंधित पदाधिकारियों को निदेशित किया कि प्रगतिशील परियोजनाओं को निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप पूर्ण किया जाना सुनिश्चित किया जाय।

नेता प्रतिपक्ष के तौर पर अपने दायित्वों के प्रति गंभीर नहीं हैं तेजस्वी : अशोक

- तेजस्वी यादव की प्रदेशव्यापी यात्रा से राजद को कोई फायदा नहीं होगा : सहनी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

ग्रामीण कार्य मंत्री अशोक चौधरी ने कहा कि झारखंड विधानसभा का चुनाव जदयू पूरी मजबूती से लड़ेगा। इस दिशा में हमारे गठबंधन के सहयोगी दलों से बातचीत भी जारी है। मंत्री उक्त बातें शुक्रवार को जदयू प्रदेश कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम के बाद मीडिया से बातचीत के दौरान कही। साथ ही उन्होंने कहा कि नेता प्रतिपक्ष के रूप में तेजस्वी यादव की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगता है कि वे अकारण पूरे मानसून सत्र से गायब रहे, उन्हें आम जनता की समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है। श्री अशोक चैधरी ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष श्री तेजस्वी यादव प्रदेशव्यापी यात्रा पर निकलेंगे तो उन्हें हर गांवों एवं टोलों में बदले हुए बिहार का तस्वीर दिखेगा। उनके माता-पिता के शासनकाल में प्रदेश की स्थिति किसी से छिपी हुई नहीं है। इस मौके पर समाज कल्याण मंत्री मदन सहनी ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने वर्ष 2005 के बाद अपराध पर अंकुश लगाने का काम किया है और आज बिहार की विधि-व्यवस्था भी पूरी तरह से दुरुस्त है। साथ ही उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव आभार यात्रा पर जाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं लेकिन आने वाले दिनों में राजद को इससे कोई राजनीतिक फायदा नहीं होगा। 5 दिनों तक बिहार विधानसभा का मानसून सत्र चला लेकिन वे एक दिन भी सदन में नजर नहीं आये। तेजस्वी यादव से बिहार की जनता को कोई उम्मीद नहीं है, उन्हें सिर्फ वोट के समय जनता की याद आती है। इससे पहले मंत्रीगण ने प्रदेश के विभिन्न जिलों से पहुचें आमजनों की समस्याओं को सुनकर उनके त्वरित समाधान हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर विधानपार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी जी एवं पार्टी के प्रदेश महासचिव लोकप्रकाश सिंह मौजूद रहे।

भाजपा कल भी आरक्षण के समर्थन में थी और आज भी है : सम्राट

- कांग्रेस , राजद को आरक्षण पर बोलने का कोई नैतिक अधिकार नहीं

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने राजद नेताओं द्वारा आरक्षण को लेकर दिए जा रहे बयान को लेकर पलटवार करते हुए कहा कि उन्हें आरक्षण पर बोलने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। पटना में पत्रकारों से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा कल भी आरक्षण के समर्थन में थी और आज भी आरक्षण के समर्थन में खड़ी है। उन्होंने कहा कि राजद के लालू यादव और कांग्रेस यह बताए कि आज तक ये दोनों पार्टियां सत्ता में रहते किसे आरक्षण दी है। लालू यादव और उनका परिवार बिहार में 15 सालों तक सत्ता में रहा लेकिन एक व्यक्ति को भी आरक्षण का लाभ नहीं दिया और आज आरक्षण को लेकर उनके परिवार और उनकी पार्टी के सदस्य गाल बजा रहे हैं। उन्होंने कहा कि बिहार की जनता को सब पता है। लोकसभा चुनाव का परिणाम इसका प्रमाण है। उन्होंने कहा काठ का बर्तन एक ही बार चूल्हे पर चढ़ता है। अब कांग्रेस और राजद आरक्षण को लेकर समाज को बांटने की कितनी भी कोशिश कर ले लेकिन अब वह पुराना दौर नहीं आने वाला है।

आरक्षण के नाम पर घड़ियाली आंसू बहा रहें नेता प्रतिपक्ष : उमेश

- परिवार फर्स्ट की नीति अपनाने वाले आरक्षण के हितैषी नहीं हो सकते

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने शुक्रवार को बयान जारी कर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पर पलटवार किया। उन्होंने कहा कि अपनी पार्टी में परिवार फर्स्ट की नीति अपनाने वाले कभी आरक्षण के हितैषी नहीं हो सकते हैं। राजद में लाभ वाले सभी पदों पर केवल लालू परिवार के सदस्यों कब्जा है। सामाजिक न्याय के आड़ में राजद ने अब तक परिवारवाद को बढ़ावा दिया और आज आरक्षण के नाम पर घड़ियाली आँसू बहाकर तेजस्वी यादव राजनीतिक पाखंड कर रहे हैं। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि आरक्षण पर नैतिकता का उपदेश देने से पहले तेजस्वी यादव अपनी पार्टी में दलित, पिछड़ा और अतिपिछड़ा वर्ग की यथोचित भागीदारी सुनिश्चित करें। श्री कुशवाहा ने कहा कि 15 वर्षों तक बिहार में राजद की सरकार थी लेकिन अतिपिछड़ा वर्ग के प्रति लालू परिवार की घृणित मानसिकता के कारण पंचायती राज एवं नगर निकायों में अतिपिछड़ा आरक्षण की मांग को लगातार अनसुना किया गया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2005 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के हाथों में बिहार का बागडोर मिला तो उन्होंने सबसे पहले अतिपिछड़ा समाज के लिए पंचायती राज एवं नगर निकायों में आरक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित की। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि तेजस्वी यादव बताएं कि आखिर किन कारणों से वर्ष 1990 से 2005 तक उनके माता-पिता ने अतिपिछड़ा आरक्षण में अड़ंगा लगाने का काम किया था। साथ ही श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने पूछा कि वर्ष 1990 से 2005 तक तेजस्वी यादव के माता-पिता को बिहार में जातीय गणना कराने और आरक्षण का दायरा बढ़ाने से किसने रोका था? वर्ष 2004 से 2014 तक केंद्र की यूपीए सरकार में राजद प्रमुख साझेदार थी लेकिन तब भी जातीय जनगणना को लेकर कोई ठोस पहल नहीं की गई। बिहार की जनता ने जब राजद को 15 वर्षों तक शासन करने का मौका दिया तो उन्होंने कभी दलित, पिछड़ा और अतिपिछड़ा समाज के हितों की चिंता नहीं की और आज वही लोग आरक्षण पर हायतौबा मचा रहे हैं।

आरक्षण व्यवस्था को बनाए रखने के लिए न्यायालय जायेगा राजद : तेजस्वी यादव

केन्द्र व राज्य सरकार की टाल-मटोल की नीति के खिलाफ होगा आन्दोलन

- केंद्र सरकार विसंगतियों को दूर करने के लिए अध्यादेश लाये

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने केन्द्र व राज्य की एनडीए सरकार पर जमकर हमला बोला है। शुक्रवार को अपने आवास पर आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान बिहार को विशेष राज्य का दर्जा व बढ़ाये गये आरक्षण मामले को लेकर केन्द्र और राज्य सरकार को कटघरे में खड़ा किया है। तेजस्वी ने कहा है कि बिहार को विशेष राज्य के दर्जा की मांग हो या बिहार में बढ़ाये गये आरक्षण का मामला हो केन्द्र और बिहार की सरकार इस पर राजनीति कर रही है। जनता को ढगने की कोशिश की जा रही है। राजद एनडीए के मंसूबे को पूरा नहीं होने देगा। नेता प्रतिपक्ष ने आगे कहा कि आरजेडी आरक्षण व्यवस्था को 65 प्रतिशत बनाए रखने के मामले पर सर्वोच्च न्यायालय में अपना पक्ष रखेगी और इस मामले पर अगले सोमवार को सर्वोच्च न्यायालय भी जाएगी। साथ ही केन्द्र सरकार और राज्य सरकार की टाल-मटोल की नीति के खिलाफ राजद सदन से लेकर सड़क तक आन्दोलन भी करेगी। उन्होंने कहा कि जनता दल यू के नेता इस मामले पर अपनी स्थिति स्पष्ट करें, क्योंकि वह केन्द्र में निर्णायक भूमिका में है। तेजस्वी ने आगे कहा कि भारत सरकार ने बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने से इंकार कर दिया है और दूसरी ओर आरक्षण व्यवस्था को नौवीं अनुसूची में डाले जाने की बात पर टाल-मटोल की नीति अपनाकर इसे राज्य सरकार का मामला बताकर पिछड़ो, अतिपिछड़ों, दलितों और आदिवासियों के हक और अधिकार से खिलवाड़ करना चाहती है जबकि सभी को पता है कि यह मामला केन्द्र सरकार के अधीन आता है। एनडीए सरकार आरक्षण व्यवस्था को नौवीं अनुसूची में डालना नहीं चाहती है क्योंकि डबल इंजन सरकार पिछड़ा, अतिपिछड़ा, दलित और आदिवासियों को अधिकार और हक नहीं देना चाहती है। मुख्यमंत्री और उनके सारे मंत्री इस मामले पर चुप हैं। वह लोग भी चुप हैं जब महागठबंधन सरकार के द्वारा आरक्षण व्यवस्था 65 प्रतिशत की गई थी तो जनता दल यू के नेता उस समय मेरे साथ प्रेसवार्ता में शामिल थे और इस मामले पर उनकी चुप्पी आखिर क्यों है, वह बताएं। मुख्यमंत्री बतायें कि जातीय जनगणना पूरे देश में वो कराये जाने के पक्ष में है कि नहीं स्थिति को स्पष्ट करें। 17 महीनों में महागठबंधन सरकार में रहकर हमलोगों ने नौकरी, नियोजित कर्मियों को सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने से लेकर जनहित के सारे काम किये लेकिन महागठबंधन सरकार के अलग हो जाने के बाद सारे कामों पर ताला क्यों लग गए हैं, आखिर इसकी क्या वजह है?

राजद अनुसूचित जाति जनजाति के वर्गीकरण के पक्ष में कभी नहीं रहा : अनुसूचित जाति जनजाति के मामले पर सुप्रीम कोर्ट के द्वारा दिये गये फैसले पर तेजस्वी ने कहा कि अनुसूचित जाति जनजाति के वर्गीकरण के पक्ष में राजद कभी नहीं रहा है। बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेदकर ने भारत के संविधान में आरक्षण की व्यवस्था में सामाजिक भेदभाव, छुआछूत और विषमता को पाटने के लिए ही आरक्षण की व्यवस्था की थी। अगर केन्द्र सरकार आर्थिक तौर पर अनुसूचित जाति जनजाति को न्याय देना चाहती है तो उनके लिए नौकरी की व्यवस्था क्यों नहीं करती? आगे कहा कि आज भी दलितों के साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है यह सबको पता है। संवाददाता सम्मेलन में प्रदेश अध्यक्ष जगदानन्द सिंह, राष्ट्रीय प्रधान महासचिव अब्दुलबारी सिद्दिकी, राष्ट्रीय महासचिव श्री श्याम रजक, पूर्व मंत्री आलोक कुमार मेहता, विधान पार्षद डॉ उर्मिला ठाकुर, प्रदेश मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद एवं अरूण कुमार यादव भी उपस्थित थे।

जदयू श्रम एवं तकनीकी प्रकोष्ठ का पौधारोपण कार्यक्रम

- प्रकोष्ठ के नेताओं ने 100 से अधिक पेड़ लगाएं

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पर्यावरण के सरंक्षण हेतु जदयू श्रम एवं तकीनीक प्रकोष्ठ बिहार के द्वारा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष ई रामचरित्र प्रसाद के नेतृत्व में शुक्रवार को को एलसीटी घाट, गंगा पथ के किनारे वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इसमें नीम, पीपल, जामुन, अर्जुन के एक सौ वृक्ष लगाया गया। इस कार्यक्रम में प्रकोष्ठ के प्रदेष अध्यक्ष के अलावा ई अशोक कुमार, ई नागमणि कुशवाहा, ई आनन्द कुमार, चांदनी कुशवाहा, राधा पटेल, ई हरिओम कुषवाहा, अशोक पटेल जयश्री सिन्हा, आशा देवी, ई सुनील सिन्हा, ई अबु तहा कमर, ई शषिभूषण सहित सैकड़ों पदाधिकारियों एवं कार्यकत्ताओं ने भाग लेकर पौधारोपण कार्यक्रम को सफल बनाया। इस अवसर पर जदयू श्रम एवं तकनीकी प्रकोष्ठ के प्रदेष अध्यक्ष ई रामचरित्र प्रसाद ने कहा कि धरती को हरा-भरा रखने एंव जीवन रक्षा के लिए अधिक से अधिक पेड-पौधे लगाना चाहिए। उन्होंने जदयू श्रम एवं तकनीकी प्रकोष्ठ बिहार के सभी पदाधिकारी से जिला, प्रखंड एवं पंचायत स्तर पर वृक्ष लगाने की अपील की।

बैंक खाताधारकों का न्युनतम बैलेंस के नाम पर कटौती पैसा वापस करे केन्द्र : भाकपा

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने कहा कि भाजपा सरकार में आम गरीब जनता के पास पैसा न होने के जुर्म में उनपर जुमार्ना लगाकर पैसे वसूलना पूरी तरह लूट है और संवेदनहीनता का चरम पराकाष्ठा है। पांच साल में सरकारी बैंकों ने न्यूनतम बैलेंस न रखने के लिए आम लोगों से 8,500 करोड़ रुपये की वसूली की जबकि इसी सरकार ने पूंजीपतियों का 16 लाख करोड़ रुपये का कर्ज माफ कर दिया है। सरकार न्यूनतम बैलेंस के नाम पर गरीबों के बैंक खाते से काटे गए रुपए वापस करे। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि बैंक में न्यूनतम बैलेंस न रख पाने की समस्या उन तबकों की है, जिनके पास पैसे नहीं हैं, कमाई सीमित है और जैसे-तैसे करके परिवार चलाते हैं। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने इंदिरा गांधी की सरकार पर दबाब बनाकर बैंकों का राष्ट्रीयकरण करवाया था ताकि गरीबों को मदद हो, न कि उनसे वसूली की जाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने पुंजीपति मित्र को 16 लाख करोड़ रुपये का कर्ज माफ कर दिया है जबकि गरीब और मध्यवर्ग के लोगो का खाली जेब भी काट लेने पर आमादा है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी केंद्र सरकार की इस कार्रवाई की तीखे शब्दों में निंदा करती है और सभी बैंक खाताधारकों का न्यूनतम बैलेंस के नाम पर कटौती की गयी रुपए वापस करने की मांग करती है।

राजद नेता मो खालिद के निधन पर पार्टी नेताओं ने जताया शोक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय जनता दल के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के पूर्व उपाध्यक्ष मो खालिद के इंतकाल पर राष्ट्रीय जनता दल के नेताओं ने गहरे रंजो- गम का इजहार किया है। कहा कि अल्लाह मरहुम को जन्नतुल फिरदौस में आला मुकाम आता करें, अमीन सुम्मा आमीन ! इनके इंतकाल पर राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद, पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी, नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव, सांसद डॉ मीसा भारती, पूर्व मंत्री तेज प्रताप यादव, प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह,राष्ट्रीय प्रधान महासचिव अब्दुल बारी सिद्दीकी, राष्ट्रीय महासचिव श्याम रजक, भोला यादव, राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता प्रो मनोज कुमार झा, राज्यसभा सांसद संजय यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ तनवीर हसन, प्रदेश प्रधान महासचिव रणविजय साहू, प्रदेश के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, राजद अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ अनवर आलम सहित अन्य नेताओं ने इनके इंतकाल पर गहरे रंजो-गम का इजहार करते हुए कहा कि इनके इंतकाल से सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में अपूरणीय क्षति हुई है ,और जो इनके नहीं रहने से खालीपन आया है, उसकी भरपाई मुमकिन नहीं है। इनके इंतकाल से राजद परिवार काफी गमजदा है। इनके परिवार को अल्लाह सब्र जमील अता करे। मालूम हो कि हृदय गति रुक जाने से पटना के बिग हॉस्पिटल में इन्होंने आखिरी सांस ली ।

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–2, पटना
प्रथम तल ब्लॉक बी, जल संसाधन भवन, अनिसाबाद, पटना–800002
Mob. No. –9835080710, Email- damgatediv.two@gmail.com

अल्पकालीन निलामी सूचना सं0– 01/2024–25

पत्रांक :– 162

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि बाँध एवं गेट रूपाकंण अंचल, पटना के **पत्रांक 253 दिनांक 27.07.2024** एवं बिहार वित्त नियमावली के नियम 143(1)(ख) के आलोक में बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–2, पटना के कार्यालय (ग्रुप सं0–01, परिशिष्ट–1 के अनुसार) में वर्षो से अनुपयोगी एवं टूटे–फूटे यंत्र –संयंत्रों एवं उपस्करों का सार्वजनिक निलामी किया जाना है।

इन सामग्रियों का मूल्यांकन प्रतिवेदन के आधार पर सामूहिक निलामी ''जैसे है उसी स्वरुप में'' के आधार पर दिनांक 13.08.2024 को 2.00 बजे अपराहन् में बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–2, पटना के कार्यालय में की जाएगी, जिसकी विवरणी निम्न है:–

क0सं0	अनुपयोगी यंत्रो /संयंत्रों/उपस्करो का नाम एवं सख्या	ग्रुप सं0	निलामी की न्यूनतम बोली (रुपये में)	सुरक्षित जमा/अग्रधन की राशि (रुपये में)	निलामी की तिथि
1	2	3	4	5	6
01	प्रमंडलीय सूचनापट्ट एवं परिशिष्ट 1 में संलग्न सूची के अनुसार	ग्रुप सं0–01 (परिशिष्ट 1)	260.00	130.00	13.08.2024

निलामी की शर्तेः–

1. इच्छुक फर्म/आवेदक दिनांक 08.08.2024 से दिनांक 12.08.2024 तक कार्यालय अवधि में (रविवार एवं अन्य छुट्टियों को छोड़कर) सूचना पट्ट पर प्रदर्शित अनुपयोगी यंत्रो/संयंत्रों/उपस्करो की सूची देख सकते हैं।
2. निलामी में भाग लेने वाले व्यक्ति को कॉलम संख्या 05 में अंकित सुरक्षित जमा राशि/अग्रधन/प्रतिभूति की राशि दिनांक 12.08.2024 के अपराह्न 3.00 बजे तक कार्यपालक अभियंता, बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–2, पटना के कार्यालय में आवेदन पत्र के साथ जमा करना होगा। अग्रधन की राशि डिमाण्ड ड्राफ्ट के माध्यम से **Executive Engineer, Dam and Gate Design Division-2 Patna, Payable at Patna** के नाम से भुगतेय हो जमा करने के पश्चात् ही निलामी में भाग लेने की अनुमति दी जाएगी। निर्धारित तिथि के बाद किसी भी स्थिति में आवेदन एवं सुरक्षित जमा राशि/अग्रधन/प्रतिभूति स्वीकार नहीं किया जायेगा।

विस्तृत जानकारी **www.state.bihar.gov.in/prdbihar** से प्राप्त की जा सकती है।

PR. No. 005211 (WRD) 2024-25

कार्यपालक अभियंता
बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–2, पटना

नशे की मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–3, पटना
प्रथम तल ब्लॉक बी, जल संसाधन भवन, अनिसाबाद, पटना–800002
Mob. No. –9334173050, Email-dngdiv3@gmail.com

अल्पकालीन निलामी सूचना सं0– 01/2024–25

पत्रांक :– 133

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि बाँध एवं गेट रूपाकंण अंचल, पटना के **पत्रांक 253 दिनांक 27.07.2024** एवं बिहार वित्त नियमावली के नियम 143(1)(ख) के आलोक में बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–3, पटना के कार्यालय (ग्रुप सं0–01, परिशिष्ट–1 के अनुसार) एवं बाँध एवं गेट रूपाकंण अंचल, पटना के कार्यालय (ग्रुप सं0–02, परिशिष्ट–2 के अनुसार) में वर्षो से अनुपयोगी एवं टूटे–फूटे यंत्र –संयंत्रों एवं उपस्करों का सार्वजनिक निलामी किया जाना है।

इन सामग्रियों का मूल्यांकन प्रतिवेदन के आधार पर सामूहिक निलामी ''जैसे है उसी स्वरुप में'' के आधार पर दिनांक 13.08.2024 को 2.00 बजे अपराहन् में बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–3, पटना के कार्यालय में की जाएगी, जिसकी विवरणी निम्न है:–

क0सं0	अनुपयोगी यंत्रो /संयंत्रों/उपस्करो का नाम एवं सख्या	ग्रुप सं0	निलामी की न्यूनतम बोली (रुपये में)	सुरक्षित जमा/अग्रधन की राशि (रुपये में)	निलामी की तिथि
1	2	3	4	5	6
01	प्रमंडलीय सूचनापट्ट एवं परिशिष्ट 1एवं 2 में संलग्न सूची के अनुसार	ग्रुप सं0–01 (परिशिष्ट 1)	930.00	250.00	
		ग्रुप सं0–02 (परिशिष्ट 2)	545.00	250.00	13.08.2024

निलामी की शर्तेः–

1. इच्छुक फर्म/आवेदक दिनांक 08.08.2024 से दिनांक 12.08.2024 तक कार्यालय अवधि में (रविवार एवं अन्य छुट्टियों को छोड़कर) सूचना पट्ट पर प्रदर्शित अनुपयोगी यंत्रो/संयंत्रों/उपस्करो की सूची देख सकते हैं।
2. निलामी में भाग लेने वाले व्यक्ति को कॉलम संख्या 05 में अंकित सुरक्षित जमा राशि/अग्रधन/प्रतिभूति की राशि दिनांक 12.08.2024 के अपराह्न 3.00 बजे तक कार्यपालक अभियंता, बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–3, पटना के कार्यालय में आवेदन पत्र के साथ जमा करना होगा। अग्रधन की राशि प्रत्येक ग्रुप के लिए अलग–अलग डिमाण्ड ड्राफ्ट के माध्यम से **Executive Engineer, Dam and Gate Design Division-3 Patna, Payable at Patna** के नाम से भुगतेय हो जमा करने के पश्चात् ही निलामी में भाग लेने की अनुमति दी जाएगी। निर्धारित तिथि के बाद किसी भी स्थिति में आवेदन एवं सुरक्षित जमा राशि/अग्रधन/प्रतिभूति स्वीकार नहीं किया जायेगा।

विस्तृत जानकारी **www.state.bihar.gov.in/prdbihar** से प्राप्त की जा सकती है।

PR. No. 005212 (WRD) 2024-25

कार्यपालक अभियंता
बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–3, पटना

नशे की मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–4, पटना
प्रथम तल ब्लॉक बी, जल संसाधन भवन, अनिसाबाद, पटना–800002
Mob. No. –9304019190, Email- damandgate4@gmail.com

पत्रांक :– 122

अल्पकालीन निलामी सूचना सं0– 01/2024–25

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि बाँध एवं गेट रूपाकंण अंचल, पटना के **पत्रांक 253 दिनांक 27.07.2024** एवं बिहार वित्त नियमावली के नियम 143(1)(ख) के आलोक में बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–4, पटना के कार्यालय (ग्रुप सं0–01, परिशिष्ट–1 के अनुसार) में वर्षो से अनुपयोगी एवं टूटे–फूटे यंत्र –संयंत्रों एवं उपस्करों का सार्वजनिक निलामी किया जाना है।

इन सामग्रियों का मूल्यांकन प्रतिवेदन के आधार पर सामूहिक निलामी ''जैसे है उसी स्वरुप में'' के आधार पर दिनांक 13.08.2024 को 2.00 बजे अपराहन् में बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–4, पटना के कार्यालय में की जाएगी, जिसकी विवरणी निम्न है:–

क0 सं0	अनुपयोगी यंत्रो /संयंत्रों/उपस्करो का नाम एवं सख्या	ग्रुप सं0	निलामी की न्यूनतम बोली (रुपये में)	सुरक्षित जमा/अग्रधन की राशि (रुपये में)	निलामी की तिथि
1	2	3	4	5	6
01	प्रमंडलीय सूचनापट्ट एवं परिशिष्ट 1 में संलग्न सूची के अनुसार	ग्रुप सं0–01 (परिशिष्ट 1)	2180.00	500.00	13.08.2024

निलामी की शर्ते :–

1. इच्छुक फर्म/आवेदक दिनांक 08.08.2024 से दिनांक 12.08.2024 तक कार्यालय अवधि में (रविवार एवं अन्य छुट्टियों को छोड़कर) सूचना पट्ट पर प्रदर्शित अनुपयोगी यंत्रो/संयंत्रों/उपस्करो की सूची देख सकते हैं।
2. निलामी में भाग लेने वाले व्यक्ति को कॉलम संख्या 05 में अंकित सुरक्षित जमा राशि/अग्रधन/प्रतिभूति की राशि दिनांक 12.08.2024 के अपराह्न 3.00 बजे तक कार्यपालक अभियंता, बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–4, पटना के कार्यालय में आवेदन पत्र के साथ जमा करना होगा। अग्रधन की राशि डिमाण्ड ड्राफ्ट के माध्यम से **Executive Engineer, Dam and Gate Design Division-4 Patna, Payable at Patna** के नाम से भुगतेय हो जमा करने के पश्चात् ही निलामी में भाग लेने की अनुमति दी जाएगी। निर्धारित तिथि के बाद किसी भी स्थिति में आवेदन एवं सुरक्षित जमा राशि/अग्रधन/प्रतिभूति स्वीकार नहीं किया जायेगा।

विस्तृत जानकारी state.bihar.gov.in/prdbihar पर भी देखी जा सकती है।

PR- 05213 (W R D) 2024-25

कार्यपालक अभियंता
बाँध एवं गेट रूपाकंण प्रमंडल–4 ,पटना

नशे की मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।

संक्षिप्त खबरें

जिप सदस्य अमित ठाकुर बने मिथिलावादी पार्टी के जिलाध्यक्ष

बेनीपुर(दरभंगा)। मिथिलावादी पार्टी के जिला कार्यकारिणी के चुनाव को लेकर गुरुवार को मझौड़ा में बैठक हुई। इस दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश भारद्वाज ने कहा कि मिथिला के विकाश के लिए संकल्पित एकमात्र मिथिलावादी पार्टी है,जो जमीन से जुड़कर लोगो के समस्या के समाधान के लिए लगातार संघर्षरत है। जिला कार्यकारिणी के चुनाव में सर्वसम्मति से बेनीपुर के जिलापरिषद सदस्य अमित ठाकुर को जिलाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। नवनियुक्त अध्यक्ष श्री ठाकुर ने कहा कि पिछले 8 सालो से मैं मिथिला के लिए समर्पित, त्याग और लगन के भाव से संघर्षरत हूं। प्रखंड प्रभारी रोहित मिश्रा ने आए पदाधिकारी का स्वागत कर किया। इस दौरान बैठक में कृष्णानंद मिश्रा, संतोष साहु, गौतम झा, संजय मिश्रा,राघव झा, पांडव, गुड्डू, गंगाराम यादव, नंदन मिश्रा, खलीउल्लाह, झमेली राम आदि उपस्थित थे।

सरस्वती शिशु मंदिर में संकुल स्तरीय आचार्य कार्यशाला आयोजित

मधुबनी नगर के पटना गद्दी चौक स्थित कुसुम देवी हरि प्रसाद गुप्ता सरस्वती शिशु मंदिर पटना में संकुल स्तरीय आचार्य कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संगीत, वंदना, मासिक गीत, वन्दे मातरम् तथा कार्यालय का प्रशिक्षण हुआ। इस कार्यशाला में संकुल के सभी प्रधानाचार्य एवं आचार्यों की उपस्थिति रहीं। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रवासी कार्यकर्ता रंजीत कुमार, संकुल संयोजक प्रमोद कुमार ठाकुर, सचिव महेश पासवान द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।कार्यक्रम का संचालन, परिचय एवं सम्मान प्रधानाचार्य मनोज कुमार मिश्रा के द्वारा किया गया। अनुभव कथन गजहरा की आचार्या कुमकुम एवं कन्हौली के आचार्य गोपाल के द्वारा किया गया। कार्यशाला की प्रस्तावना प्रवासी कार्यकर्ता रंजीत कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन इस विद्यालय के पूर्व प्रधानाचार्य एवं समिति सदस्य कृष्ण कुमार झा के द्वारा किया गया। संकुल संयोजक ने प्रशिक्षण की वास्तविक उपयोगिता के सम्बन्ध में बहुत ही सराहनीय सुझाव दिए। सम्पूर्ण कार्यक्रम में विद्यालय के सभी आचार्य बन्धु-भगिनी का सराहनीय सहयोग रहा।

जेएनएम की छात्राओं से चाकू दिखाकर हुई लूट

मधुबनी पुलिस रात्रि गश्ती के नाम पर केवल कागजी खाना पूरी करते हैं जो की घटना घटित प्रीता ने बताया। पुलिस की पेट्रोलिंग कमजोर होने से लगातार लूट,हत्या,चोरी जैसी घटना होनी लगी है। मधुबनी सदर अस्पताल से इलाज करवा जे एनएम अपनी छात्रावास पर साथी के साथ जा रही थी तभी। जिसको अज्ञात बदमाशों ने देख पिस्टल व चाकू दिखाकर लूट की। जबकि उक्त छात्रा के साथ बदमाश मारपीट भी किया। छात्रा पिंकी कुमारी ने राजनगर थाना में आरोपी के प्रति आवेदन भी दिया है आवेदन में उल्लेख किया है कि दिनांक 31 जुलाई की रात्रि में सदर अस्पताल की इमरजेंसी वार्ड से इलाज करा कर राघोपुर ब्लॉक हॉस्टल जा रहे थे। इसी बीच रामपट्टी से पूरब तीन सौ मीटर महिनाथ पुर नहर के पास काले रंग का स्प्लेंडर बाइक पर दो आरोपी सवार आए और जिस वाहन पर हम लोग जा रहे थे। उस वाहन को रोक पैसे मांगने लगा। नहीं देने पर बंदूक दिखा गाली गलौज के साथ मारपीट करने लगा। मोबाइल पैसा भी छीन लिया। छात्रा ने राजनगर थाना अध्यक्ष से कड़ी कार्रवाई करने की गुहार लगाई है। आपको बता दे कि,छात्रा औरंगाबाद जिला के पिपरडीह की रहने वाली है। जो राघोपुर बलाट जेएनएम स्कूल में प्रशिक्षण ले रही है।

प्रखंड विकास पदाधिकारी ने बैठक आयोजित की,कहा सात दिनो में आयुष्मान कार्ड बनाने का लक्ष्य पूरा हो

मधुबनी जयनगर टीपीसी भवन में प्रखंड विकास पदाधिकारी राजीव रंजन की अध्यक्षता में बैठक बुलाई गई जिसमे सभी पंचायतों के आशा सेविका सहायिका भाग लिए जिसमे निर्देश दिया गया की अपने अपने जन वितरण प्रणाली डीलर से समन्वय स्थापित करते हुए अधिक से अधिक संख्या में आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु कहा गया। साथ में यह भी कहा गया की एक भी लाभार्थी आयुष्मान कार्ड से वंचित होने पर सारी जवाबदेही स्थानीय डीलर एवम आप सभी का होगे।

जनता दरबार में डीएम ने मामलों का किया निष्पादन

परिवादियों के फरियाद का यथाशीघ्र समाधान हेतु संबंधित विभाग के पदाधिकारीयों को दिए निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।जनता दरबार में जिलाधिकारी राजीव रौशन ने अपने कार्यालय कक्ष में जिला से आए परिवादियों से उनकी समस्यायों को सुनकर किया-समाधान एवं शेष आवेदन को संबधित पदाधिकारीयों को त्वरित निष्पादन करने का निर्देश भी दिया।

उल्लेखनीय है कि प्रत्येक सप्ताह के प्रत्येक शुक्रवार को एक बजे अपराह्न से जनता का दरबार आयोजित होता है। जिलाधिकारी आज 15 से अधिक परिवादी अपनी समस्या की समाधान के लिए उपस्थित हुए।

आज जनता दरबार में समाज कल्याण विभाग, पंचायती राज विभाग, ग्रामीण विकास, सामान्य प्रशासन, शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग,नगर एवं आवास विभाग,पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग एवं आदि के मामलों का निष्पादन किया गया।डीएम ने न केवल परिवादियों की शिकायतों को सुना, बल्कि कई शिकायतों के त्वरित निष्पादन किये तथा शेष आवेदनों को यथाशीघ्र समाधान करने के लिए उपस्थित अधिकारियों, मोबाइल के माध्यम से दिए महत्वपूर्ण निर्देश। बहादुरपुर प्रखंड के एक परिवादी द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना हेतु आवेदन दिया था। जिलाधिकारी ने उप विकास आयुक्त को नियमानुकूल कार्रवाई करते हुए मामलों का निष्पादन करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार सिंहवाड़ा प्रखंड के एक परिवादी द्वारा बताया गया कि समाज कल्याण विभाग के माध्यम से संचालित अन्तरजातीय विवाह प्रोत्साहन योजना हेतु आवेदन दिया था।जिलाधिकारी ने सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा कोषांग नेहा कुमारी को मामले की जाँच करा कर नियमानुकूल कार्रवाई करते हुए मामलों का निष्पादन करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त चित्रगुप्त कुमार, उप निदेशक जन-संपर्क सत्येंद्र प्रसाद, सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा कोषांग नेहा कुमारी, आईटी प्रबंधक पूजा चौधरी एवं अन्य संबंधित पदाधिकारी गण उपस्थित थे।

विद्यालयों में रात्रि प्रहरी की बहाली में भ्रष्टाचार के खिलाफ जिलाधिकारी को ज्ञापन

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिला के भी विभिन्न जगहो पर अलग-अलग एजेंसियों के जरिए विद्यालयों में रात्रि प्रहरी की बहाली की प्रक्रिया चल रही है। इसमें बड़े पैमाने पर पैसे की लेन-देन चल रही है। उपरोक्त बातें ऑल इंडिया सेन्ट्रल काउंसिल ऑफ ट्रेड यूनियन(ऐकटू) के प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी और डीईओ मुजफ्फरपुर को एक ज्ञापन सौंपते हुए कहीं। प्रतिनिधिमंडल में ऐक्टू मुजफ्फरपुर के जिला सचिव मनोज कुमार यादव, बिहार राज्य विद्यालय रसोइया संघ मुजफ्फरपुर के जिला सचिव परशुराम पाठक और माले जिला कमिटी सदस्य असलम रहामनी शामिल थे।मनोज कुमार यादव ने कहा कि विद्यालयों में रात्रि प्रहरी बहाली में रसोइयों को प्राथमिकता देने की बात है। लिहाजा हमारी मांग है कि रात्रि प्रहरी की बहाली में किसी भी तरह की लेन देन पर रोक लगायी जाए। बहाली में कार्यरत रसोइयों की बहाली से संबद्ध दिशा निर्देश का सख्ती से पालन किया जाए।रात्रि प्रहरी की बहाली में कार्यरत रसोइयों को उसी विद्यालय में ही नियुक्त किया जाए।परशुराम पाठक ने मांग करते हुए कहा कि रात्रि प्रहरी बहाली में स्थानीय और और चरित्रवान गैर दबंग) का ख्याल रखा जाए।रात्रि प्रहरी की बहाली विद्यालय शिक्षा समिति के जरिये हो। उन्होने कहा कि मोदी नीतीश सरकार में 2.40 लाख विद्यालय रसोइयों को गुलामों की तरह दैनिक 50 रु मानदेय राशि पर खटाया जा रहा है, जो बेहद शर्मनाक व अपमानजनक है।समाज के सबसे गरीब -गुरबा व दलित-अति पिछड़े समुदाय से आने वाली महिला रसोइयों को मोदी-नीतीश सरकार इस भीषण महंगाई में सालों से 1650 रु मासिक मानदेय पर खटा रही है जो बेहद अपमानजनक है। उन्होंने इस अपमानजनक मानदेय राशि के बजाए प्रति माह व साल के 10 के बजाए 12 महीने 10 हजार रु मानदेय देने की भी मांग की है।

जिलाधिकारी ने की सात निश्चय योजना की समीक्षा

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।जिला पदाधिकारी सुब्रत कुमार सेन ने सरकार की महत्वाकांक्षी सात निश्चय योजना के तहत स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना ,मुख्यमंत्री स्वयं सहायता भत्ता योजना एवं कुशल युवा कार्यक्रम की समीक्षा गुरुवार को डीआरसीसी में की। उन्होंने जिला योजना पदाधिकारी एवं डीआरसीसी के मैनेजर को लगातार मॉनिटर करने तथा साप्ताहिक बैठक कर कार्य में तेजी से सुधार लाने, अधिकाधिक युवाओं को योजनाओं से लाभान्वित करने तथा लक्ष्य के अनुरूप शत प्रतिशत उपलब्धि हासिल करने का सख्त निर्देश दिया। स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना की समीक्षा में पाया गया कि इस योजना के अंतर्गत 18678 आवेदन सत्यापित हैं जिसमें से 13431 आवेदकों को ऋण स्वीकृत किया जा चुका है। साथ ही 12927 विद्यार्थियों को ऋण वितरित किया जा चुका है। इस योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2024-25 में कल लक्ष्य 3622 के विरुद्ध 1576 आवेदन प्राप्त हुए। जिलाधिकारी ने इस माह के अंत तक न्यूनतम 1500 आवेदन स्वीकृत करने तथा शत प्रतिशत आवेदन प्राप्त कर शत प्रतिशत उपलब्धि हासिल करने का निर्देश दिया।मुख्यमंत्री निश्चय स्वयं सहायता भत्ता योजना के तहत मुजफ्फरपुर जिले में कुल 32296 आवेदन प्राप्त हुए हैं निबंध आवेदनों में से 29502 विद्यार्थियों का आवेदन स्वीकृत हुआ जिसमें से 28814 विद्यार्थी इस योजना से लाभान्वित हो रहे हैं। इस योजना की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने 30 अगस्त तक 5000 आवेदन प्राप्त करने तथा जीविका के डीपीएम के साथ बैठक कर कार्य में प्रगति लाने का निर्देश दिया उन्होंने सहायक प्रबंधक से योजना की धीमी प्रगति के लिए स्पष्टीकरण करने का निर्देश दिया।कुशल युवा कार्यक्रमकी समीक्षा में पाया गया कि इस कार्यक्रम के तहत अभी तक मुजफ्फरपुर जिले में कुल 129079 आवेदन प्राप्त हुए हैं । निबंधित आवेदन में से 1285 33 आवेदन को श्रम विभाग को हस्तांतरित किया गया है जिससे 21485 विद्यार्थी मुजफ्फरपुर जिले के विभिन्न प्रखंडों में कुशल युवा कार्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं एवं 63125 विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं । जिलाधिकारी ने प्रबंधक को डीपीएम जीविका के साथ बैठक करने तथा कार्य में प्रगति लाने का निर्देश दिया साथ ही जिला योजना पदाधिकारी डीपीओ आईसीडीएस जिला कल्याण पदाधिकारी जिला शिक्षा पदाधिकारी को आपसी समन्वय कर योजना में शीघ्र प्रगति लाने का निर्देश दिया।

बैठक के उपरांत जिलाधिकारी ने विभिन्न काउंटर का भ्रमण कर स्थिति का जायजा लिया तथा लाभुक विद्यार्थियों से उनकी समस्या के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा आवश्यक फीडबैक प्राप्त किया। गर्मी के मौसम को देखते हुए जिलाधिकारी ने विद्यार्थियों के लिए जगह-जगह पर पंखा की व्यवस्था करने तथा शुद्ध पेयजल की व्यवस्था रखने का निर्देश दिया।मुजफ्फरपुर जिले में कुल 68 कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र संचालित हैं जिसमें 16 प्रखंड मुख्यालय भवन में , 6 तकनीकी महाविद्यालय में एवं 48 स्किल डेवलपमेंट सेंटर में संचालित किया जा रहा है।समीक्षा बैठक में सहायक समाहर्ता डा आकांक्षा आनंद, अनुमंडल पदाधिकारी पूर्वी अमित कुमार जिला शिक्षा पदाधिकारी अजय कुमार सिंह जिला योजना पदाधिकारी नवीन कुमार जिला निबंधन एवं परामर्श केंद्र के मुख्य प्रबंधक मनोज प्रधान सहित कई अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

तिरहुत नहर का तटबंध टूटा कई घर हुए प्रभावित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।जिले के करजा थाना क्षेत्र के रक्सा में तिरहुत नहर का उतरी बांध गुरुवार की रात टूट गया जिसके बाद लोगो के बीच अफरा तफरी मच गई . तिरहुत नहर का बांध रक्सा पंचायत के वार्ड 13 रक्सा बाजार टोला के समीप करीब 40-50 फीट में रात लगभग 10 बजे टूट गया । इससे आसपास के दर्जनों घर प्रभावित हो गया है।.बांध टूटने से आसपास के गांवों में भी पानी प्रवेश कर गया है ।नहर में पानी काफी लबालब भरा था।.जिसके कारण रिसाव होते ही बांध टूट गया. ।मुखिया प्रतिनिधि ने बताया कि वार्ड 13, 14, 15, 16 प्रभावित हुआ है।.गाँव के फुलगेंन राय, ब्रह्मदेव राय, धर्मदेव राय, योगेंद्र साह, सुरेंद्र राय, बसंत राय, राजकुमार राय, रामाधार महतो, मेथुरा चौधरी,सुरेंद्र साह, हिन्दकिशोर सुमन समेत दर्जनों घरों मे पानी घुसा हुआ है।. इससे लोगो को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।.ग्रामीणों की सूचना पर पूर्व मंत्री ई अजित कुमार ने इसकी सूचना तत्काल डीएम व प्रशासन के आलाधिकारी को दी है ।उन्होंने प्रशासन से राहत एवं बचाव कार्य करने एवं पानी से घिरे लोगो को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने की मांग की है। तत्काल इंजीनियर को स्थिता से अवगत कराते हुए मेन कैनाल का गेट बंद करा दिया गया है।

सांप काट ले तो झाड़ फूंक के चक्कर में न पड़कर सीधे नजदीकी अस्पताल जाएं : पप्पू सिंह

प्रात : किरण संवाददाता

अलीनगर(दरभंगा)। घनश्यामपुर मंडल के पुनहद गांव निवासी अर्जुन सदा के पुत्र दिनेश सदा (17) का निधन सर्प दंश से हो गया। परिजनों के अनुसार बताया जा रहा है कि दिनेश देर रात खाना खा के अपने कमरा में सो रहा था, अचानक सुबह जोड़ जोड़ से चीखने लगा। दरवाजा खोलने पर देखा कि एक विषैला सर्प उसके पांव में डस लिया हैं। आनन-फानन में उसे बेनीपुर नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र ले गया, जहां डॉक्टरों ने स्थिति गंभीर देखते डीएमसीएच रेफर कर दिया। वहीं उसका निधन हो गया। इस मौके पर किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष संजय सिंह उर्फ पप्पू सिंह सूचना प्राप्त होने पर परिजन से मिला एवं शोक जताया। उन्होंने कहा कि बदलते मौसम में आए दिन इस तरह की घटना देखने को मिलेगी। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि अगर किसी को भी सांप काट ले तो झाड़ फूंक के चक्कर में न पड़कर सीधे नजदीकी अस्पताल जाएं, अगर ऐसा हुआ होता तो शायद दिनेश सदा हमलोग के बीच रहते। उन्होंने मृतक के विचलित माता पिता को धैर्य के साथ काम लेने की अपील की। पप्पू सिंह ने सरकार से सर्प दंश से पीड़ित परिवार को मुआवजा देने की मांग की हैं। ग्रामीणों के अनुसार दिनेश कुमार बेहद नेक लड़का था, लेकिन अचानक उसकी मृत्यु की खबर सुनकर गांव में सन्नाटा का मातम पसरा हुआ है। पप्पू सिंह के साथ साथ स्थानीय मुखिया संजीव सिंह, चंदन सिंह, नुनु सिंह, सीए विजय झा, बीरबल सदा आदि लोगों ने नम आंखों से श्रद्धांजलि अर्पित की।

जिलाधिकारी ने पेयजल की समस्या को लेकर किया समीक्षा बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिले में भूजल के गिरते स्तर एवं संभावित पेयजल के संकट से निपटने को लेकर जिला प्रशासन पूरी तरह से गंभीर है । जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा स्वयं पेयजल की समस्या को सर्वोच्चप्राथमिकता रखकर इसकी सतत रूप से मॉनिटरिंग कर रहे हैं। संबंधित विभागों को क्षेत्र निरीक्षण कर रिपोर्ट देने के निदेश जारी किए गए हैं। वर्षा नहीं होने के कारण पेयजल की हो रही समस्या के निदान को लेकर समाहरणालय में जिलाधिकारी की अध्यक्षता में कल गुरुवार की देर शाम गहन समीक्षा बैठक आयोजित की गई बैठक में लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के कार्यपालक अभियंता से कार्य की प्रगति के संबंध में फीडबैक लिया गया। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि वर्तमान वर्ष में वर्षा कम होने के कारण शहरी क्षेत्र सहित पूरे जिले में भूजल स्तर में हो रही समस्या को दूर करने की जरूरत है तथा पेयजल की समस्या से निपटने के लिए क्षेत्रों का भ्रमण कर कार्य करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारी को दिया।

सड़क लूट कांड का उदभेदन एक अपराधी गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा)। सड़क लूट की घटना का 2 सप्ताह में पुलिस ने उद्वेदन कर लूटी गई बाइक एवं मोबाइल के साथ अपराधी को गिरफ्तार कर घटना का खुलासा कर दिया है। अन्य अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। अनुमंडल आरक्षी कार्यालय बेनीपुर में शुक्रवार को एसडीपीओ आशुतोष कुमार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पूरी घटना की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बहेड़ा थाना क्षेत्र के कटवासा निवासी कपड़ा व्यापारी अरविंद कुमार पिता चंद्र किशोर यादव 18 जुलाई को 9:30 बजे रात्रि में दुकान बंद कर घर जा रहे थे। इसी बीच एक बैक पर तीन अज्ञात सुनसान जगह कुथना चोर के पास ओवरटेक कर आगे निकला और पुणः बैक होकर व्यापारी को आग्नेयास्त्र दिखाकर मोबाइल एवं बाइक लूट लिया। इस घटना के बहेरा थाना में तीन अज्ञात अपराधियों के विरुद्ध मामला दर्ज कर पुलिस अनुसंधान में जुट गई। एसडीपीओ श्री कुमार ने बताया कि पुलिस ने तकनीकी एवं मानवीय अनुसंधान क्रम में लूट कांड का दो सप्ताह में उद्वेदन कर लिया। बाइक एवं मोबाइल बरामद कर बिरौल थाना क्षेत्र के लोहनी के सिया पासवान के पुत्र रघुवीर पासवान को गिरफ्तार किया। पुलिस के समक्ष अपना अपराध कबूल कर अन्य दो अपराधियों का भी नाम बताया। छापेमारी दल में बहेड़ा थाना के एस एच ओ चंद्रकांत गौरी दरोगा बसंत कुमार रंजीत कुमार जिला तकनीकी इकाई सशस्त्र पुलिस बल शामिल थे। एसडीपीओ ने कहा कि लूट की घटना का शीघ्र उद्वेदन करने वाले पुलिस को पुरस्कृत करने हेतु वरीय पुलिस अधीक्षक को अनुशंसा किया जाएगा।

महादलित युवक पर अत्याचार के खिलाफ डीएम के समक्ष धरना

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के मनियारी थाना के सिलौत विशुनपुर जयनारायण गांव के महादलित युवक संजीत मांझी के साथ 11 जुलाई को हुए अमानवीय कृत के खिलाफ आज नागरिक मंच, मुजफ्फरपुर की ओर से जिलाधिकारी के समक्ष एकदिवसीय धरना दिया गया। वक्ताओं ने कहा विगत 11 जुलाई 2024 को मनियारी थाना के सिलौत विशुनपुर जयनारायण गांव में मुख्य सड़क से महादलित (मुसहर) बस्ती को जोड़ने वाला सैकड़ों वर्षों पुराना रास्ता अवरुद्ध करने का विरोध करने पर महादलित (मुसहर जाति) से आने वाले संजीत मांझी के साथ गांव के ही दबंगों ने कुछ बाहरी लोगों का साथ लेकर मारपीट किया। चाकू से संजीत मांझी के सिर पर वार कर उन्हें जख्मी किया तथा अपने को ऊंची जाति का होने का दंभ भरते हुए संजीत मांझी एवं उनकी पत्नी को प्रताड़ित किया और किसी भी सभ्य समाज को शर्मसार करने वाला अमानवीय कृत को अंजाम दिया। परंतु घटना के लगभग 20 दिन बीत जाने के बाद भी प्रशासन ने स्थानीय विधायक एवं सांसद जो राज्य एवं केंद्र सरकार में मंत्री भी हैं के दबाव में अभी तक अभियुक्तों को गिरफ्तारी नहीं किया है। यह उनके दलित विरोधी रवैये को दशार्ता है। किसी भी जनप्रतिनिधि को अपराधियों को संरक्षण देना उचित नहीं है। वे इस तरह की कार्रवाई बंद करें वरना जनता उन्हें उखाड़ फेंकेगी। धरना के माध्यम से मनियारी थाना कांड संख्या 165 /24 के अभियुक्तों को अविलंब गिरफ्तार करने, दलितों पर बढ़ते अत्याचार पर रोक लगाने, सिलौत विशुनपुर जयनारायण गांव के मुसहर बस्ती में सम्पर्क पथ का निर्माण अविलंब कराने, सभी दलितों एवं भूमिहीनों को वास की जमीन देन, सभी दलितों एवं कमजोर तबके के लोगों को समाजिक सुरक्षा की गारंटी करने और विभिन्न स्थानों पर बसे सभी गरीबों को वासगीत पर्चा देने की मांग की गई। अंत में एक ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा गय। धरना की अध्यक्षता अवधेश चौधरी ने किया। प्रतिनिधिमंडल में अमर ज्योति पासवान, प्रदेश सचिव, भीम आर्मी, उदय चौधरी, मुखिया, प्रहलादपुर, कालीकांत झा, निरज कुमार, समता प्रकाश, शुभराज शामिल थे।

सशस्त्र सीमा बल 48 वी बटालियन के जवानों ने सीमा पर किया प्रतिबंधित दवाइयों को जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिले के भारत-नेपाल सीमा पर तैनात 48वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल जयनगर के कार्यक्षेत्र भारत-नेपाल सीमा चौकी हरने के जिम्मेवारी के इलाके में वाह्य सीमा चौकी हरने के जवानों द्वारा गुप्त सूचना के आधार पर नाका ड्यूटी के दौरान भारतीय-नेपाल सीमा स्तम्भ संख्या 280/33 के नजदीक नो मैन्स लैंड से 50 मीटर भारतीय क्षेत्र में प्रतिबंधित दवाइयां डायलेक्स डीसी 100 एमएल की 174 बोतल को जब्त किया गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार एक व्यक्ति प्लास्टिक के बोरे को उठाकर भारतीय क्षेत्र से नेपाल की तरफ जा रहा था एसएसबी के जवानों को उक्त व्यक्ति के ऊपर संदेह होने पर उसे रुकने हेतु बोला तो व्यक्ति जवानों को देखते ही सामान छोड़कर अंधेरे का फायदा उठाते हुए नेपाल की तरफ भागने में सफल रहा।जब्त की गई दवाइयां को अग्रिम कार्यवाही हेतु हरलाखी थाने के सुपुर्द कर दिया गया है।भारत-नेपाल सीमा पर तस्करी रोकने के लिए सशस्त्र सीमा बल लगातार अभियान चला रही है।इस बाबत गोविंद सिंह भंडारी कमांडेंट 48वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल जयनगर ने बताया कि भारत-नेपाल सीमा पर होने वाली तस्करी और अन्य अपराधों की रोकथाम के लिये विशेष अभियान के माध्यम से निरन्तर प्रयासरत है, ताकि इस प्रकार की गतिविधियों पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाया जा सके।

लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तिकरण विषय पर कार्यशाला आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में मंगलवार को लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तिकरण के विषय पर आधारित मस्तिष्क मंथन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरूआत उपस्थित अतिथि एवं कुलपति ने दीप जलाकर किया । उपस्थित कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने कहा कि महिलाओं के ज्ञान अर्जन से महिला सशक्तिकरण को पुरा किया जा सकता है , उन्होंने कहा कि लैंगिक समानता लाने के लिए सभी को मानसिकता में बदलाव लाना होगा, उन्होंने नारी को सृष्टि निमार्ता एवं पोषण कर्ता बताया , उन्होंने कहा कि महिला उद्यमिता को अपना कर समानता को लासकती है, उन्होंने कहा कि लोगों की सोच में परिवर्तन आया है जिसके कारण बालिका कृषि शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ी है , अतिथि के रुप में उपस्थित नई दिल्ली डी एस टी बीज प्रभाग के सलाहकार सह प्रधान डॉ विनीत शर्मा ने स्थानीय परिवेश की सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित इस कार्यशाला से अवश्य बिहार सहित पूरे देश में सकारात्मक बदलाव आएगी।

निदेशक ऐ डॉ ए के सिंह ने कहा कि लैंगिक बिषमता विश्व स्तरीय समस्या है जिसे सभी की सहभागिता से दूर किया जा सकता,अधिष्ठाता डॉ उषा सिंह ने कहा कि इसके लिए लोगों को मानसिकता बदलने की जरूरत है, उन्होंने कहा कि महिलाओं को सशक्तिकरण के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा व स्कील पर ध्यान देने की जरूरत है। डॉ संगिता देव ने अतिथियों को विषय से अवगत कराया, निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ एम एस कुंडु ने कार्यशाला में विषय से जुड़ी अपनी बातों को रखा, कार्यक्रम का संचालन डॉ तुलिका ने की वहीं धन्यवाद ज्ञापन डॉ विनीता सत्पथी ने किया।, मौके पर निदेशक बीज एवं प्रक्षेत्र डाक्टर डी के राय, अधिष्ठाता डॉ पी पी श्रीवास्तव, डॉ आर के झा,डॉ आर के तिवारी, डॉ बीणा शाही, डॉ शंकर झा, सहित महिला किसान उपस्थित थे।

आगामी विस चुनाव में राजद की बनेगी सरकार : सरिता राय

●वैशाली महानगर प्रधान महासचिव को तीन विधानसभा के संगठन प्रभारी का जिम्मा

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राष्ट्रीय जनता दल ने तैयारी शुरू कर दी है। सभी प्रकोष्ठ नेता व कार्यकर्ता तैयारी में जुटे हैं। हर प्रकोष्ठ के अध्यक्ष विधानसभा वार संगठन को मजबूती देने में जुटे हैं। इसके लिए समीक्षा की जा रही है। स्थानीय नेता और कार्यकर्ता बैठक कर रणनीति तैयारी कर रहे हैं। महिला प्रदेश अध्यक्ष रितु जायसवाल ने भी अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। महिलाओं को संगठित कर उन्हें जिम्मेवारी सौंप रही हैं। इसी कड़ी में उन्होंने वैशाली महानगर की प्रधान महासचिव सरिता राय को तीन विधान सभा महनार हाजीपुर और राजा पाकर का संगठन प्रभारी बनाया गया है। वहीं, कुमारी राजमणि को महुआ एवं पातेपुर का प्रभारी बनाया गया है। जिम्मेवारी मिलने पर ने खुशी जताते हुए सरिता राय ने प्रदेश महिला अध्यक्ष सहित पार्टी के शीर्ष नेताओं के प्रति आभार प्रकट किया है। कहा है कि पार्टी ने जो जिम्मवारी सौंपी है उसे बखूबी निर्वहन करूंगी। पार्टी द्वारा किये गये कार्यों को घर-घर जाकर बताने का काम करूंगी। श्री राय ने दावा किया कि आगामी विस चुनाव में राजद की सरकार बनेगी।

बीडीओ ने प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक पर कर्रवाई का दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)। प्रखंड के प्राथमिक विद्यालय नरकटिया के प्रधानाध्यापक का अश्लील ओडियो वायरल के मामले को बीडीओ अशोक कुमार जिज्ञासु ने गंभीरता से लेते हुए नियोजन इकाई को उनके विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। मालूम है कि 31 जुलाई को प्रधानाध्यापक गंगा प्रसाद यादव का एक अश्लील ओडियो क्लिप विभिन्न वाट्स एप ग्रुप पर तेजी से वायरल होने लगी। जिसकी जानकारी मिलते ही बीडीओ श्री जिज्ञासु ने वायरल ओडियो क्लिप की जांच बीईओ राम भरोसे चौधरी से कराई। बीईओ श्री चौधरी ने ओडियो क्लिप की जांच कर प्रतिवेदन बीडीओ को सौंप दिया। बीईओ के जांच प्रतिवेदन का अवलोकन करने पर प्रधानाध्यापक के वायरल ओडियो क्लिप में उनके द्वारा किए गए कृत्य कर्तव्यहीनता एवं अनुशासनहीनता पाया गया। जिसपर बीडीओ ने पंचायत नियोजन ईकाई को पत्र लिखकर प्रधानाध्यापक पर 24 घंटे के अंदर अनुशासनिक कार्रवाई करने का सख्त निर्देश दिया।

संक्षिप्त खबरें

आकाशीय बिजली की चपेट में आने से युवक की हुई मौत

जमुई [झाझा] घर से शौच के लिए जा रहे एक युवक के उपर अचानक आकाशीय बिजली गिर जाने से उसकी मौत हो गई। मामला सोनो प्रखंड क्षेत्र के भीठरा गांव समीप कुरकुटटा गांव की है। इधर युवक को उसके परिजन एवं ग्रामीणों के द्वारा उठाकर रेफरल अस्पताल झाझा लाया जहां चिकित्सक के द्वारा जांच किए जाने के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक की पहचान कुरकुटटा गांव निवासी स्व. कृष्णदेव प्रसाद साह का 35 वर्षीय पुत्र पवन कुमार साह के रूप में हुई है। घटना के संदर्भ में उसके परिजनों ने बताया कि शुक्रवार की दोपहर को बारिश हो रहा था तभी पवन शौच के लिए घर से खेत की ओर जा रहा था कि तभी घर से महज कुछ दूरी पर अचानक उसके उपर आकाशीय बिजली गिरा जिससे पवन अचानक गिर गया और लोग मौके पर पहुंचा और तुरंत उसे उठाकर इलाज के लिए अस्पताल लाया। डॉक्टर के द्वारा मृत घोषित किए जाने के बाद अस्पताल में मौजूद परिजनों मे कोहराम मच गया। मौजूद लोगों के द्वारा दी गई जानकारी अनुसार मृतक किसान बताया गया है।

हथिया पुल पर गिरा विसाल पेड़ का टहनी,वाहनों के आवागमन पर हो रही परेशान

जमुई [झाझा] गुरूवार की देर रात आई तेज हवा के साथ बारिश से झाझा- सोनो मुख्य मार्ग के हथिया पुल के अंतिम छोर पर एक विसाल पेड़ का टहनी गिर गया। जिसके कारण पुल से गुजरने वाली छोटी बड़ी गाड़ियों को काफी परेशानी हो रही है। स्थानीय ग्रामीण अभिनब सिंह, नीतीश सिंह, अभिषेक सिंह ने बताया की देर रात अचानक आवाज आया जब घर से बाहर निकलकर देखे तो पेड़ का टहनी गिरा पड़ा था। खबर संप्रेषण तक पेड़ का टहनी पुल पर गिरा था।

विद्यालय में बच्चों को नहीं मिल रहा एक भी लाभ, एबीवीपी ने किया प्रदर्शन

प्रातः किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] झाझा प्रखंड के कानन पंचायत में अवस्थित अजूबा विद्यालय जहां नल और बोरिंग है परंतु पानी नहीं, शौचालय है परंतु दरवाजा और शीट नहीं, भवन है परंतु दरवाजा और खिड़की नहीं, मध्याह्न भोजन योजना है परंतु भोजन नहीं। जी हां बात कर रहा हूं मध्य विद्यालय सह +2 उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय कानन की, जहां सरकारी विद्यालय का संचालन प्रभारी प्रधानाध्यापक अपने इच्छानुसार करते हैं।उक्त वाकए को लेकर विद्यालय के बच्चों ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकताओं के साथ मिलकर जमकर बवाल काटा तथा शिक्षा विभाग के इस रवैए के खिलाफ जमकर नारेबाजी भी की। बताते चलें कि हाल ही में शिक्षा विभाग द्वारा तीन लाख सात हजार रुपए की लागत से किए गए बोरिंग यूं ही बेकार पड़ी है, उसमें लगे मोटर का कनेक्शन तक नहीं किया गया है....पानी तो बहुत दूर की बात है। साथ ही पचपन हजार आठ सौ दस रुपए की लागत से निर्मित वॉटर स्टेशन की स्तिथि देखकर ऐसा प्रतीत होगा की आजतक इसका लाभ बच्चे नहीं उठा पाए होंगे। विगत एक वर्ष पूर्व निमार्णाधीन शौचालय अबतक पूरा हो ना सका और विभाग द्वारा बजट भी पास किया जा चुका है।वर्ग कक्ष में खिड़की दरवाजे की स्तिथि काफी दयनीय है। बच्चों के बैठने हेतु बैंच डेस्क भी आंकड़ों से कम ही खरीदा गया तथा पैसों की कथित तौर पर बंदरबांट कर ली गई। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद दक्षिण बिहार के एसएफडी सह संयोजक सूरज बरनवाल व नगर मंत्री झाझा हरिनंदन प्रजापति ने कहा कि इस विद्यालय में आने पर महसूस हुआ की सरकार द्वारा मिलनी वाली सभी योजनाओं का सलीके से बंदरबांट हुआ है।यहां तक भी प्रधानाध्यापक कक्ष में प्रधानाध्यापक की कुर्सी छोड़ अन्य कुर्सी के स्थान पर आगंतुक या अभिभावकों हेतु बैंच लगी हुई है।जिला शिक्षा पदाधिकारी से मांग करता हूं कि ऐसे विद्यालय की अविलंब जांच कर न्यायसंगत कार्यवाही करें,ताकि बच्चों को मिलने वाली योजनाओं का लाभ धरातल पर दिख सके। एबीवीपी दक्षिण बिहार प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य रूपेश भारती, नगर कार्यकारिणी सदस्य नीतीश केशरी, सतीश सिंहा ने कहा कि इस विद्यालय की सभी व्यवस्था चरमराई अवस्था में है। इंसान की मूल आवश्यकताओं में से एक शुद्ध पेयजल तक की व्यवस्था इस विद्यालय में नहीं होना दुर्भाग्य की बात है। एक तरफ सरकार विकास के बड़े-बड़े दावे करती है तो दूसरी तरफ विद्यालय की ऐसी स्थिति सरकार के सभी दावों को तार तार करती नजर आती है।

डीएम ने वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से की आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु अभियान की समीक्षा

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा जिला पदाधिकारी विजय प्रकाश मीणा के द्वारा गुरुवार को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के लाभुकों में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना अंतर्गत आच्छादित लाभार्थियों के अतिरिक्त छुटे हुए समस्त लाभार्थियों को आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना अंतर्गत आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु मधेपुरा जिले में चल रहे अभियान की समीक्षा वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से की गई। मधेपुरा जिला अंतर्गत कुल- 18 लाख 26 हजार 6 सौ 80 लाभार्थी इन दोनों योजनाओं के अंतर्गत पात्रता रखते हैं, जिनमें अभी तक 9 लाख 4 हजार 1 सौ 47 लाभार्थियों का कार्ड बनाया गया है शेष सभी लाभार्थियों के लिए सभी जीविका, आंगनबाड़ी केंद्र सेविका/सहायिका, विकास मित्र, आशा आदि के माध्यम से जन जागरुकता लाकर इस अभियान को सफल बनाने का प्रयास किये जाने को निदेशित किया गया। 18 जुलाई से प्रारंभ हुए इस अभियान अंतर्गत अब तक कुल 202495 आयुष्मान कार्ड का निर्माण किया जा चुका है। यह मेगा अभियान 7अगस्त तक संचालित रहेगा। आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना अंतर्गत पात्र लाभार्थियों का प्रति परिवार प्रतिवर्ष 5 लाख रू तक का निःशुल्क ईलाज किसी भी सरकारी अस्पताल अथवा योजनान्तर्गत सूचीबद्ध निजी अस्पतालों में करवाया जा सकता है।

विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग में सिनॉप्सिस जमा करने का अंतिम दिन आज

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा बी एन एम यू के शैक्षणिक परिसर स्थित विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग में उपकुलसचिव (शैक्षणिक) द्वारा निर्गत पत्र ज्ञापांक जीएस (डीआरए -08/24) 705/24 दिनांक 25/07/2024 के आलोक में पैट-21 हेतु डीआरसी की बैठक के आयोजन हेतु सभी शोधार्थियों सूचित किया गया है।

जारी पत्र में कहा गया है कि पीएचडी रजिस्ट्रेशन फॉर्म प्राप्त कर अपने सभी वांछित डोकोमेंट्स यानि कि पीएचडी रजिस्ट्रेशन फॉर्म, पासपोर्ट साइज फोटो दो, सिनॉप्सिस दो सेट में, एडमिशन रसीद, रजिस्ट्रेशन लेटर, मैट्रिक से पीजी फोर्थ सेमेस्टर तक का एडमिट कार्ड, मार्क शीट, ओरिजिनल सर्टिफिकेट, पैट-21 का एडमिट कार्ड एवं मार्क शीट, पैट-21 कोर्स वर्क एडमिट कार्ड एवं मार्क शीट, शपथ पत्र फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट से बना हो जिसमें कार्यरत नहीं हों या कहीं अन्य जगह नामांकित नहीं हैं।

का जिक्र अवश्य हो। उपर्युक्त सभी डोकोमेंट्स के साथ फोल्डर फाइल में लगा कर 3 अगस्त (शनिवार) तक विभाग में अवश्य जमा करें। उक्त आशय की जानकारी विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग के एचओडी डॉ. अर्जुन कुमार यादव ने दी।

जो जीत गया वो हेलिकॉप्टर पर गया और आपका बच्चा गाँव में ही रह गया : प्रशांत किशोर

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने ज़िले के दो प्रखंडों में पदयात्रा की। प्रशांत किशोर ने कहा कि बीते दस सालों में हमने जिस दल-नेता का हाथ पकड़ा उसको हारने नहीं दिया। जिसे सलाह दिया वो सब जीतकर राजा हो गए। दो साल पहले हमने उस काम को छोड़ दिया, आप पूछिएगा कि जिस काम को करके इतना नाम, पैसा और शोहरत कमाया है, वो काम छोड़कर गली-गली पैदल क्यों चल रहे हैं? पैदल इसलिए चल रहे हैं। हमने दस साल नेताओं को जिताकर देखा, 10 सरकार बनाकर देखा कि नेताओं के जीतने से जनता की स्थिति नहीं सुधरती। आपको लगता है कि आपकी जाति का नेता जीत गया, जो जीत गया वो हेलिकॉप्टर पर गया और आपका बच्चा गाँव में ही रह गया। हमें ये अनुभव हुआ कि जिसको सलाह दें वो राजा हो जाता है तो हमने सोचा अब जनता के सलाह देंगे ताकि उनकी ज़िंदगी भी बदले और वो राजा बन जाए। प्रशांत किशोर ने शुक्रवार को ज़िले के दो ब्लॉक उदाकिशुनगंज और बिहारीगंज के नौ गांवों में पदयात्रा की। इस दौरान वे परिहारपुर के उत्क्रमित मध्य विद्यालय, देवेल चौक, मधुकर चक, गमैल, हथिऔंधा होते हुए मधुकर चक में रात्रि विश्राम किया। इस दौरान कई जगहों पर रुककर जन संवाद कर लोगों को वोट की ताकत का एहसास भी दिलाया।

गिद्धौर बाजार के लॉर्ड मिंटो टावर के निकट मुख्य राजमार्ग पर जलजमाव से सड़क की स्थिति हो रही खराब

भारी बारिश में हाइवे तालाब में हो जाता है तब्दील

प्रातः किरण संवाददाता

गिद्धौर /जमुई इस सड़क की दुर्दशा को गौर से देखिये यह गिद्धौर बाजार के लॉर्ड मिंटो टावर के निकट राष्ट्रीय राजमार्ग की है। जहां बारिश में हाइवे की स्थिति बद से बदतर हो जाती है। यहां लगातार हो रहे बारिश के कारण, बारिश का पानी सड़क पर जल जम जाता है जिससे सड़क पर जलजमाव से सड़क तालाब जैसी दिखने लगती है। वहीं आलम यह है कि हाइवे पर लार्ड मिंटो टॉवर के निकट जल निकासी की व्यवस्था नही रहने से दिन ब दिन मुख्य राजमार्ग की स्थिति यहां खराब होती जा रही है। वहीं सड़क पर बारिश का पानी जमने से ढलाई में दरार पड़ने लगी है। उक्त सड़क जगह जगह से टूटना शुरू हो गया है। इस समस्या को ले गिद्धौर बाजार के स्थानीय दूकानदार एवं ग्रामीण बताते हैं कि सड़क निर्माण के दौरान ही जैसे तैसे छोड़ छोड़कर सड़क किनारे नाले का निर्माण करवाया गया जिससे सड़क किनारे पानी के निकासी का साधन नही है. स्थिति यह है कि उक्त मुख्य राजमार्ग के किनारे नाले का पूर्णरूपेण निर्माण नहीं किये जाने से सड़क में दरार पड़नी शुरू हो गयी है। अगर विभागीय स्तर से इस समस्या के निदान को ले कोई ठोस पहल नहीं किया गया तो बहुत जल्द गिद्धौर बाजार के लॉर्ड मिंटो टावर के निकट सड़क बड़े बड़े गड्ढे में तब्दील हो जायेगी।

नाला के विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच हुई मारपीट, आठ लोग हुए घायल

मामला झाझा थानाक्षेत्र के सोहजाना गांव की है, दो गंभीर रूप से घायल को जमुई किया रेफर

प्रातः किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] नाला के विवाद को लेकर सोहजाना गांव में दो पक्षों के बीच मारपीट हो गई जिसमें दोनो पक्षों के ओर से कुल मिलाकर आठ लोग घायल हो गया। सभी घायल इलाज के लिए रेफरल अस्पताल झाझा पहुंचा जहां सभी घायलों का इलाज किया गया। एक पक्ष से घायल की पहचान गंगीया देवी बेटी मायावती देवी, खुशबु कुमारी, सोनिया देवी तथा दूसरे पक्ष से घायल की पहचान विनोद यादव उसका बेटा अनुज कुमार, सनोज कुमार, पत्नी रूबी देवी के रूप में हुई है।

अस्पताल में सभी घायलों का इलाज किए जाने के बाद एक पक्ष से गंगीया देवी और उसकी बेटी सोनिया देवी की स्थिति नाजुक रहने पर डॉक्टर ने दोनो को बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया।

एक पक्ष से घायल गंगीया देवी के पति बासदेव यादव ने बताया कि मेरे घर के पास नाला बना हुआ जिसको दूसरे पक्ष के लोगों ने तोड़ दिया जिससे घर में बारिश का पानी घुस जाता है।

तो घर के पास एक गडडा बना दिया ताकि सारा पानी उस गडडे में जमा हो जाए इसी बात को लेकर दूसरे पक्ष के लोगों ने ईट, लाठी डंडा से मारपीट करने लगा। दूसरे पक्ष से घायल विनोद यादव ने बताया कि गडडा बना देने से बारिश का पानी मेरे घर के पास जमा हो रहा था इसी बात की शिकायत किया तो पहले पक्ष के लोगों ने मारपीट करना शुरू कर दिया।

सुखासन चकला गांव में पुराने भूमि विवाद को लेकर दो पक्षों में हुई जमकर मारपीट

- एक महिला और एक पुरुष घायल, सदर अस्पताल में चल रहा है इलाज

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा सदर थाना क्षेत्र के सुखासन चकला गांव में पुराने भूमि विवाद को लेकर दो पक्षों में जमकर मारपीट की घटना सामने आया है इस दौरान एक महिला और एक पुरुष घायल है जिसका इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है।

घटना को लेकर पीड़िता खुशबू कुमारी ने मधेपुरा सदर थाना में आवेदन दिया है, उन्होंने बताया कि सुखासन चकला वार्ड संख्या 9 निवासी आनंद कुमार उर्फ खिलाड़ी उनके दरवाजे पर गोबर फेंक रहा था। गोबर फेंकने से मना किया तो आनंद कुमार और उनके परिजनों ने मेरे साथ मारपीट करना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा कि दूसरे पक्ष के लोगों ने लाठी-डंडा और लोहे के रॉड से मारपीट कर उसे घायल कर दिया।

हल्ला की आवाज सुनकर उनके पति बचाने आए तो दूसरे पक्ष के लोगों ने उनके साथ भी मारपीट करना शुरू कर दिया। तब तक आसपास के लोग वहां आ गए और मामला को शांत करवा कर दोनों घायलों को मधेपुरा सदर अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती करवाया है । उन्होंने थानाध्यक्ष से उचित कानूनी कार्रवाई की मांग की है। वहीं इस मामले में मधेपुरा सदर थाने में प्राथमिकी दर्ज कर पुलिस मामले की जांच में जुटी गई है।

बहरहाल थानाध्यक्ष सह इंस्पेक्टर बिमलेंदु कुमार ने बताया कि मामला दर्ज कर ली गई है इस मामले में पुलिस उचित कार्रवाई में जुट गई है दोषी पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

मरीज को ढोने वाला तीन एंबुलेंस अस्पताल में तकनीकी बीमारी से खुद पड़ा हुआ है बीमार

शुक्रवार को अस्पतालकर्मी एंबुलेंस को धक्का देकर स्टार्ट करने का दृश्य आया सामने

प्रातः किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] स्वास्थ्य सुविधा को बेहतर किए जाने का लाख वादा स्वास्थ्य विभाग की ओर से किया जाता है लेकिन हकीकत कुछ ओर ही सामने आती है। जिसका एक उदाहरण रेफरल अस्पताल में देखने को मिला है। किसी न किसी बात को लेकर हमेशा सुखियों में रहने वाले रेफरल अस्पताल में इस बार कुछ ओर ही दृश्य लोगों के सामने आया है जहां लोगों की सुविधा को लेकर अस्पताल में प्रदान कि गई 102 एंबुलेंस बीमार मरीज को लाने पहुंचाने वाला एंबुलेंस खुद तकनीकी बीमारी में जकड़ा हुआ है। शुक्रवार को एक मरीज को जमुई रेफर किया गया लेकिन जब एंबुलेंस को स्टार्ट किया गया तो एंबुलेंस स्टार्ट नही हुआ जिसके बाद अस्पताल के कर्मी एंबुलेंस को आगे पीछे से धक्का देकर स्टार्ट करने का भरपूर प्रयास किया गया लेकिन एंबुलेंस स्टार्ट नही हुआ जिसके बाद मरीज को प्राइवेट एंबुलेंस से जमुई सदर अस्पताल भेजा गया। अस्पताल में एकमात्र 102 एंबुलेंस की हालात गड़बड़ नही बल्कि अस्पताल में मौजूद अन्य दो एंबुलेंस की स्थिति भी दयनीय है जिससे किसी तरह काम लिया जा रहा है। एंबुलेंस के चालक भी एंबुलेंस की दयनीय स्थिति को लेकर अस्पताल के प्रबंधक को सूचना दी है। क्या कहते है अस्पताल प्रबंधक- अस्पताल प्रबंधक नवनीत कुमार ने बताया कि एंबुलेंस का हड़ताल था जिसके कारण खड़ी एंबुलेंस में तकनीकी खराबी आ चुकी है हड़ताल समाप्त होने के बाद एंबुलेंस को दो बार गैरेज भी भेजा गया था लेकिन एंबुलेंस सही रूप से बन नही पाया है एंबुलेंस के खराबी रहने को लेकर जिला स्वास्थ्य विभाग को भी सूचना पत्र के माध्यम से दे दिया गया है। प्रबंधक ने बताया कि तीनो एंबुलेंस में कुछ न कुछ समस्या है इसको जल्द ठीक करवाने का प्रयास किया जा रहा है फिलहाल मरीज को प्राइवेट एंबुलेंस का अस्पताल के फंड से उपयोग किए जा रहे है।

छात्राओं का चयन सुनिश्चित करने हेतु साक्षात्कार की तैयारी जरूरी : निदेशक

प्रातः किरण संवाददाता

दरभंगा।डॉ एपीजे अब्दुल कलाम महिला प्रौद्योगिकी संस्थान दरभंगा में निकट भविष्य में बहुराष्ट्रीय कंपनियां कंपस में बहाली के लिए आने वाली है जिसमे इंफोसिस कंपनी पहले राउंड ऑनलाइन मोड में 4 अगस्त रविवार को आने वाली है इसके साथ ही एक और बहुराष्ट्रीय कंपनी एसेंचर की भी आगामी सप्ताह में संस्थान में आने की संभावना है। छात्राओं का चयन सुनिश्चित करने हेतु साक्षात्कार की तैयारी करने के लिए एक अगस्त से दो दिनों के लिए कौशल विकास कार्यशाला का आयोजन संस्थान की प्लेसमेंट सेल के द्वारा किया गया। अवगत हो की अभी सत्र 2020-24 एवं 2021-25 दोनों का ही प्लेसमेंट किया रहा है । कार्यशाला में क्रिप्टो एडयुटेक जो कि भारत सरकार से रजिस्टर्ड है के रिसर्च पर्सन के रूप में आए दीपक बंसल ने छात्राओं को कई महत्वपूर्ण जानकारियां दी साथ ही साथ छात्राओं का बैकएंड, एसक्यूएल डेटाबेस आदि का कॉन्सेप्ट दिया जो प्रायः अभी टेक्निकल राउंड में प्रोग्रामिंग में कंपनियों द्वारा पूछा जाता है। छात्राओं ने कार्यशाला की जमकर तारीफ की और अच्छा फीडबैक दिया।

निदेशक महोदय प्रो प्रेम मोहन मिश्रा ने प्लेसमेंट सेल को ऐसे कार्यशाला, सेमिनार करवाते रहने की सलाह दी तथा छात्राओं का इससे मिल रहे लाभ के लिए खुशी वक्त की।

संस्थान की प्लेसमेंट सेल इनचार्ज डॉ रश्मि कुमारी ने छात्राओं से कार्यशाला के बाद उनका फीडबैक फॉर्म भरवाया जो की काफी सराहनीय रहा और छात्राओं ने श्री बंसल का एक और सेशन रखने की मांग की । रिसोर्स पर्सन श्री बंसल का संस्थान के निदेशक महोदय ने स्वागत तथा आभार व्यक्त किया और उनके सफल कार्यशाला आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

गिद्धौर डाइट में प्रशिक्षण प्राप्त करने आए शिक्षकों को कराया गया परिभ्रमण

प्रातः किरण संवाददाता

गिद्धौर/जमुई। गिद्धौर स्थित शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र यानी डाइट में प्रशिक्षण प्राप्त करने मोकामा एवं पंडारक से आए 219 शिक्षकइशिक्षिकाओं को शैक्षणिक भ्रमण के लिए सिमुलतला आवासीय विद्यालय एवं स्वामी विवेकानंद बी एड कॉलेज ले जाया गया। जहां प्राकृतिक से भरे खनिज संपदा एवं सौंदर्य की रूप रेखा से परिचय कराया गया। मौके पर डाइट गिधौर के प्रिंसीपल डॉ नावेद हसन ने कहा कि शिक्षकों को प्रशिक्षण और परिभ्रमण से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। वहीं सहायक व्याख्याता सचिन कुमार भारती ने कहा कि हमारा निरंतर प्रयास होता है कि वर्तमान समय मे शिक्षकों को हर उन नई चीजों से परिचय कराएं जिससे शिक्षक बेस्ट प्रैक्टिस सीख सके। विद्यालय में जाकर उसे बच्चों को बीच लाया जाए ताकि उनमें मानसिक और शारीरिक रूप से परिवर्तित किया जा सके। भ्रमण के दौरान सभी शिक्षकों ने एक-एक कर सभी चीजों का अवलोकन किया। इस मौके रश्मि कुमारी, रविन्द्र कुमार, स्वेता कुमारी, राजेश कुमार, मोहिनी कुमारी, ज्योति कुमारी, शिक्षक आर्यन कुमार, गौरव कुमार, आलिया फातमा, स्वेता रानी, लीलाधर कुमार, सकीपुर रहमान, दिनकर दिवाकर, प्रमोद सिंह, कुमार सुंदरम, राजीव रंजन, मेहजवी बेगम सहित अन्य शिक्षक-शिक्षिकाएं मौजूद रहे।

केपीएसपी उच्च विधालय गंगाजल सोनपुर में कौशल दिवस का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के 4 चार वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर के.पी.एस.पी उच्च विधालय, गंगाजल में विधालय की प्रधानाध्यापिका स्मृति कणा के नेतृत्व में शिक्षा सप्ताह का आयोजन 22 जुलाई से 3 अगस्त तक शिक्षा सप्ताह का आयोजित किया जा रहा है।जिसके तहत इस सप्ताह के प्रत्येक दिन थीम आधारित कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।इसी कड़ी में आज पांचवे दिन विधालय के वर्ग दशम के बच्चों के द्वारा विधालय की वरीय शिक्षिका प्रीति श्रीवास्तव, सोनी कुमारी, रीना कुमारी तथा संगीता पाण्डेय ने विधालय परिसर में पौधारोपण करवाकर हरा भरा धरती के महत्व तथा पर्यावरण संरक्षण से संबंधित जानकारियां साझा की। इस दौरान शिक्षिका प्रीति श्रीवास्तव ने बच्चों को पर्यावरण की जानकारी देते हुए कहा की पर्यावरण संरक्षण व्यक्तियों, समूहों और सरकारों द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करने का अभ्यास है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों और मौजूदा प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण करना और जहाँ संभव हो, क्षति की मरम्मत करना और प्रवृत्तियों को उलटना है।इस दौरान बच्चों को मिट्टी की जांच करने तथा इसके पीएच मान तथा उपजाऊ मिट्टी के प्रकार की जानकारी दी। इस अवसर पर शिक्षिका सोनी कुमारी ने बच्चों को बिहार एवं देश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक महत्व की जानकारी प्रदान करते हुए ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण।

बिहार सरकार

भवन निर्माण विभाग

कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमंडल, पटना का कार्यालय

अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या– 24 वर्ष 2024–25

(विशेष शर्त्त मद एवं मात्रा के लिए वेबसाईट State.bihar.gov.in/prdbihar देखें)

समुचित श्रेणी मे निबंधित संवेदको/ख्याति प्राप्त फर्मों/कम्पनियों से दिनांक 12.08.2024 के अपराह्न 12.30 बजे तक निर्देशानुसार निम्नलिखित कार्यों के लिए मुहरबंद कोटेशन अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, पटना का कार्यालय एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में प्राप्त किया जाएगा और उसी दिन 3.00 बजे अपराह्न मे कोटेशनदात्ताओं या उनके द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जायेगा।

कोटेशन का मूल्य (रुपये में) प्रत्येक कार्य क्रमांक के कोटेशन–पत्र के साथ कोटेशन मूल्य ONLINE GOVERNMENT REVENUE AND ACCOUNTING SYSTEM (O-GRAS) के माध्यम से (कार्यपालक अभियंता, केन्द्रीय भवन प्रमण्डल, पटना) के पदनाम से जमा करना अनिवार्य होगा, जो कोटेशन प्रकाशन की तिथि के बाद का होना चाहिए। कोटेशन प्रकाशन के पूर्व के निर्गत ओ–ग्रास (O-GRAS) का कम्प्यूटराईज्ड प्राप्ति रसीद पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। कोटेशन मूल्य संवेदक के द्वारा कुल कोटेड राशि के अनुसार होगा, जो निम्न प्रकार है :– रू0 0 से रू0 50,000 तक– रू0 250/–, रू0 50,001 से रू0 2,50,000 तक– रू0 500/–, रू0 2,50,001 से रू0 5,00,000 तक– रू0 750/–, रू0 5,00,001 से रू0 10,00,000 तक– रू0 1,250/–, रू0 10,00,001 से रू0 15,00,000 तक– रू0 2,500/– एवं अग्रधन की राशि– 2% (कोटेड राशि का मूल्य दो प्रतिशत) कोटेशन कागजात के साथ संलग्न किया जाना अनिवार्य होगा।

कार्य का विवरणी :–

Sl No.	Name of Work/Specifiation	Qnt.	Unit	Quoted Rate (in Number and Word)
01	Supply & Maintenance of Audio Video System at Sankalp Building, Lok Samvad & Nek Samvad under 1 Anney Marg, C.M. House, Patna for the year 2024-25.			
02	Supply, Maintenance & Recharge HD Set Top Box in Different Building (C.M. House 1 Anney Marg, C.M. Secretariat), Patna for the year 24-25.			
03	Supply of Duracell Battery in Nek Samwad, Lok Samwad, Sankalp & Samvad Bhawan Under C.M. House 1 Anney Marg, Patna for the year 2024-25.			
04	Supply & Maintenance of Audio Visual Arrangement at Samwad Bhawan under C.M. Secretariat, Patna for the year 2024-25.			
05	Supply & Maintenance of Audio Visual System and Network Surveillance System in Janta Darbar Hall of C.M. Secretariat under 4 KGA, Patna for the year 2024-25.			
06	Supply, Maintenance & Recharge HD Set Top Box in State Guest House & Samvad at 4 KGA, Patna for the year 24-25.			

विशेष सूचना के लिए सूचनापट्ट या वेबसाईट www.state.bihar.gov.in/prdbihar देखें या अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में सम्पर्क करें।

PR. No.005222 (BCD) 2024-25

कार्यपालक अभियंता
केन्द्रीय भवन प्रमंडल, पटना

नशे की मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।

सम्पादकीय

केरल में प्रलय

प्रलय को हमने पढ़ा और सुना है। जिसने प्रलय को देखा और झेला है, वह जिंदा नहीं रहा। 2013 में केदारनाथ धाम में जो सैलाब आया और तबाही हुई अथवा उत्तरकाशी में भूकंप के बाद जो बाढ़ आई, हमने उन्हें ही प्रलय माना। विनाश और बबार्दी का दूसरा नाम प्रलय है। अब केरल के वायनाड जिले में लगातार तीन भू-स्खलन आए और फिर सैलाब आया, गांव के गांव दफन हो गए, 400 से अधिक घर देखते ही देखते ह्यमलबाह्ण हो गए, करीब 200 मौतें हो चुकी हैं और इतने ही लोग लापता बताए जा रहे हैं, यह प्रलय नहीं है, तो और क्या है? यह कुदरती मार नहीं, मानव-निर्मित घटना है, क्योंकि आदमी अपनी ऐयाशी के लिए पहाड़ों को तोड़ रहा है। पहाड़ों की चोटियों पर भी इमारतें बनाई जा रही हैं। केरल में सेना और एनडीआरएफ के जवान हमें ह्यदेवदूतह्ण लगे, जिन्होंने मलबे में से निकाल कर असंख्य जिंदगियां बचाईं। हालांकि केरल की भौगोलिक स्थिति परंपरागत पहाड़ों से भिन्न है, लेकिन देश भर के 80-85 फीसदी भू-स्खलन केरल में ही आते हैं। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के मुताबिक, 2015 से 2022 तक 3782 भू-स्खलन आए। उनमें से करीब 60 फीसदी केरल में ही आए। मौजूदा हालात पर विशेषज्ञों का मानना है कि अरब सागर का तापमान बढे से बेहद घने बादल बने और उसी से केरल में कम समय में बहुत ज्यादा बारिश हुई। वायनाड पहाड़ी जिला है और पश्चिमी घाट का हिस्सा है। यहां 2100 मीटर तक ऊंचे पहाड़ हैं। मानसून में ये पहाड़ भू-स्खलन के लिए बेहद संवेदनशील हैं। जहां यह त्रासद घटना हुई है, वहां दो सप्ताह से बारिश हो रही थी, लिहाजा पहाड़ की मिट्टी गीली और ढीली हो चुकी थी। इसलिए एक ही रात में लगातार 3 भू-स्खलन आए। जमीन खिसक गई। घर हिलने लगे। पहाड़ दरक कर गिरने लगे। सडक और पुल ताश के पत्तों की तरह बिखरने और ढहने लगे। जलवायु-परिवर्तन ने भी बारिश की स्थिति और भू-स्खलन की तीव्रता को बढ़ाया है। एक शोध में कहा गया है कि जो वायनाड साल भर बूंदाबांदी और मानसून की बारिश वाला ठंडा, नम वातावरण वाला इलाका होता था, जलवायु-परिवर्तन के कारण अब सूखा, गर्म, लेकिन मानसून के दौरान भारी, तीव्र बारिश वाला क्षेत्र बन गया है। इस बदलाव से भू-स्खलन का जोखिम बढ़ा है।

2018 के मानसून में भी खूब बारिश हुई थी, तब करीब 400 लोगों की जान चली गई थी। उसके बाद केरल में भू-स्खलन वाला क्षेत्र बढ़ गया है। इस हादसे, संकट या घटना पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने संसद में बयान दिया है कि उन्होंने 23, 24, 25 जुलाई को केरल सरकार को चेतावनी भेजी थी। फिर 26 जुलाई को भू-स्खलन, भारी बारिश की चेतावनी देते हुए आशंका व्यक्त की थी कि कई जानें भी जा सकती हैं। केरल के मुख्यमंत्री विजयन ने ऐसी चेतावनियों से इंकार किया है। उनका कहना है कि रेड अलर्ट तब जारी किया गया, जब सैलाब आ चुका था। बहरहाल ऐसे आरोप-प्रत्यारोप से बचना चाहिए। देश में हर राज्य में, हर क्षेत्र में विकास होना चाहिए, लेकिन ऐसी घटनाओं से सबक भी सीखना चाहिए। विकास-कार्य जापान और ताइवान सरीखे देशों में भी हो रहे हैं। वहां भी पहाड़ काटे जा रहे हैं, लेकिन ऐसे हादसों से बचने के बंदोबस्त भी किए जा रहे हैं। वे दीवार पुश्ता लगाना हो अथवा पेड़-पौधों का रोपण या कुछ और बंदोबस्त करना हो, जापान इसमें अग्रणी रहा है। वहां के पहाड़ों को स्थिर बनाए रखने के लिए विशेष तरह की जालियां तक लगाई गई हैं। देश के उत्तराखंड राज्य में टिहरी बांध में ढलानों की कटाई के बाद बेहतर सुरक्षा उपाय किए गए हैं। ताइवान ने पहाड़ पर दबावमापी यंत्र लगाकर एक भिन्न प्रयोग किया है। इससे यथासमय पता चल जाता है कि पहाड़ पर कितना दबाव है और वह लोगों को पहाड़ के दरकने को लेकर आगाह कर देता है। भारत में हर सरकार और नागरिक विकास

अकेले कोचिंग सेंटर ही ज़िम्मेदार नहीं!

रजनीश कपूर

देश की शिक्षा व्यवस्था में ऐसी क्या कमी है कि विद्यार्थियों को एक्स्ट्रा कोचिंग लेनी पड़ती है? स्कूल और कॉलेज के पाठ्यक्रम को ऐसा क्यों नहीं बनाया जाता कि जिस भी विद्यार्थी को सिविल सेवाओं या अन्य किसी विशेष सेवा में जाना हो तो उसे उसी के कॉलेज में वह शिक्षा मिले? यदि एक्स्ट्रा कोचिंग जरूरी हो तो भी तमाम कोचिंग सेंटर को मौजूदा स्कूल और कॉलेजों में ही क्यों न चलाया जाए?

देश की राजधानी दिल्ली में कोचिंग सेंटर में हुए हादसे ने सभी को हिला दिया है। जिसे देखो वो कोचिंग सेंटर के संचालकों पर उँगली उठा रहा है। जबकि ऐसे हादसों में केवल उनकी गलती नहीं होती। यह बात जग-जाहिर है कि हर एक कोचिंग सेंटर के साथ एक संगठित क्षेत्र जुड़ा होता है। फिर वो चाहे वहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थियों के रहने के लिए हॉस्टल व्यवस्था हो, भोजन व्यवस्था वाले हों, किताब की दुकानें हों या अन्य संबंधित व्यवस्था प्रदान करने वाले हों। परंतु जब भी कभी कोई हादसा होता है तो केवल कोचिंग सेंटर को ही कटघरे में क्यों लाया जाता है? क्या कोचिंग सेंटर चलाने की अनुमति प्रदान करने वाली एजेंसियाँ इसकी ज़िम्मेदार नहीं हैं? दिल्ली के राजेंद्र नगर में हुए राउस आईएएस स्टडी सेंटर के हादसे के बाद से ही देश भर में कोचिंग सेंटर चलाने वाली कई नामी संस्थाएँ सवालों के घेरे में आ गई हैं। इन पर आरोप है कि ये नियम और कानून के अनुसार अपने कोचिंग सेंटर नहीं चलाते। एक-एक कक्षा में क्षमता से ज्यादा विद्यार्थी भर्ती कर लेते हैं। दिल्ली जैसे महानगर में देश के कोने-कोने से आए हुए विद्यार्थियों को छोटे-छोटे पिंजरों में रहने को मजबूर होना पड़ता है। दिल्ली के रिहायशी इलाकों की तंग गलियों में भी क्षमता से अधिक लोग दिखाई देते हैं।

ऐसे में कोचिंग सेंटर और उनसे जुड़े अन्य उद्योग, जैसे कि ह्यपेइंग गेस्टह्ण, हॉस्टल, किताब घर, छोटे-छोटे ढाबे आदि नियम और कानून की परवाह किए बिना अधिक से अधिक विद्यार्थियों की सेवा में लग जाते हैं। यहाँ सवाल उठता है कि क्या ये सब रातों-रात हो जाता है? क्या स्थानीय पुलिस, नगर निगम आदि सोते रहते हैं? क्या इन सभी को कोई टोकता नहीं है? सबसे पहले बात करें पुलिस की। एक पुलिस अधिकारी से बात करने पर पता चला कि जैसे ही कोई अपने रिहायशी मकान में या नगर निगम द्वारा मान्यता प्राप्त दुकान में कुछ भी छेड़-छाड़ करता है, तो पुलिस की ज़िम्मेदारी केवल नगर निगम को इत्तला देने की होती है। इस इत्तला की जानकारी पुलिस को अपने रोजनामचे में भी करनी चाहिए। पुलिस के अनुसार यदि इत्तला देने के बावजूद नगर निगम अधिकारी कोई कार्यवाही नहीं करते तो पुलिस उसी हिसाब से रोजनामचे में एंट्री कर देती है। जब तक कि किसी भी तरह की कानून व्यवस्था की समस्या न हो पुलिस अपनी सीमित ज़िम्मेदारी निभाती है। परंतु क्या ऐसा वास्तव में जमीनी स्तर पर होता है? अब बात करें नगर निगम की। क्या पुलिस द्वारा इत्तला किए जाने पर निगम के अधिकारी उचित कानूनी कार्यवाही करते हैं या देश भर के नगर निगमों में व्याप्त भ्रष्टाचार के मकड़ जाल का हिस्सा बन वे भी अनदेखी कर देते हैं। यदि कभी कार्यवाही करनी भी पड़े तो केवल औपचारिकता निभा कर छोटा-मोटा हथौड़ा चला देते हैं। परंतु वास्तविकता कुछ और ही है। करीब तीस वर्षों से एक निजी कोचिंग सेंटर चालाने वाले मेरे एक मित्र ने मुझे जो बताया वो हतप्रभ करने वाली जानकारी है। उनके अनुसार जब भी और जहां भी एक कोचिंग सेंटर खुलता है वहाँ एक पूरा तंत्र सक्रिय हो जाता है। इस तंत्र का हिस्सा हर वो व्यक्ति होता है जो कोचिंग सेंटर के चलने के हर पहलू का ध्यान रखता है।

भारत जैसे देश में जहां किसी भी क्षेत्र में अगर कोई कामयाब हो जाता है तो उस दिशा में भेड़-चाल शुरू हो जाती है। हमारे देश में विभिन्न एजेंसियों के अधिकारियों पर लापरवाही करने पर कड़ी सजा का प्रावधान क्यों नहीं है, जिससे सबक लेकर अन्य अधिकारी ऐसी गलती न करें? इस हादसे की यदि एक निष्पक्ष जाँच हो तो सभी तथ्य सामने आ जाएँगे। यदि ऐसा होता है तो बरसों से चले आ रहे इस भ्रष्ट तंत्र का हिस्सा बने अधिकारी और नेताओं का भी भंडाफोड़ हो सकता है।

गौरतलब है कि देश की शिक्षा व्यवस्था में ऐसी क्या कमी है कि विद्यार्थियों को एक्स्ट्रा कोचिंग लेनी पड़ती है? स्कूल और कॉलेज के पाठ्यक्रम को ऐसा क्यों नहीं बनाया जाता कि जिस भी विद्यार्थी को सिविल सेवाओं या अन्य किसी विशेष सेवा में जाना हो तो उसे उसी के कॉलेज में वह शिक्षा मिले? यदि एक्स्ट्रा कोचिंग जरूरी हो तो भी तमाम कोचिंग सेंटर को मौजूदा स्कूल और कॉलेजों में ही क्यों न चलाया जाए? यदि ऐसा किया जाए तो कोचिंग सेंटर चलाने वालों को भी एक व्यवस्थित जगह मिल जाएगी और विद्यार्थियों को भी एक खुले वातावरण में पढ़ने का मौका मिलेगा। मौजूदा कोचिंग सेंटर में जहां प्रति कक्षा लगभग 500 विद्यार्थी बैठते हैं उस पर भी रोक लगेगी। अच्छे व काबिल शिक्षकों को भी रोजगार मिलेगा। यदि अतिरिक्त शिक्षक भर्ती न किए जा सकें तो आजकल के सूचना प्रौद्योगिकी के युग में एक नियंत्रित ढंग से उसी बिल्डिंग में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विभिन्न कक्षाओं को एक साथ चलाया जा सकता है।

संसद में जाति पर जारी सियासी जंग के राजनीतिक मायने को ऐसे समझिए

वही जब लोकतांत्रिक या संवैधानिक सभ्यता-संस्कृति में व्यापक विवाद का वाहक बनकर दिन-प्रतिदिन अनुत्पादक प्रतीत होने लगे, तो देश व समाज के प्रबुद्ध लोगों का चिंतित होना स्वाभाविक है। इसलिए आज संसद में जाति के सवाल पर भाजपा नीत एनडीए और कांग्रेस नीत इंडिया ब्लॉक के बीच जो सियासी जंग छिड़ी हुई है, उसके पीछे के राजनीतिक मायने को समझने और आमलोगों को समझाने की जरूरत है। पहला, चूंकि राजनीतिक दलों के लिए जाति अब सामाजिक ध्रुवीकरण का औजार और सियासी गोलबंदी का हथियार बन चुकी है, इसलिए उसे सकारात्मक नजरिए से देखे जाने की जरूरत है, न कि नकारात्मक तरीके से। हां, अब जाति के परिप्रेक्ष्य में वह मुद्दा उठाने की जरूरत है, जिससे राजनीतिक दल और उसके चतुरसुजान नेता अब तक बचते आए हैं। जैसे- साधुओं की जाति, वर्णसंकर लोगों की जाति और अंतरधार्मिक विवाह रचाने वाले लोगों और उनकी संततियों के धर्म का मुद्दा आदि सबसे अहम है। दूसरा, जातीय या धार्मिक आरक्षण को भी सकारात्मक दृष्टिकोण से देखे जाने की दरकार है, न कि नकारात्मक तौर पर। क्योंकि गुलाम भारत से लेकर आजाद भारत में जाति और धर्म को लेकर जितने भी कानून बनाए गए, वो सब अंतर्विरोधाभाषों से भरे पड़े हैं। जिसकी वजह से उनमें स्पष्टता का अभाव तो है ही, लोकतंत्र की मूल भावना स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व भी नदारत है। इस स्थिति के लिए हमारे राजनेता और नौकरशाह दोनों ही जिम्मेदार हैं। लेकिन इस स्थिति को बदलने का साहस किसी भी राजनीतिक दल में नहीं दिखा, जिससे राष्ट्रीय हित और पेशेवर गुणवत्ता गहरे तक प्रभावित होती आई है जिससे वैश्विक मुकाबले में भारत पिछड़ता चला आया।

कमलेश पांडेय
वरिष्ठ पत्रकार व स्तम्भकार

जातीय या धार्मिक आरक्षण को भी सकारात्मक दृष्टिकोण से देखे जाने की दरकार है, न कि नकारात्मक तौर पर। क्योंकि गुलाम भारत से लेकर आजाद भारत में जाति और धर्म को लेकर जितने भी कानून बनाए गए, वो सब अंतर्विरोधाभाषों से भरे पड़े हैं। वैदिक या सनातन सभ्यता-संस्कृति में जो जाति कार्यकुशल जनसमूह की कार्यदक्षता की निशानी समझी जाती थी और राष्ट्रीय उत्पादकता में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती आई थी, वही जब लोकतांत्रिक या संवैधानिक सभ्यता-संस्कृति में व्यापक विवाद का वाहक बनकर दिन-प्रतिदिन अनुत्पादक प्रतीत होने लगे, तो देश व समाज के प्रबुद्ध लोगों का चिंतित होना स्वाभाविक है। इसलिए आज संसद में जाति के सवाल पर भाजपा नीत एनडीए और कांग्रेस नीत इंडिया ब्लॉक के बीच जो सियासी जंग छिड़ी हुई है, उसके पीछे के राजनीतिक मायने को समझने और आमलोगों को समझाने की जरूरत है। पहला, चूंकि राजनीतिक दलों के लिए जाति अब सामाजिक ध्रुवीकरण का औजार और सियासी गोलबंदी का हथियार बन चुकी है, इसलिए उसे सकारात्मक नजरिए से देखे जाने की जरूरत है, न कि नकारात्मक तरीके से। हां, अब जाति के परिप्रेक्ष्य में वह मुद्दा उठाने की जरूरत है, जिससे राजनीतिक दल और उसके चतुरसुजान नेता अब तक बचते आए हैं। जैसे- साधुओं की जाति, वर्णसंकर लोगों की जाति और अंतरधार्मिक विवाह रचाने वाले लोगों और उनकी संततियों के धर्म का मुद्दा आदि सबसे अहम है। दूसरा, जातीय या धार्मिक आरक्षण को भी सकारात्मक दृष्टिकोण से देखे जाने की दरकार है, न कि नकारात्मक तौर पर। क्योंकि गुलाम भारत से लेकर आजाद भारत में जाति और धर्म को लेकर जितने भी कानून बनाए गए, वो सब अंतर्विरोधाभाषों से भरे पड़े हैं। जिसकी वजह से उनमें स्पष्टता का अभाव तो है ही, लोकतंत्र की मूल भावना स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व भी नदारत है। इस स्थिति के लिए हमारे राजनेता और नौकरशाह दोनों ही जिम्मेदार हैं। लेकिन इस स्थिति को बदलने का साहस किसी भी राजनीतिक दल में नहीं दिखा, जिससे राष्ट्रीय हित और पेशेवर गुणवत्ता गहरे तक प्रभावित होती आई है जिससे वैश्विक मुकाबले में भारत पिछड़ता चला आया। तीसरा, जाति और धर्म के आधार पर बने कानूनों में व्याप्त विसंगतियों और इससे प्रभावित हो रहे सामान्य जनजीवन के खिलाफ स्वतः संज्ञान न लेकर न्यायविदों ने भी ह्यकालीदासी विद्वत्ताह्ण का ही परिचय दिया है। जिस देश में वह लोकतांत्रिक न्याय दे रहे हैं, वहीं पर जब कानूनी व न्यायिक प्रावधान व्यक्ति विशेष की स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व की पारस्परिक भावना को मुंह चिढ़ाने लगें, तो समझा जा सकता है कि मत समानता रहने के बावजूद पीड़ित व प्रभावित व्यक्ति कितना असहाय महसूस कर रहा होगा। खास बात यह कि इस देश में जाति और जातीय आरक्षण की जो अवधारणा तय की गई है, सवर्ण-पिछड़ा-दलित-आदिवासी और उनकी गरीबी के अलावा अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक के जो मानदंड तय किये गए हैं, वो तार्किक कम, प्रतिशोधी ज्यादा प्रतीत होते हैं। लेकिन क्या मजाल कि कोई इन्हें गलत ठहरा दे या उनमें संशोधन की बात करे। इससे तो यही लगता है कि संविधान निमार्ताओं से लेकर संविधान के कथित संरक्षकों और संसद में पिछले लगभग 8 दशक से बैठ रहे अधिकांश माननीयों ने जनतांत्रिक कुएं में पड़ी भांग पी ली है, जिन्हें तर्क और तथ्य से कोई वास्ता नहीं, बस पददलित जनमानस पर निरंतर बिहंसते जा रहे हैं

चतुर्थ, कुछ यही हाल राष्ट्र में जनमत निर्धारण करने में अमूल्य सहयोग देने वाली समग्र मीडिया इकाइयों और उसके अदूरदर्शी सम्पादकों का भी है, जिन्होंने वस्तुनिष्ठ पत्रकारिता की बजाय पक्षधरता भरी रिपोर्टिंग की और नीर-क्षीर विवेक वाक विद्या को सियासतदानों के मन के मुताबिक जैसे तैसे परिभाषित किया। इससे जहां जनता गफलत में रही, वहीं संवैधानिक सिपहसालार मजे में! परन्तु कोढ़ में खाज यह कि जाति/सम्प्रदाय जैसे जनहित के मुद्दे जहां के तहां मील के पत्थर की तरह यथावत बने रहे। इसलिए हमारे राजनेता अपने मन के मुताबिक इनकी तरह तरह की व्याख्या करने में सफल हो जाते हैं, जिससे राष्ट्रहित प्रभावित होता है।

पांचवां, फिलवक्त भारतीय संसद के निम्न सदन लोकसभा में कांग्रेस सांसद और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए भाजपा सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने जातीय जनगणना के मुद्दे पर जो कुछ भी कहा, वह यदि सही नहीं है तो ज्यादा गलत भी नहीं है! लिहाजा, इस मुद्दे पर आधुनिक सोच विकसित करनी चाहिए। साथ ही कतिपय संवैधानिक/कानूनी कमियों को दूर किया जाना चाहिए, ताकि कभी भारतीय समाज को माला की तरह जोड़ने वाली जाति प्रथा आरक्षण उत्प्रेरित सामाजिक टूट की वजह न बन जाये। जैसा कि महसूस किया जा रहा है इसलिए आरक्षण के आधार को जाति-धर्म-भाषा नहीं बल्कि आर्थिक आधार का किया जाना चाहिए, इसे रोटेशनल बनाकर सबको लाभान्वित किया जाना चाहिए, जो न्यायिक तर्क/वितर्क के मद्देनजर आसान नहीं लगता है। छठा, उल्लेखनीय कि 30 जुलाई 2024 मंगलवार को अनुराग ठाकुर ने राहुल गांधी पर तंज कसते हुए कहा कि, जिन्हें अपनी जाति के बारे में भी नहीं पता है वो जाति जनगणना की बात करते हैं। यह बात एक हद तक सही भी प्रतीत हो रही है! इसलिए ऐसे लोगों की जाति व धर्म के लिए भारत में स्पष्ट कानूनी प्रावधान तय किए जाने की जरूरत है, जो तर्क और तथ्य की कसौटी पर खरा हो। क्योंकि वैदिक जाति या धर्म की अवधारणा पूरी तरह से वैज्ञानिक है, जिसकी उपेक्षा संवैधानिक भारत में होना आम बात बन चुकी है। सातवां, राहुल गांधी पर सदन में हमला बोलते हुए अनुराग ठाकुर ने इसके पहले ये भी कहा था कि असत्य के पैर नहीं होते हैं, जिसके चलते ये कांग्रेस के कंधे पर सवारी करता है। जैसे मदारी के कंधे पर बंदर सवारी करता है, वैसे ही राहुल गांधी के कंधे पर असत्य का बंडल होता है। तभी तो अनुराग ठाकुर की इन टिप्पणियों पर सदन में हंगामा बढ़ गया। इसलिए सीधा सवाल है कि अनुराग ठाकुर के इस बयान के बाद सदन में जो जमकर हंगामा शुरू हो गया और कांग्रेस के सांसद वेल में आकर प्रदर्शन करने लगे, वह कितना जायज है? क्या इसे टाला नहीं जा सकता है। यदि जनप्रतिनिधिगण हंगामा करने के बजाय तत्सम्बन्धी कानून बनाने की मांग करें तो ऐसे विरोधाभासों को टाला जा सकता है। आठवां, संयुक्त विपक्ष हंगामा करने के बजाय उन लोगों की एक अलग जातीय कोटि व धार्मिक कोटि बनाने की मांग करे, जिनके माता-पिता भिन्न-भिन्न जातियों या सम्प्रदायों से है, क्योंकि उनकी संतान वर्णसंकर हुई। चूंकि भारतीय समाज पितृसत्तात्मक समाज है, इसलिए यहां पिता की जाति या धर्म को स्वीकार करने की परम्परा प्रचलित है, जो तर्क और तथ्य की कसौटी पर पूरी तरह से गलत है। क्योंकि इससे सम्बन्धित जाति/धर्म का मूलगुण दूषित/भ्रमित होता है।

तो अब अदालत को भी पलटने का हक

कुछ लोग और राजनीतिक दल इस फैसले से खुश हैं तो कुछ नाखुश, क्योंकि अदालत ने अपने डेढ़ दशक पुराने फैसले को पलटते हुए कोटे के भीतर आरक्षण कोटा तय करने का अधिकार राज्यों को दे दिया है, शीर्ष अदालत का फैसला जहां आरक्षण विरोधी संघ, भाजपा और कुछ अन्य दलों के एजेंडों पर कुठाराघात है वहीं कुछ दलों के लिए राजनीति चमकने का अवसर भी। हमारे देश में जैसे जाति एक हकीकत है वैसे ही आरक्षण भी एक हकीकत है। आजादी के बाद से ही ये देश आरक्षण और जातियों के बीच झूल रहा है या कहिये पिस रहा है। कुछ लोग और दल चाहते हैं कि अब देश में जाति और और जातिगत आरक्षण हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जाये क्योंकि ये दोनों ही बराबरी और विकास के सबसे बड़े दुश्मन है। जबकि कुछ लोग चाहते हैं कि जब तक समाज में आर्थिक बराबरी न आ जाये तब तक जाती का तो पता नहीं किन्तु आरक्षण को बनाये रखना चाहिए। जाती को लेकर हमारे समाज की मान्यताएं भी भिन्न है। कोई कहता है कि जाति न पूछो साधू की, पूछ लीजिये ज्ञान, तो कोई कहता है जाति-पांत पूछे नहीं कोय, हरि को भजे सो हरि को होय। इसके बाद भी हमारी संसद में आज भी जाति पूछी जातीं है और निर्ममता से पूछी जाती है। बात एकदम ताजा है। शीर्ष अदालत (सुप्रीम कोर्ट) ने 2004 के ईवी चिन्नैया केस में दिए गए अपने ही फैसले को पलटते हुए कहा कि राज्यों को अजा-अजजा कैटिगरी में सब-क्लासिफिकेशन का अधिकार है। साथ ही कोर्ट ने कहा कि इसके लिए राज्य को डेटा से यह दिखाना होगा कि उस वर्ग का अपर्याप्त प्रतिनिधित्व है। जस्टिस बी. आर. गवई समेत चार जजों ने यह भी कहा कि अजा-अजजा कैटिगरी में भी क्रीमीलेयर का सिद्धांत लागू होना चाहिए।

राकेश अचल
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

आरक्षण के मामले में शीर्ष न्यायालय के फैसले को लेकर नाना-प्रकार की प्रतिक्रियाएं आ रहीं है। कुछ लोग और राजनीतिक दल इस फैसले से खुश हैं तो कुछ नाखुश, क्योंकि अदालत ने अपने डेढ़ दशक पुराने फैसले को पलटते हुए कोटे के भीतर आरक्षण कोटा तय करने का अधिकार राज्यों को दे दिया है, शीर्ष अदालत का फैसला जहां आरक्षण विरोधी संघ, भाजपा और कुछ अन्य दलों के एजेंडों पर कुठाराघात है वहीं कुछ दलों के लिए राजनीति चमकने का अवसर भी।

हमारे देश में जैसे जाति एक हकीकत है वैसे ही आरक्षण भी एक हकीकत है। आजादी के बाद से ही ये देश आरक्षण और जातियों के बीच झूल रहा है या कहिये पिस रहा है। कुछ लोग और दल चाहते हैं कि अब देश में जाति और और जातिगत आरक्षण हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जाये क्योंकि ये दोनों ही बराबरी और विकास के सबसे बड़े दुश्मन है। जबकि कुछ लोग चाहते हैं कि जब तक समाज में आर्थिक बराबरी न आ जाये तब तक जाती का तो पता नहीं किन्तु आरक्षण को बनाये रखना चाहिए। जाती को लेकर हमारे समाज की मान्यताएं भी भिन्न है। कोई कहता है कि जाति न पूछो साधू की, पूछ लीजिये ज्ञान, तो कोई कहता है जाति-पांत पूछे नहीं कोय, हरि को भजे सो हरि को होय। इसके बाद भी हमारी संसद में आज भी जाति पूछी जातीं है और निर्ममता से पूछी जाती है।

बात एकदम ताजा है। शीर्ष अदालत (सुप्रीम कोर्ट) ने 2004 के ईवी चिन्नैया केस में दिए गए अपने ही फैसले को पलटते हुए कहा कि राज्यों को अजा-अजजा कैटिगरी में सब-क्लासिफिकेशन का अधिकार है। साथ ही कोर्ट ने कहा कि इसके लिए राज्य को डेटा से यह दिखाना होगा कि उस वर्ग का अपर्याप्त प्रतिनिधित्व है। जस्टिस बी. आर. गवई समेत चार जजों ने यह भी कहा कि अजा-अजजा कैटिगरी में भी क्रीमीलेयर का सिद्धांत लागू होना चाहिए। मौजूदा समय में क्रीमीलेयर का सिद्धांत सिर्फ ओबीसी में लागू है। सात जजों की बेंच ने 6-1 के बहुमत से फैसला सुनाया। जस्टिस बेला एम. त्रिवेदी का फैसला अलग था।

अब सवाल ये है कि क्या नेताओं की तरह अदालतें भी अपने फैसले समयानुसार बदल सकतीं हैं? मेरे हिसाब से बिलकुल बदल सकतीं हैं, क्योंकि फैसले व्यक्ति करते हैं, मशीनें नहीं। यदि शीर्ष अदालतों में फैसले मशीनें करतीं तो मुमकिन है कि वे अपने ही फैसले न बदलतीं लेकिन जब व्यक्ति फैसले करते हैं तो उन्हें फैसले बदलने का हक है। क्योंकि कोई भी फैसला समीक्षा के योग्य होता है और सौ फीसदी सही नहीं होता। उसमें संशोधन की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है। अर्थात फैसले बदलने का हक केवल इस देश के नेताओं को ही नहीं अपितु अदालतों को भी है। वे जनमानस के मनोभावों के अनुरूप चलतीं है। कानून और साक्ष्य तथा तर्क-वितर्क अदालतों को फैसला करने में सहायक होते हैं।

याद कीजिये कि यही मामला जब पहले शीर्ष अदालत में आया था तब सुप्रीम कोर्ट सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि राज्यों को सब-क्लासिफिकेशन करने की इजाजत नहीं है। लेकिन अब उसी सुप्रीम कोर्ट के छह जजों ने इस फैसले को पलट दिया। हालांकि, जस्टिस बेला त्रिवेदी ने छह जजों से असहमति जताई। चीफ जस्टिस की अगुआई वाली सात जजों की बेंच ने कहा है कि अनुसूचित जाती के सब-क्लासिफिकेशन से संविधान के अनुच्छेद-14 के तहत समानता के अधिकार का उल्लंघन नहीं होता है। साथ ही कहा कि इससे अनुच्छेद-341 (2) का भी उल्लंघन नहीं होता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि अनुच्छेद-15 और 16 में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जो राज्यों को रिजर्वेशन के लिए जाति में सब-क्लासिफिकेशन से रोकता है।

सुप्रीम कोर्ट यानि शीर्ष अदालत शीर्ष ही होती है। वो बहुत सोच-विचार के बाद बहुमत से फैसले करती है। सुप्रीम कोर्ट में बहुमत चलता है, ध्वनिमत नहीं। सबको अपने फैसले करने का अधिकार है। सहमति के साथ ही असहमति का भी सम्मान किया जाता है। भले ही असहमति को सहमति के आगे नतमस्तक होना पड़ता है। फैसले करने का ये लोकतंत्र यदि हमारी संसद में भी हो तो न कोई किसी की जाति पूछे और न कोई किसी पर आखें तरेरे। लोकतन्त्र बहुमत से चलता है तानाशाही से नहीं।

शीर्ष अदालत ने अपना ही फैसला बदलने में पूरे बीस साल का समय लिया। इसलिए आप ये नहीं कह सकते कि ये फैसला जल्दबाजी का फैसला है। फैसला आखिर फैसला है। इसे अब केवल देश की संसद नया कानून बनाकर बदल सकती है। और अतीत में सरकारें अदालतों के फैसलों के खिलाफ नए कानून बनाती रहीं हैं। इसीलिए अदालतों के फैसलों का कभी स्वागत किया जाता है तो कभी विरोध। इस फैसले का भी कुछ लोग विरोध कर रहे हैं और उनके अपने तर्क भी है। संविधान निमार्ता डॉ भीमराव अम्बेडकर के पौत्र प्रकाश अम्बेडकर को शीर्ष अदालत का ये फैसला अच्छा नहीं लगा। वे कहते हैं कि अदालतों को अजा-अजजा के वर्गीकरण का अधिकार नहीं है। ये काम संसद ही कर सकती है।

डॉ भीमराव अम्बेडकर के पौत्र प्रकाश वंचित अघाड़ी पार्टी चलाते हैं। लेकिन वे आरक्षण विषेशज्ञ भी हैं, ऐसा मै नहीं मानता। बाबा साहब के पौत्र होने का अर्थ प्रकाश का भी संविधान विशेषज्ञ होना नहीं है। वे राजनीतिक दृष्टि से सोचते है। जिस दिन उनका बहुमत संसद में हो जाएगा, वे शीर्ष अदालत का फैसला बदलने या बदलवाने के लिए स्वतंत्र होंगे। फिलहाल तो शीर्ष अदालत के इस फैसले से कहीं खुशी, कहीं गम का माहौल है। ऐसा होता है। जैसे श्रीकृष्ण जन्मभूमि के विवाद में आये इलाहबाद हाईकोर्ट के फैसले के बाद भी हुआ है।

आरक्षण के मुद्दे पर राजनीतिक दल हों या दलों को राजनीति सीखने वाले संघ, अपनी सुविधानुसार रंग बदलते आये हैं। जो आरएसएस कभी आरक्षण का प्रबल विरोध करता है वो ही संघ आरक्षण का समर्थन करने लगता है। यही हाल सत्तारूढ़ भाजपा और अन्य दलों का है। इसलिए कम से कम मै तो शीर्ष अदालत के फैसले से मुतमईन हूँ। मै जानता हूँ की शीर्ष अदालत के इस ताजा फैसले के बाद भी राजनितिक दल और नौकरशाही बीच का कोई रास्ता निकल कर अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश जरूर करेंगे। ये उनका काम है। अदालत ने अपना काम किया है। आरक्षण की मलाई और छाछ को लेकर ये द्वन्द भी उतना ही सनातन हो चुका है जितनी सनातन हमारी आरक्षण विरोधी और

पक्ष-विपक्ष को टकराव की राजनीति से दूर रहना चाहिए

डा. भरत मिश्र प्राची

वर्तमान में संसद में सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के बीच अनर्गल, बेलगाम बोल के कारण दिन पर दिन अपसी टकराव की स्थिति बढ़ती जा रही है जो लोकतंत्र के हित में कदापि नहीं। सत्ता पक्ष एवं विपक्ष दोनों को जनता ने जनमत आपस में टकराकर संसद काल का स्वर्णिम अवसर गवाने के लिये नहीं दिया बल्कि सकरात्मक बहस कर देशहित में सही कदम उठाने के लिये दिया है। सत्तापक्ष यदि मनमानी करता है, जनहित में उचित कदम नहीं उठाता है तो विपक्ष को विरोध करने का पूरा पावर जनता ने दे रखा है। विपक्ष की मांग पर पहल करना सत्तापक्ष का नैतिक दायित्व है। पर आजकल दोनों का नजरिया ही बदल गया है। जिसके वजह से आपसी टकराव की स्थिति दिन पर दिन बढ़ती जा रही है जिसें जनता के द्वारा चुने गये जनप्रतिधि सांसद के बेलगाम बोल आग में घी का काम कर रहे है।

अभी हाल हीं में संसद में चल रही चर्चा के दौरान विपक्ष नेता राहुल गांधी द्वारा जातीय जनगणना कराये जाने के मुद्दे पर सत्ता पक्ष के केन्द्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर का किसी की भावना को ठेस पहुंचाने वाला बयान कि जातीय जनगणना की बात करने वाले को अपनी जाति का ही पता नहीं, आपसी टकराव का कारण बन गया है। इस मुद्दे पर देश भर में विरोध की लहर उठ खड़ी हुई है जो देशहित में कदापि नहीं। इस तरह के अनर्गल बयान से जो किसी की भावना को ठेस पहुंचाये, सम्मानीय जनप्रतिनिधि सांसद को बचना चाहिए।

जनता ने इस बार सत्ता पक्ष का जनमत का आकड़ा पहले से कम कर दिया है तथा विपक्ष को पहले से ज्यादा जनमत देकर मजबूत विपक्ष बनने का सुअवसर दिया है, इस बात को विपक्ष को नजरअदांज नहीं करना चाहिए। सत्ता पक्ष को मालूम है कि आज सत्ता वैसाखी पर टिकी है जो कभ भी धराशायी हो सकती है, उसके सामने एक तगड़ा विपक्ष सीना ताने खड़ा है। इस तरह के हालात में लोकतंत्र तभी सही रह सकता जब सांसद अपनी मयार्दा में रहें, अनर्गल बोल से बचे,

पक्ष-विपक्ष टकराव की राजनीति से दूर रहें, सत्ता पक्ष के सही कदम पर विपक्ष समर्थन देकर सकरात्मक विपक्ष की भूमिका निभाए, सत्ता पक्ष भी विपक्ष की बातें सुने, विचार करें एवं उसपर अमल करे तभी जनादेश का सही आदर हो सकेगा, लोकतंत्र सही चल सकेगा। सत्ता तो आज इधर है तो कल उधर, इस यर्थात को सभी को समझना होगा। देश एवं जनहित में जरूरी है कि पक्ष विपक्ष आपसी टकराव की राजनीति से दूर रहें।

संक्षिप्त खबरें

पेंड़ गिरने से सड़क जाम, हुई परेशानी

लहलादपुरः प्रखंड क्षेत्र के ताजपुर में सहाजितपुर-ताजपुर मुख्य सड़क पर पकड़ी का विशाल पेंड़ गिर जाने से बृहस्पतिवार की संध्या से ही सड़क जाम हो गयी है. ग्रामीणों के अनुसार बृहस्पतिवार की संध्या तेज हवा के झोंका से पकड़ी का विशाल पेंड़ सड़क के बीचो-बीच गिर गया. गनीमत यह था कि हवा के साथ वर्षा भी था, इसलिए लोगों का आवागमन नहीं था, अन्यथा एक गंभीर घटना घट सकती थी. फिर भी सावन का तेरस (त्रयोदशी) होने के कारण श्रीढोंधनाथ मदिर जाने वाले शिवभक्तों) को रास्ता बदल कर जाने में भारी परेशानी उठानी पड़ी. हालांकी पप्पु खां, शाहिद राजा खां जैसे अन्य कई समाजासेवियों के सहयोग से सड़क से पेंड़ हटाने का प्रयास किया जा रहा है. बताते चलें कि गंडकी नदी पर बने दो-दो पुल धारासायी हो जाने से इसबार सावन महीने में श्रोढोंढ़नाथ मंदिर में उत्तर दिशा से आने वाले शिव भक्तों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा. समाचार प्रेषण तक सड़क चालु नहीं हुआ था

सावन के तेरस को हजारों ने किया शिव का जलाभिषेक

लहलादपुरः प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत स्थित श्रीढोंढ़नाथ मंदिर में सावन के तेरस के सुअवसर पर शुक्रवार को हजारों शिवभक्तों ने भगवान शिव का जलाभिषेक किया. भारी भीड़ को देखते हुए प्रशासन की ओर से पूरकस व्यवस्था की गयी थी.सभी शिवभक्तों ने सेमरिया के नाथ जी घाट से सरयू नदी का पवित्र गंगाजल कांवर में भर कर श्रीढोंढ़नाथ मंदिर आये और ढोंढ़नाथ बाबा का जलाभिषेक किये. काँवरियों को आराम करते हुए ढोंढ़स्थान पहुँचने के लिये रास्ते में कोपा, पियानो, बनवार, कोहड़ा बाजार, नसीरा, कटेंया, फुचुटी, सेंदुआर, दयालपुर सहित दर्जनों जगहों पर कांवर स्टैंड ग्रामीण श्रद्धालुओं ने बनवाया है. सभी कैंवरिया रुकते-ठहरते मंदिर पहुंच रहे हैं. इसलिये समाचार प्रेषण तक शिवभक्तों के आने का तांता बना हुआ था

एसएसबी ने तस्करी के 6 बैल किया पुलिस के हवाले

बगहा। इंडो नेपाल सीमा रहुआ टोला कैम्प के एसएसबी जवानों ने नेपाल से तस्करी कर लाए जा रहे 6 बैलों को पकड़ वाल्मीकिनगर पुलिस के हवाले कर दिया है। एसएसबी के सहायक उप निरीक्षक जसवंत सिंह ने थाना में प्रेसित सुपुर्द आवेदन के माध्यम से बताया कि रहुआ टोला जंगल की तरफ से जहाँ रात्रि गश्ती कर रहा था। करीब 4 बजे विवादित सुस्ता के तरफ से कुछ तस्करों के द्वारा लाए जा रहे बैलों को देखा।लेकिन नाका गश्ती टीम को देखते ही तस्कर घने जंगल और अंधेरे का फायदा उठाते हुए भाग निकलने में कामयाब रहे। जब आसपास देखा तो कोई भी नजर नहीं आया। बैलों की संख्या 6 थी जिसमे काले रंग का 2,सफेद रंग का 3 और भूरे रंग का एक कुल 6 बैलों को बरामद किया,जिसे वाल्मीकिनगर पुलिस के हवाले कर दिया।

नदी घाटी योजना हाई स्कूल के लाइब्रेरी से तक्षक नाग सांप का रेस्क्यू

बगहा। वाल्मीकिनगर स्थित एक मात्र हाई स्कूल नदी घाटी योजना उच्च विद्यालय के लाइब्रेरी से एक तक्षक नाग सांप का वन कर्मियों की रेस्क्यू टीम ने रेस्क्यू कर पकड़ लिया जिसे वीटीआर जंगल मे सुरक्षित छोड़ दिया। बतादें की तक्षक नाग सांप को लाइब्रेरी की दीवार पर रेंगते देख किसीने शोसल मीडिया साइट पर वीडियो वायरल कर रेस्क्यू टीम भेजने की गुहार लगाई।तत्काल रेस्क्यू टीम हाई स्कूल पहुंचकर तक्षक सांप का रेस्क्यू कर लिया। न्यूज़ संस्था के प्रोजेक्ट मैनेजर अभिषेक की माने तो यह सांप एक स्थान से दूसरे जगह तक हवा में तैरते हुए पहुंचे की कला में माहिर होते है। ये ज्यादा जहरीला नहीं होता है इसके काटने से आदमी के पेट मे दर्द,उल्टी व चक्कर आने लगता है कुछ देर के लिए पीड़ित व्यक्ति बेहोश हो जाता है मगर उसकी मृत्यु नहीं होती है।

जलालपुर में लागातार 15 घंटे से बिजली बाधित, उपभोक्ता परेशान

कोपा। जलालपुर प्रखण्ड के दो दर्जनों से अधिक गाँव मे लागातार 15 घंटा से बिजली बाधित रहने के कारण आम जन जीवन अस्त ब्यस्त हो गया।तो दूसरी तरफ शुद्ध पेय जल की समस्या उत्पन्न होने लगी चतरा पावरसब स्टेशन अंतर्गत अनवल,बेलकुंडा,चतरा, जलालपुर, आईटीबीपी, फिडर बंद होने के कारण ब्रहस्पति को दोपहर से ही दो दर्जनों से अधिक गाँव मे लागातार 15 घंटा बिजली गुल रहा वही पदाधिकारी के नाकारात्मक रवैया को लेकर लोगों में काफी आक्रोश देखने को मिला जहां हल्की बारिश के कारण 15 घंटा 20 घंटा बिजली बाधित हो रहा है। लाइन ब्रेक डाउन हो जाता है।चतरा पावरसब स्टेशन अंतर्गत दर्जनों लाइन मैन की मौजुदगी रहने के बाद भी 20,घंटा 24,घटा लागातार बिजली बाधित रहना विभाग पर सवलिया निशान खड़ा हो रहा है।लागातार बिजली बाधित रहने से बच्चों के पढ़ाई लिखाई ग्रमीणों उमेश प्रसाद,कमखया नरायन यादव,मनोज यादव, बागेस्त्री तिवारी,निरशुनरायन प्रसाद,कुन्दन कुमार सराफ ने बताया कि बिजली बाधित के सम्बंध में जलालपुर जेई चन्दन कुमार के दर्जनों बार फोन किया गया लेकिन जेई फोन नही उठाते है।

भारतीय रसायन विज्ञान के जनक आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे की 163वीं जयन्ती मनी

महाविद्यालय परिवार से जुड़े सदस्यों ने उनके योगदान की चर्चा की

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। भारतीय रसायन विज्ञान के जनक आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे की 163 वीं जयंती नंदलाल सिंह महाविद्यालय जैतपुर- दाउदपुर सारण के रसायन विज्ञान विभाग के सभागार में प्राचार्य प्रोफेसर के पी श्रीवास्तव की अध्यक्षता में मनाई गई । जयंती पर याद करने वाले विद्वान प्राध्यापकों में प्रोफेसर डॉ के पी श्रीवास्तव (प्राचार्य) ,प्रोफेसर डॉ आफताब आलम डॉ उपेंद्र कुमार डॉ स्वर्गदीप शर्मा, डॉ आशीष कुमार ,डॉ शेखर कुमार, डॉ अमृत प्रजापति, डॉ चंद्रभान राम, डॉ प्रवीण पंकज ,डॉ संजय कुमार, डॉ आशीष प्रताप सिंह, डॉ मनोज कुमार ,डॉ राकेश रंजन ,डॉ रमेश कुमार, डॉ इंदु कुमारी ,डॉ रूबी चन्द्रा आदि कर्मचारी गण उपस्थित थे । उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए प्रोफेसर डॉ के पी श्रीवास्तव ने कहा कि आचार्य प्रफूल्ल चन्द्र रे ने 22 वर्ष की अवस्था में विदेश से डिग्री प्राप्त कर 28 वर्ष की आयु में उन्होंने कलकत्ता के प्रेन्सीडेन्सी कालेज में रसायन विज्ञान के (सहायक प्राध्यापक)नियुक्त किये गए।उन्होंने 10 पुस्तकों का संपादन किया एवं 150 रिसर्च पेपर भी लिखा था। उन्होंने मरक्यूरस नाइट्राइट और कई अकार्बनिक यौगिकों पर शोध कार्य किया था।1920 में वे भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष रूप में मनोनीत किए गए । इंडियन केमिकल सोसायटी की स्थापना उन्होंने की । डॉ संजय कुमार, रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष ने कहा कि अभाव में रहकर भी उन्होंने जो कीर्तिमान रसायन विज्ञान में स्थापित किया उसका हम सभी ऋणी रहेंगे। उन्होंने बंगाल फार्मास्यूटिकल कंपनी की स्थापना की जो कि भारत की भी पहले फार्मास्यूटिकल कंपनी थी । डॉ प्रवीण पंकज ने कहा कि इतिहास गवाह है कि हमारी परंपरा गौरवशाली रही है इसके प्रत्यक्ष प्रमाण आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे हैं । जिन्हें भारतीय रसायन का पिता कहा जाता है। डॉ आशीष प्रताप सिंह ने कहा कि हमें आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे के जीवन से सीख लेनी चाहिए जो आने वाली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक साबित होगी। डॉ चन्द्रभान राम ने कहा कि भारतीय रसायन विज्ञान के जनक के रूप में हम आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे को जानते हैं। जिन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में अपना बहुत बड़ा योगदान दिया। डॉ रुबी चंद्रा ने कहा कि प्रफुल्ल चंद्र रे साधारण परिवार में जन्म लेकर विज्ञान के क्षेत्र में जो उपलब्धि हासिल की उसे हम सभी जीवन में उतारे। हमें लोटस लाइफ को अपने जीवन में संधारण करना चाहिए। डॉ स्वर्ग दीप शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

इसुआपुर में इलाज कराने आई महिला की हुई मौत, परिजनों ने काटा बवाल

प्रात: किरण, संवाददाता

इसुआपुर । इसुआपुर बाजार स्थित एक निजी अस्पताल में गुरुवार की देर संध्या प्रसव के दौरान एक महिला की मौत हो गई। इसके बाद परिजनों ने डॉक्टर श्रीमती मंजू वर्मा का नेम प्लेट लगे अस्पताल के सामने जमकर बवाल काटा। बताया जा रहा है कि मशरक थाना क्षेत्र के पचखंडा गांव के राजन शर्मा की 20 वर्षीया पत्नी रूपा देवी रुटीन चेकअप कराने के लिए इसुआपुर के एक निजी अस्पताल में आई थी। वह 8 महीने की प्रेग्नेंट थी। जहां नीम हकीम डॉक्टरों के द्वारा उसका प्रसव कराया जाने लगा। इसी बीच उस महिला की मौत हो गई। जिसके बाद आनन-फानन में मृतका के शव को उसके घर पहुंचा दिया गया। वहीं ऑपरेशन से जीवित निकली बच्ची को मशरक के किसी अस्पताल में रखे जाने की बात बताई जा रही है। लोगों का कहना था कि इसुआपुर में दर्जनों नर्सिंग होम नीम हकीम डॉक्टरों के द्वारा संचालित किया जाता है। जहां सर्जरी की अच्छी व्यवस्था नहीं होने के चलते आए दिन मरीजों की जान से खिलवाड़ किया जाता है। जिसके जिम्मेवार निजी नर्सिंग होम के संचालक हैं। जो बड़े-बड़े डॉक्टरों का नेम प्लेट लगाकर सुदुर देहात से आए गरीबों को निशाना बनाकर दलालों के माध्यम से मोटी रकम की कमाई करते हैं। इस तरह के नर्सिंग होम का रजिस्ट्रेशन भी नहीं है। लोगों का यह भी आरोप था कि जानकारी देने के बावजूद भी इसुआपुर पुलिस घटनास्थल पर नहीं पहुंची। परिजन देर रात तक हंगामा करते रहे। सीएचसी प्रभारी डॉक्टर तूलिका कुमारी ने बताया कि इस घटना की जानकारी मुझे हो गई है। जल्द ही कमिटी के द्वारा इसकी जांच कराई जाएगी।

पिकअप और ट्रक में हुई टक्कर पिकअप चालक का हाथ कटा, रेफर

प्रात: किरण, संवाददाता

इसुआपुर । सीमावर्ती बनियापुर थाना क्षेत्र के भकुरा कोल्ड स्टोरेज के पास गुरुवार की देर संध्या एक मालवाहक पिकअप भान तथा ट्रक की आमने-सामने टक्कर हो गई। जिसमें पिकअप भान के चालक इसुआपुर थाना क्षेत्र के इसुआपुर गांव के देव कुमार सिंह कुशवाहा के पुत्र ऋषि कुमार सिंह कुशवाहा बुरी तरह जख्मी हो गए। उनका एक हाथ कट कर अलग हो गया है। घटना की सूचना मिलते ही सीएचसी इसुआपुर के कर्मी देव कुमार पंडित तथा स्थानीय गुड्डू कुशवाहा घटनास्थल पहुंचकर अचेतावस्था में पड़े घायल को इलाज के लिए सीएचसी इसुआपुर ले गए। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर स्थिति में उसे छपरा सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया गया । बताया जा रहा है कि ऋषि कुशवाहा गुरुवार की देर संध्या पिकअप टेंपू लेकर छपरा जा रहे थे। इसी बीच एस एच 90 स्थित भकुरा कोल्ड स्टोर के पास छपरा की तरफ से आ रहे अनियंत्रित ट्रक की चपेट में आ गए।

दस्त की होगी रोकथाम अभियान चलाकर लोगों को किया जा रहा है जागरूक

सदर अस्पताल से सिविल सर्जन ने प्रचार रथ किया रवाना

प्रात: किरण, संवाददाता

मोतिहारी। दस्त से होने वाले शिशु मृत्यु दर में कमी लाने के उद्देश्य सघन दस्त नियंत्रण पखवाड़ा का आयोजन चल रहा है। इसी क्रम में सदर अस्पताल मोतिहारी से सिविल सर्जन डॉ विनोद कुमार सिंह ने हरी झंडी दिखाकर प्रचार रथ रवाना किया। सघन दस्त नियंत्रण पखवाड़ा कार्यक्रम जिले में 22 सितंबर तक चलाया जाएगा। सिविल सर्जन डॉ विनोद कुमार सिंह ने रूट चार्ट के अनुसार सभी प्रखंडों में रथ द्वारा जागरूकता फैलाने का निर्देश दिया है। इस दौरान आशा व अन्य स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा 02 से 06 वर्ष तक के उम्र के बच्चों के बीच निःशुल्क ओआरएस का वितरण किया जाएगा। दस्त से ग्रसित बच्चों के उपचार के लिए जिंक टेबलेट दिया जाएगा। इस दौरान माताओं को डायरिया नियंत्रण संबंधी जानकारी दी जाएगी। डायरिया बाल मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक है। राज्य में प्रति वर्ष लगभग 27 लाख बच्चे डायरिया से पीड़ित होते हैं जिनमें से कईयों की जान चली जाती है। एसीएमओ डॉ श्रवण कुमार पासवान ने बताया कि डायरिया का ससमय पहचान एवं उपचार आवश्यक है। डायरिया सामान्यतः जीवाणु या विषाणु के कारण होता है। यह बीमारी गंदे हाथों से भोजन, दूषित पानी या खाद्य पदार्थों के सेवन से फैलता है। डायरिया के प्रसार को रोकने के लिए हमें खुले में शौच से परहेज एवं शौच के बाद व खाने से पहले अपने हाथों को साबुन से अच्छी तरह धोना आवश्यक है। डीसीएम नंदन झा ने कहा कि डायरिया पर नियंत्रण के लिए 6 माह तक शिशु को केवल स्तनपान, पर्याप्त पूरक आहार और विटामिन-ए देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यदि बच्चे को डायरिया हो जाए तो 14 दिनों तक जिंक-ओआरएस का प्रयोग असरकारी होता है। सदर अस्पताल में डायरिया के उपचार की विशेष व्यवस्था है। इस मौके पर सिविल सर्जन डॉ विनोद कुमार सिंह, एसीएमओ डॉ श्रवण कुमार पासवान, डीपीएम ठाकुर विश्वमोहन, डीसीएम नंदन झा, पीएसआई और यूनिसेफ के जिला प्रतिनिधि व अन्य स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित थे।

वार्ड पार्षद सुधांशु कुमार ने सड़क का किया शिलान्यास

प्रात: किरण, संवाददाता

परसाः-नगर पंचायत क्षेत्र के वार्ड 6 स्थित परसा थाना के समीप मुस्लिम वस्ति में पंद्रहवीं वित्त आयोग योजना अंतर्गत मजार से जुड़ने वाली मुख्य सड़क का लगभग 2 लाख 53 हजार की लागत से निर्माण कार्य का शिलान्यास वार्ड पार्षद सुधांशु कुमार उर्फ खद्दू,मुखिया प्रतिनिधि शशि राय व समाजसेविका कुसुम देवी ने पूजा अर्चना के उपरांत नारियल फोड़ कर किया।मौके पर वार्ड पार्षद सुधांशु कुमार ने कहा कि यह सड़क बन जाने से हजारों लोगों को आवागमन में सुविधा होगी जो जनहित में काफी बेहतर साबित होगी।उन्होंने कहा कि नगर पंचायत परसा के वार्ड 6 के सभी सड़कों की समस्या जल्द ही खत्म कर दी जाएगी।इस मौके पर ग्रामीणों ने वार्ड पार्षद सुधांशु कुमार व समाजसेविका कुसुम देवी को फूलमाला से स्वागत किया।तथा सड़क निर्माण कार्य की शुभारम्भ से ग्रामीणों में खुशी जाहिर किया।इस दौरान समाजसेविका कुशुम देवी,धुरी सिंह,प्रमोद मिश्रा,मिथुन कुमार, गणेश गुप्ता,संतोष साह, बद्री साह, मोतीलाल साह,जटा साह,उमेश कुमार सिंह,बबलू जायसवाल,उपेंद्र साह, कयामुद्दीन सहित कई लोग उपस्थित थे।

भाजपा नेताओं ने विद्युत अभियंता से समस्या को दूर करने का किया आग्रह

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सारण के सांसद राजीव प्रताप रूडी के निर्देश पर भाजपा जिला के मुख्य प्रवक्ता एवं छपरा विधानसभा के संयोजक धर्मेंद्र सिंह चौहान एवं छपरा विधायक प्रतिनिधि अनुरंजन प्रसाद ने विधुत अभियंता रितेश कुमार के कार्यालय में मिलकर रिविलगंज सहित छपरा शहर में बिजली की समस्या एवं कृषि के लिये सभी आन - लाइन कनेक्शन वालो को खेत तक जल्द पोल -तार पहुचाने को लेकर बिजली विभाग के अधिकारी इसके प्रति जागरूक नही होने को लेकर, जहा -जहा बिजली लोड अधिक है यहां के कनीय अभियंता से रिपोर्ट लेकर नया डीपी ट्रांसफार्मर लगाने के लिये , एनएच 19 ब्रह्मपुर से लेकर सेमरिया तक सड़क के सटे पेड़ बाँस के डहनिया का कटिंग कराया जाय। यह सब लिखित में दिया गया। विधुत अधीक्षक अभियंता रितेश कुमार ने सभी बातों को गम्भीरता से लेते हुए कहा कि जो भी काम है उसे जल्द पूरा करने का आश्वासन दिए उन्होंने रिविलगंज में बिजली कटौती एवं गरबरी को जल्द ठीक करने का हर संभव प्रयास जल्द किया जाएगा। बता दे कि सारण के सांसद राजीव प्रताप रूडी जी का अथक प्रयास से सारण में बिजली का आवाम परिवर्तन हुआ , आज सारण को बिहार में सबसे ज्यादा बिजली मिलता है यह अपने आप मे एक मिसाल है। सांसद रुडी जी के है कि हम सब आज बिजली का भरपूर ले रहे है। आज सारण में सबसे ज्यादा पीएसी 49 है। जो थोड़ा बहुत तकनीकी खराबी आया है वह सांसद रुडी जी सयंम लगे हुए है बहुत जल्द इस समस्या का समाधान कर लिया जाएगा। सांसद रुडी जी स्वास्थ्य, बिजली एवं सड़क उनके एजेंडा में पहली प्राथमिकता है। लगातार तीसरी बार सांसद बनने के बाद जिले के आला अधिकारियों के साथ बैठक किया है ।

गंडामन गांव के पीड़ित परिजनों को उचित पैसा दिलाने का किया आग्रह

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। महाराजगंज,के सांसद जनार्दन सिंह सीग्रीवाल ने लोकसभा में महाराजगंज संसदीय क्षेत्र अंर्तगत सारण (छपरा) जिला के मशरक प्रखंड के धर्मासती गंडामन गाँव के प्राथमिक विद्यालय में दिनांक-16 जुलाई 2013 को विषाक्त भोजन खाने से 23 बच्चों की हुई मौत के बाद उन्हें आवास देने में हुई भेदभाव एवं राहत के रूप में मिले राशि जो सहारा कम्पनी में जमा है उसे जल्द से जल्द दिलाने के सम्बन्ध में मामले को नियम-377 के अधीन उठाते हुए,अपनी बातों को लोकसभा के पटल पर रखी :- सांसद सीग्रीवाल ने कहा कि मेरे संसदीय क्षेत्र महाराजगंज लोकसभा,बिहार अंतर्गत सारण(छपरा) जिला के मशरक प्रखंड के धर्मासती गंडामन गाँव के सामुदायिक भवन में चल रहे प्राथमिक विद्यालय में दिनांक-16 जुलाई 2013 को विषाक्त भोजन खाने से 23 बच्चों की एक-एक करके मौत हो गयी थी तथा अनेकों बच्चों की तबियत बिगड़ गयी थी ' इस हृदय विदारक घटना ने अनेकों परिवार के भविष्य,उन बच्चों को उनसे छीन लिया ' उन्होंने बताया कि इतनी बड़ी दुखद घटना के बाद मुख्य मंत्री के द्वारा धर्मासती गंडामन गाँव को गोद लिया गया ' गाँव को गोद लेने के बाद प्रत्येक प्रभावित परिवार को आवास देने में बहुत भेदभाव किया गया,जिस कारण बहुत से प्रभावित परिवारों को आवास नहीं मिल सका । इस परिस्थिति में उपर्युक्त घटना के प्रभावित परिवार आज बहुत ही कष्ट में हैं,आर्थिक बदहाली में हैं एवं मानसिक रूप से पीड़ित हैं ' इस स्थिति से निजात दिलाने के लिए ह्लसीग्रीवालह्व ने भारत सरकार के गृह मंत्री एवं शिक्षा मंत्री से आग्रह करते हुए कहा कि उपर्युक्त घटना के सभी प्रभावित परिवारों को न्याय दिलाने के लिए अपने स्तर से कार्रवाई किया जाय ।

नगर पालिकाओं के अधिकारों को खत्म कर अफसरों की तानाशाही थोपना चाहतीं है मोदी सरकार : विधायक

प्रात: किरण, संवाददाता

● नगर पंचायत,नगर परिषद,नगर पालिका, नगर निगम को योजनाओं की चयन प्रक्रिया से बाहर कर लोकतंत्र का गला घोंटा है, : वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता

बेतिया मोहन सिंह। बिहार सरकार द्वारा मानसून सत्र के दौरान विधानमंडल के दोनों सदनों से बिना बहस के नगर पालिका संशोधन विधेयक 2024 पारित कर दिया गया. इस संशोधन विधेयक में नगर पालिका की शक्ति को सरकार ने समाप्त कर दी है. नये कानून के मुताबिक योजनाओं के चयन प्रक्रिया से तमाम नगर निकायों को अलग कर दिया गया है, अब अफसरों का मनमानी और तानाशाही चलेगी उक्त बातें भाकपा माले केन्द्रीय कमिटी सदस्य सह सिकटा विधायक वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहीं। आगे कहा कि सभी पार्षद जनता के वोट से चुनकर आते हैं उनके लिए काम करते है,लेकिन सरकार नगर पालिकाओं पर अंकुश लगाने के लिए इस नए संशोधन विधेयक को पास कर उसकी शक्ति समाप्त की है. आगे माले विधायक वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता ने कहा है कि नीतीश सरकार की मनमानी और तानाशाही देखें की नयें विधेयक के मुताबिक पूरे बिहार में पैलर नगर निगम मनाया गया है, जिसमें प्रभारी मंत्री अध्यक्ष होंगे. नगर आयुक्त मेंबर होंगे. वहीं जिला पदाधिकारी सदस्य रहेंगे इसके अलावा अन्य सदस्य सचिव के रूप में तो एमपी, एमएलए, और एमएलसी मेंबर होंगे. वहीं मेयर को बाहर रखा गया है यानी नगर पालिका संशोधन विधेयक में मेयर को अधिकारियों के अधीन कर दिया गया है, जो भी नगर निकाय में काम होंगे उसका निर्णय अधिकारी लेंगे, फिर चुनाव जीत कर आये नगर पार्षद और मेयर किस लिए हैं। सरकार की तानाशाही देखें की इस विधेयक पर गजट निकाल दिया है, जिसका हमारी पार्टी सक्रिय रूप से विरोध कर रहीं हैं. यह नगर निगम को पावरलेस करने की साजिश है। इसे बिहार की जनता कतई बर्दाश्त नहीं करेगी।

9 अगस्त को होगा नियोजन कैम्प का आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। नियोजन पदाधिकारी, अवर प्रादेशिक नियोजनालय, छपरा से प्राप्त जानकारी अनुसार श्रम संसाधन विभाग के तत्वाधान में अवर प्रादेशिक नियोजनालय, छपरा (पता-बाजार समिति, साढ़ा, प्रेमनगर, काजरिया टाईल्स के सामने) द्वारा कार्यालय परिसर में दिनांक 09.08.2024 को 11:00 बजे पूर्वाहन से 04:00 बजे अपराह्न तक नियोजन कैम्प का आयोजन किया जाएगा। जिसमें नियोजक द्वारा सारण, छपरा हेतु रिक्तियों के विरूद्ध चयन किया जायेगा। बताया गया कि इस कैंप में के पद पर चयन किया जाएगा । इस इसके लिए शैक्षणिक योग्यता होनी चाहिये। उम्र सीमा 18 से 32 वर्ष एवं वेतन 14500 से 23000 रुपये निर्धारित है। जॉब लोकेशन अहमदाबाद, पुणे,औरंगाबाद, अनंतपुर होगा। बताया गया कि नियोजन कैम्प में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों के लिए आवश्यक है कि उनका निबंधन नियोजनालय में हो। नियोजनालय में निबंधन की प्रक्रिया ऑनलाईन कर दी गयी है। जो कि भारत सरकार के पोर्टल के माध्यम से होता है। कोई भी अभ्यर्थी घर बैठे अपना निबंधन इस पोर्टल के माध्यम से कर सकता है। साथ ही अवर प्रादेशिक नियोजनालय, छपरा कार्यालय में भी ऑनलाईन निबंधन हेतु संपर्क किया जा सकता है। अतः अभ्यर्थी अपना नियोजनालय निबंधन इस पोर्टल पर आवश्यक रूप से करा लेंगे। नियोजन कैम्प में भी ऑनलाईन नियोजनालय निबंधन की व्यवस्था रहेगी।

शराब पीने से मना करने से नाराज एक वहशी युवक द्वारा अपनी ही बृद्ध दादी पर टांगी से ताबड़तोड़ प्रहार कर बुरी तरह किया जख्मी

प्रात: किरण, संवाददाता

माँझी। माँझी थाना क्षेत्र के डुमरी गाँव में शराब पीने से मना करने से नाराज एक वहशी युवक द्वारा अपनी ही बृद्ध दादी पर टांगी से ताबड़तोड़ प्रहार कर बुरी तरह जख्मी करने के बाद खून से सनी टांगी हाथ में लेकर थाना में पहुँच आत्मसमर्पण कर दिए जाने का लोमहर्षक मामला प्रकाश में आया है। घटना गुरुवार के देर शाम की बताई जा रही है। घटना के बाद ग्रामीणों ने जख्मी बृद्धा सोना कुँअर उम्र 75 वर्ष को तत्काल माँझी सीएचसी पहुँचाया जहाँ प्राथमिक उपचार के बाद चिकिसकों ने उसे चिंताजनक हालत में छपरा सदर अस्पताल रेफर कर दिया। परिजनों ने बताया कि जख्मी बृद्धा की हालत नाजुक बनी हुई है। ग्रामीणों ने बताया कि गुरुवार की शाम शराब के नशे में धुत युवक ने घर पहुँचकर पहले पत्नी रागिनी देवी के साथ मारपीट शुरू कर दी। पति द्वारा मारपीट से बचने के लिए पत्नी किसी तरह जान बचाकर कर पड़ोसी के घर जाकर छुप गई। इधर दरिंदा बना पति धारदार टांगी लेकर पड़ोसी के घर में छिपी बदहवाश पत्नी को कमरे से बाहर निकालने के लिए टांगी से वार कर दरवाजा तोड़ने लगा। शोरगुल सुनकर मौके पर पहुँची 75 वर्षीय बृद्धा दादी ने अपने पोते को उपद्रव करने से मना किया। नशे में धुत तथा वहशी बने पोते ने अचानक अपनी बृद्ध दादी के ऊपर टांगी से प्रहार करना शुरू कर दिया। इतना ही नही उसने निर्ममतापूर्वक दादी की गर्दन के अलावा छाती पीठ पर ताबड़तोड़ वार करके उन्हें बुरी तरह लहूलुहान कर दिया। बाद में टांगी के हमले से लहूलुहान दादी का उसने हाथ भी तोड़ दिया। घर में उपद्रव कर रहे वहशी युवक को काबू में करने के उद्देश्य से मौके पर पहुँचे ग्रामीणों को उसने खून से सनी टांगी लेकर खदेड़ना शुरू कर दिया। इसी दौरान भीड़ में शामिल एक युवक पास के कुएं में गिर पड़ा,जिसे बड़ी मुश्किल से ग्रामीणों ने कुंए से बाहर निकाला। दादी को लहूलुहान करने के बाद वहशी युवक के ताण्डव से परेशान गाँव के लोगों ने लाठी डंडा लेकर उसे खदेड़ना शुरू किया। बाद में ग्रामीणों का उग्र रूप देखकर वहशी युवक ने लगभग तीन किमी की दूरी तक भागकर माँझी थाने में जाकर शरण ली। और ड्यूटी पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने खून से सनी टांगी सहित उसे गिरफ्तार कर लिया। वहशी युवक डुमरी गाँव निवासी कामेश्वर सिंह उर्फ उदय सिंह का पुत्र दीपक कुमार उर्फ भोला सिंह बताया जाता है। पुलिस वहशी युवक से गहनता पूर्वक पूछताछ कर रही है। थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि जरूरी अनुसंधान के बाद युवक को जेल भेजा जाएगा।

कोपा में नगर पंचायत प्रतिनिधियों ने सरकार के खिलाफ किया प्रदर्शन

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा । शुक्रवार को बिहार सरकार द्वारा बनाया गया नया कानून के खिलाफ नगर पंचायत कोपा में चेयरमैन, उप-चेयरमैन, वार्ड पार्षद और सभी प्रतिनिधियों द्वारा जमकर विरोध प्रदर्शन किया गया। यह विरोध प्रदर्शन बिहार सरकार के द्वारा जो नया कानून नगर पंचायत के विरुद्ध बना है, उसी के खिलाफ यह विरोध प्रदर्शन है, सभी नगर पंचायत, नगर परिषद एवं नगर पालिकाओं में निकाला गया।

नगर पंचायत कोपा चेयरमैन रोखसाना खातुन की अध्यक्षता में यह विरोध प्रदर्शन किया गया ' इस अवसर पर नगर पंचायत कोपा के अध्यक्ष द्वारा कहा गया कि अगर यह काला कानून वापस नहीं लिया जाता है, तो आगामी 8 अगस्त को सरकार के खिलाफ नगर पंचायत कोपा से जनप्रतिनिधि और जनता पैदल मार्च निकालकर पटना तक जाएंगे, और विधानसभा का घेराव भी करने के बाध्य होंगे ' उन्होंने कहा कि अपनी मांगों को सरकार के समक्ष रखा जाएगा,फिर भी मांग को अगर पूरी नहीं की जाती है, तो आने वाले चुनाव में बिहार के जीते हुए सभी अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और पार्षद सरकार के विरोध में कार्य करेंगे। विरोध प्रदर्शन में चेयरमैन प्रतिनिधि बुस्तामी खान,वार्ड पार्षद एवं वार्ड पार्षद प्रतिनिधि वीरेंद्र चौधरी, कृष्ण कुशवाहा, बुलबुल गुप्ता, राजन खान, सलीम अंसारी, संजय साह, अमित यादव, रितेश यादव, प्रदीप यादव, मैनेजर यादव, रंजीत यादव तथा मुमताज खान शामिल थे।

जयप्रकाश विश्वविद्यालय में समारोहपूर्वक मनाया गया नेशनल केमिस्ट्री डे

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा। जयप्रकाश विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर रसायन शास्त्र विभाग में नेशनल केमिस्ट्री डे पर आज एक समारोह का आयोजन किया गया। भारतीय रसायन शास्त्र के जनक आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रे के जन्मदिन पर मनाए जानेवाले नेशनल केमिस्ट्री डे की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. रवीन्द्र सिंह ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. सिंह ने आचार्य रे को भारतीय रसायन उद्योग का संस्थापक बताते हुए विद्यार्थियों से उद्यमिता और नवाचार को अपनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि आचार्य पीसी रे ने बंगाल केमिकल एवं फार्मास्युटिकल्स वर्क्स लिमिटेड की स्थापना की थी। उन्होंने हिन्दू रसायन शास्त्र का इतिहास एवं बंगाली रसायनज्ञ की जीवनी एवं अनुभव नामक सुप्रसिद्ध पुस्तकों की रचना की थी। कार्यक्रम में विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो. अशोक कुमार, विज्ञान संकाय के पूर्व अध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष प्रो. उदय अरविंद, भौतिक विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. महेंद्र सिंह, भौतिक विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. ए.एन. सिंह, प्रो. गुणसागर यादव के साथ कई छात्र-छात्राओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ शची मिश्रा एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ नीतू सिंह ने किया।

संक्षिप्त खबरें

सड़क की घेराबंदी करने पर रोक सीओ ने लगाई

नोखा (रोहतास) नोखा थाना क्षेत्र के ठेकही टोला गुड़िया गांव के पास मुख्य सड़क पर ईट गिरकर के निर्माण कार्य करने पर सीओ ने रोक लगा दी। जिसको लेकर के सीओ मधुसूदन चौरसिया ने बताया कि नोखा नोनसारी पथ से ठेकही रामपुर होते हुए पहाड़पुर जाबरा तक जाने वाली सड़क पर गुड़िया गांव के पास एक व्यक्ति द्वारा मुख्य सड़क पर ईट लगा कर पक्का निर्माण करते हुए मुख्य सड़क घेराबंदी शुरू कर दी। रस्सी बांधकर के यातायात बाधित कर दिया। आनेजाने लोगों से कहा की यह मेरी निजी जमीन है।जिसको लेकर के सीओ मधुसूदन चौरसिया को सूचना मिली तो घटनास्थल पहुंचे और जाकर निर्माण कार्य को रुकवाया।

कुर्की वारंटी गिरफ्तार

बिक्रमगंज(रोहतास) : पुलिस ने कुर्की वारंटी को गिरफ्तार कर जांच के उपरांत न्यायिक हिरासत में भेज दिया । बिक्रमगंज थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि नगर परिषद वार्ड संख्या 25 बिक्रमगंज निवासी सुल्तान साह को पुलिस ने गिरफ्तार कर जांच के उपरांत न्यायिक हिरासत में भेज दिया । उन्होंने कहा कि गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध बिक्रमगंज व्यवहार न्यायालय से कुर्की वारंट निर्गत था ।

नामांकन शुल्क वापसी को लेकर विद्यार्थियों में आक्रोश

तिलौथू (रोहतास) राधा शांता महाविद्यालय तिलौथू में इंटर की मान्यता रद्द कर दिया गया है। लेकिन ऑनलाइन फॉर्म भरते समय उनका नाम कॉलेज की प्राथमिकता के अनुसार दे दिया गया था। जहां बच्चों ने 11 और 12 में एडमिशन ले लिया। बाद में इन बच्चों को तिलौथू हाई स्कूल ट्रांसफर कर दिया गया जहां उन्हें दोबारा 12वीं का नामांकन शुल्क पुनः 3300 देना पड़ा, तो पहले शुल्क वापस के लिए अपना मांग कर रहे हैं। जबकि 12वीं में नामांकन के लिए पुनः तिलौथू उच्च विद्यालय में पैसा लिया गया। सारे बच्चे 11वीं में राधा शांता महाविद्यालय से किये और 12वीं में नामांकन के लिए पुनः रुपए 3300 जमा कर दिए। उसके बाद 12वीं का मानता रद्द होने के कारण उन्हें हाई स्कूल में ट्रांसफर किया गया। जहां पुनः उनको नामांकन शुल्क देना पड़ा । बच्चों की संख्या लगभग 30 है। महाविद्यालय शुल्क वाले रुपए वापस के लिए बैठे हुए हैं।

सर्प के काटने से एक युवक की हुई मौत

काराकाट(रोहतास) : काराकाट थाना क्षेत्र के किसुनदासडीह गांव में एक सर्प के काटने से एक युवक की मौत हो गई।किशुनाथडीह निवासी जितेंद्र सिंह यादव के 18 वर्षीय पुत्र अंकित कुमार उर्फ गायबा को कल शाम में सर्प ने काट लिया। जिस कारण से उसकी मृत्यु हो गई। घटना के संबंध में बताया जाता है कि सर्प के काटने के बाद ये लोग झाड़ फूंक के लिए मोथा ले गए। वहां से फिर गोडारी में स्थित बकस बाबा के पास ले गए। उसके बाद भोजपुर जिला के नवानगर के पास रूपसागर ले गए। स्थिति गंभीर होने के बाद रूपसागर में अस्पताल में भर्ती कराया। जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। लोगों का कहना है कि झाड़-फुक के चक्कर में पड़कर के समय बर्बाद कर दिए। जिससे उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद अपने गांव लाकर के उसका दास संस्कार कर दिया गया।

ठनका गिरने से एक वयक्ति की मौत परिजनों में पसरा मातम

लोहा। पंचायत के कुरकुट्टा गांव में ठनका गिरने से एक वयक्ति की मौत हो गई है । मृतक की पहचान कुरकूट्टा गांव निवासी स्वर्गीय कृष्ण देव प्रसाद साव का 35 वर्षीय पुत्र पवन कुमार साव के रूप में की गई है । मृतक का भाई ने जानकारी देते हुए बताया की मेरा भाई गांव स्थित बहियार में शौच करने के लिए जा रहा था तभी अचानक जोरदार गरज के साथ ठनका गिरने से उनकी मौत हो गई हे । बज्रपात की आवाज सुनकर जब हम लोग दोडे तो मेरा भाई जमीन पर गिरा पड़ा मिला ।ग्रामीणों ओर परिजनों की मदद से इलाज के लिए उसे रेफरल अस्पताल झाझा में भर्ती कराया । जहाँ चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया । इधर अस्पताल में मौत की खबर सुनकर परिजनों का रो रोकर बुरा हाल हो गया है ।

हरिहरगंज पालीगंज फोर लेन बनाने की मांग अभय कुमार सिन्हा ने उठाई

गया। औरंगाबाद सांसद अभय कुमार सिन्हा ने भारत सरकार के सडक परिवहन मंत्री से फोर लेन में देरी की बात सदन में उठाया कि जो पटना से पालीगंज होते दाउदनगर औरंगाबाद होते हरिहरगंज रोड को आज तक फोर लेन नही बनाया गया है ।लेकिन झारखंड के हरीरगंज तक रोड बन चुकी है ।इधर हरिगंज से बिहार में पढने वाले फोर लेन को जल्द से जल्द बनाने की मांग सरकार से की है ।वही गया डोभी का निर्माण 2018 मे पुर्ण होता जो तिन संवेदेको के कारण आज तक नहीं पुरा हुआ है इसका देरी का भार किसपर जाएगा।

अमनौर में चला प्रशासन का बुलडोजर, दिए गए समय सीमा से पहले ही प्रशासन ने हटवाया अतिक्रमण

प्रात : किरण संवाददाता

अमनौर। अमनौर बाजार में अतिक्रमण के कारण हमेशा महा जाम की स्थित बनी रहती है ।जिससे आम आवाम को बड़ी कठिनाइयों का सामना करनी पड़ती थी। शुक्रवार को मढ़ौरा एसडीएम डॉ प्रेरणा सिंह व डीएसपी नरेश पासवान समेत कई पुलिस बल के साथ अधिकारी अमनौर बाजार में अभियान के तहत सड़को को अतिक्रमण मुक्त कराया गया ।अमनौर चौक से लेकर अमनौर बाई पास वही अमनौर चौक से गुफा मंदिर तक सड़क के किनारे किये गए अतिक्रमण को जेसीबी से हटवाया गया ।प्रशासन के चली बुलडोजर से अतिक्रमण किये हुए व्यवसाइयो में हड़कम्प मची रही । इस दौरान लोगो की भारी भीड़ उमड़ी हुई थी।

जिला पदाधिकारी सारण द्वारा 15 जुलाई 24 की बैठक में दिए निर्देश के आलोक में अमनौर बाजार को अतिक्रमण मुक्त कराने के लिए अमनौर बाजार के सड़क की कॉपी करने हेतु अमीन व राजस्व कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति की गई थी ।प्रतिनियुक्त राजस्व कर्मचारियों अमीनो द्वारा 18 व 19 नवम्बर 24 को अमनौर मुख्य बाजार के भाग की मापी कर लाल रंग के ऐसे मार्क करते हुए अतिक्रमण किये गए भूमि का रकबा फिट अंकित करेंगे ।अतिक्रमण वाद प्रारभ करते हुए सभी सम्बन्धित व्यवसाइयो को नोटिस तामिला कराया गया था ।नोटिस मिलने के बाद भी व्यवसाइयो द्वारा अतिक्रमण नही हटाया गया ।जिससे प्रशासन को खुद बुलडोजर चलवाना पड़ा ।इससे कुछ व्यवसाइयो ने नाराजगी भी जाहिर किया। अमनौर बाजार के व्यवसाइयो का कहना है की छः अगस्त तक अतिक्रमण हटाने का नोटिस प्रशासन के द्वारा दिया गया था ।इस बीच बैठक कर इस सम्बंध में चर्चा होनी थी ।परन्तु

अधिकारी दो अगस्त को ही जबरन जे सी बी के माध्यम से अतिक्रमण हटवाया जा रहा है। जिससे अमनौर बाजार वासियों में काफी आक्रोश दिखा। इस मामले में मढ़ौरा एसडीएम डॉ प्रेरणा सिंह से पूछने पर उन्होंने कहा कि ये अस्थाई रूप से किये गए अतिक्रमण को आज हटवाया जा रहा है ।कुछ व्यवसाइयो का तर्क है कि अतिक्रमण मुक्त होने से अमनौर बाजार महा जाम से मुक्ति मिलेगा ।जाम से व्यवसाय पर इसका असर पड़ रहा था ।लोग अमनौर बाजार से होकर जाना पसंद नही करते थे नही रुकना पसन्द करते थे ।इस मौके पर अमनौर अंचलधिकारी अजय कुमार, अमनौर थाना अध्यक्ष जफरुद्दीन समेत सैकड़ो पुलिस कर्मियों की मौजूदगी में के माध्यम से अतिक्रमण हटाया गया।

हिंदू जागरण मंच आरा द्वारा निकाली गई गंगा घाट से भव्य कावड़ यात्रा

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। श्रवण मास शिवरात्रि के उपलक्ष में हिंदू जागरण मंच द्वारा हर वर्ष के भांति इस वर्ष भी केशवपुर गंगा घाट से जलभरी कावड़ यात्रा सिद्धनाथ मंदिर में भोले बाबा के जलाभिषेक के लिए निकाला गया। हिंदू जागरण मंच द्वारा प्रबंधित विभिन्न वाहनों से भारी मात्रा में लोग इस यात्रा में शामिल हो कर सुबह 7 बजे केशवपुर घाट के लिए प्रस्थान किए। केशवपुर घाट पहुंच कर सभी कावड़ियों ने जल भरा और भोले बाबा की आरती कर के साज बाज के साथ बिंदटोली सिद्धनाथ मंदिर के लिए झूमते गाते रवाना हुए। इस कावड़ यात्रा में भगतो द्वारा 21 लीटर जल से भरा कावड़ ले के बाबा का जलाभिषेक किए। पूरे रास्ते में कावडियो बारिश भरे मौसम का आनंद लेते झूमते हुए नजर आए। इस यात्रा के दौरान गंगी सूर्य मंदिर परिसर में नींबू पानी की व्यस्था की गई। हिंदू जागरण मंच के द्वारा सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया , एवं कावड़ियों के सभी सुविधा का ध्यान रखते हुए हिंदू जागरण मंच के नेतृत्व में धूम धाम से ये कार्यक्रम अनुसासन पूर्ण सफल हुआ। हिंदू जागरण मंच के प्रदेश सहसंयोजक सोनालाल जी कार्यक्रम सफल होने का सारा श्रेय हिंदू जागरण मंच के कार्यकताओं को दिया और बोला की ये कार्यक्रम सफल होने के लिए हिंदू जागरण मंच के सभी कार्यकर्ता तन मन से बहुत परिश्रम किए है।

जुम्मे की नमाजियों ने वायनाड के पीड़ितों और मृतकों के लिए दुआ मांगी

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिले से मदद की अपीलः वायनाड बाढ़ पीड़ितों को हर संभव सहायता देने के लिए औरंगाबाद जिले से सहयोग की अपील की गई। मजहब से ऊपर उठकर मदद की अपीलः वायनाड के पीड़ितों की मदद के लिए मजहब से ऊपर उठकर सहयोग करने की अपील की गई। कुदरत का कहर कभी भी कहीं भी किसी पर हो सकता है। अफसोस इस बात का होता है कि कुछ लोग इस कहर को नहीं समझ पाते हैं। उक्त बातें पठान टोली मस्जिद में शुक्रवार को तकरीरे जुमा में पैगाम ए इंसानियत के अध्यक्ष मो शहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान ने कहीं। इस अवसर पर पठान टोली मस्जिद के ईमाम हाजी गुलाम रसूल कादरी, उप ईमाम मौलाना सलीम अख्तर, सदर सैयद सोनू, नमाज अदा कर रहे मो शमशेर आलम, मो शहनवाज आलम, अजीम खान, अन्ना खान, मो जैनुल अंसारी, मो कमाल, मो सद्दाम, और मो अफताब मौजूद थे। सल्लू खान ने बाढ़ पीड़ितों की दिल खोलकर सहायता करने का आह्वान किया और कहा कि मदद करने में मजहब को नहीं देखना चाहिए। केरल के वायनाड आपदा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि यह बहुत ही दर्दनाक हादसा है जिसमें 500 से ज्यादा लोग काल के गाल में समा गए। उन्होंने बताया कि वायनाड में बाढ़ से काफी लोग घिरे हुए हैं और इन मुसीबतजदा लोगों की मदद करने के लिए आगे आने की जरुरत है। यह देश के लिए राष्ट्रीय आपदा है और हम सभी को वायनाड के लोगों को हर संभव मदद करने की अपील की गई। शुक्रवार को जुम्मे की नमाज के दौरान पठान टोली मस्जिद में वायनाड में भूस्खलन से 500 से ज्यादा मौतों और हजारों लोगों के लापता होने पर मुस्लिम समुदाय ने अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की। मुस्लिम समुदाय ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अल्लाह से दुआ की कि वे दुखद घटना के पीड़ितों के साथ हैं और उन परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने कहा कि बचाव अभियान में सहायता करने वाले भारतीय सेवा सदस्यों और प्रथम प्रतिक्रियाकताओं की बहादुरी की सराहना करते हैं। हम सभी को इस कठिन समय में केरल के वायनाड के लोगों के साथ होना चाहिए। इस मौके पर दानिश खान, मो शमशाद आलम, मो यासिर खान, भोलू खान, मो नईम नेयाजी, मो निसार अहमद, और मो जरनल खान आदि उपस्थित थे।

नैसर्गिक शिक्षा की अवधारणा को पूरा किया जा सके : आलोक

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। राज्य सरकार की दोहरी शिक्षा नीति का दंश वित्त रहित शिक्षा नीति के तहत संचालित इंटर स्तरीय शिक्षण संस्थानों को भुगतना पड़ रहा। राज्य में वित्त रहित शिक्षा नीति के तहत 517 इंटर कॉलेज संचालित है, जिन्हे निरसित बिहार इंटरमीडिएट शिक्षा परिषद पटना से प्रस्वीकृति प्राप्त हुआ था, बिहार इंटरमीडिएट शिक्षा परिषद का बिहार विद्यालय परीक्षा समिति में विलय के समय यह तय किया गया था कि प्रस्वीकृत इंटर शिक्षण संस्थानों के मूल स्वभाव या प्रस्वीकृत नियमो के साथ किसी भी प्रकार का छेड़ - छाड़ नही किया जायेगा। राज्य सरकार की दोहरी नीति के कारण विहार विद्यालय परीक्षा समिति लगातार नियमो की अनदेखी कर शर्तो का उल्लंघन कर इंटर महाविद्यालयों के स्थापना प्रकृत स्वभाव से छेड़- छाड़ कर वित्त रहित इंटर संस्थानों के अस्तित्व को समाप्त करने की साजिश रच रही। प्रस्वीकृति प्राप्त इंटर महाविद्यालयों में प्रत्येक संकायों में 384 - 384 सीट संख्या आवंटित किया गया था । औरंगाबाद जिले में लगभग 17 ऐसे इंटर स्तरीय महाविद्यालय को प्रस्वीकृति प्राप्त है , पूर्व में ऐसे सभी शिक्षण संस्थानों को 384 - 384 सीट आवंटित किया गया था, दशकों से ऐसे सभी महाविद्यालयों में आवंटित छात्र संख्या के आधार पर नामांकन होते रहा है पी, अब सरकार की गलत नीतियों के चलते ऐसे संस्थानों को नयी नियमावली बना कर पुनः जांच के लिये बाध्य करना और जांच के बाद ऐसे संस्थानों को पूर्व से निर्धारित सीट संख्या को घटा कर 120 कर दिया गया । सरकार द्वारा जब वित्त रहित शिक्षा नीति के तहत प्रस्वीकृति प्रदान की थी तब उस समय के नीतियों के आलोक में सभी शिक्षण संस्थानों में आवश्यकता अनुसार शिक्षकों कर्मचारियों की नियुक्ति किया गया, जो दशकों से राज्य के शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने में लगे रहे।

गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के कृषि स्नातक के चार विद्यार्थी प्रतिष्ठित कंपनी में चयनित

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय,जमुहार के अंतर्गत संचालित नारायण कृषि विज्ञान संस्थान में कैंपस प्लेसमेंट के चौथे चरण में बीएससी कृषि अंतिम वर्ष के चार विद्यार्थियों का चयन विश्वविद्यालय प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में बिहार की प्रतिष्ठित कंपनी कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड में केमिस्ट के पद हुआ है।

संस्थान के निदेशक डॉ. एच. के. सिंह ने बताया कि कौशिकी बिहार की अग्रणी दुग्ध उत्पादन कंपनी है जिसमें संस्थान के छात्रों का चयन होना बड़े गर्व की बात है। प्रो. सिंह के अनुसार अभी तक 58 छात्रों का चयन कृषि क्षेत्र की विभिन्न प्रसिद्ध कंपनीज में हो चुका है। इस अवसर पर गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्याल के कुलपति डॉ.एम.के. सिंह, प्रति कुलपति डॉ. जगदीश सिंह, सचिव गोविन्द नारायण सिंह,प्रबंध निदेशक त्रिविक्रम नारायण सिंह तथा विश्वविद्यालय की बोर्ड ऑफ मेंबर मोनिका सिंह ने खुशी व्यक्त की तथा संस्थान के शिक्षकों को बधाई दी। संस्थान के प्लेसमेंट सेल के इंचार्ज डॉ. ए. के. सिंह ने चयनित छात्रों के साथ साथ प्लेसमेंट सेल के सदस्यों डॉ. आशुतोष कुमार, डॉ. नितेश कुमार सिंह , डॉ. विकाश सिंह, डॉ. प्रशांत कुमार सिंह डॉ. सभाजीत पाल और डॉ. वरुण मिश्रा के कार्यो की भी सराहना की तथा आने वाले दिनों में अधिक से अधिक छात्रों को कृषि क्षेत्र की नामी कंपनियों में चयन दिलाने का भरोसा भी दिलाया।

युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा का जगदम महाविद्यालय इकाई गठित

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय ।शुक्रवार को सामाजिक संगठन युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा की जगदम कॉलेज छपरा में महाविद्यालय की इकाई का गठन किया गया ।जिसकी अध्यक्षता अमृत कुमार मौर्य ने किया। संगठन के संरक्षक शेख नौशाद और अध्यक्ष अमित नयन के नेतृत्व में जगदम कॉलेज इकाई का गठन किया गया। कार्यक्रम में संयुक्त रूप से संबोधन में संरक्षक शेख नौशाद और अध्यक्ष अमित नयन ने कहा कि जयप्रकाश विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अराजकता को खत्म करने के लिए विभिन्न कॉलेजों के छात्रों को एकजुट कर विश्वविद्यालय प्रशासन पर दबाव बनाने का काम युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा करते आ रहा है ।जगदम कॉलेज इकाई के गठन में अध्यक्ष के रूप में अमृत कुमारी मौर्या को चुना गया। भीष्म कुमार को महासचिव, अंजली कुमारी, अरविंद माझी, जितेश कुशवाहा को उपाध्यक्ष, अमन कुमार यादव को सचिव चुना गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रमुख संरक्षक शेख नौशाद अध्यक्ष अमित नयन, सरताज खान, जितेश कुमार कुशवाहा, गुड्डू कुमार, स्नेहा सिंह, शोभिता कुमारी, शालू कुमारी, अंकिता कुमारी मुस्कान कुमारी नेहा कुमारी निशा कुमारी सपना कुमारी रुखसार खातून रुखसार खातून, अंजलि ओझा काजल कुमारी काजल कुमारी दीपिका कुमारी गुड्डू कुमार खुशी कुमारी, आसमा खातून, स्वाति कुमारी सिंह आदि छात्र संगठन में जुड़े।

प्रेमचंद जयंती पर विचार गोष्ठी एवं काव्य संध्या का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद स्थित ब्लॉक मोड़ के समीप पृथ्वीराज चौहान स्मृति स्थल के सभागार में साहित्यसेवियों द्वारा भारत के महान साहित्यकार उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी की 144वीं जयंती समारोह के मौके पर विचार गोष्ठी एवं काव्य संध्या का आयोजन किया गया। पृथ्वीराज चौहान चैरिटेबल ट्रस्ट के उपाध्यक्ष डॉ ज्ञानेश्वर प्रसाद सिंह के अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम का संचालन शब्दाक्षर के जिलाध्यक्ष नागेंद्र प्रसाद केसरी ने किया। ट्रस्ट के वरीय सदस्य रामप्रवेश सिंह, चंद्र प्रकाश विकास,खैरा पंचायत के पूर्व मुखिया सत्येंद्र नारायण सिंह, समाजसेवी कमलेश सिंह,संजय कुमार सिंह की गरिमामई उपस्थिति में लोगों ने संबोधन के क्रम में कहा कि प्रेमचंद का साहित्य पूरे हिंदुस्तान के समग्र दर्शन का साहित्य है ।राजनीतिक, धार्मिक-,आर्थिक,सामाजिक क्षेत्र में जितने भी घटनाएं घटित हो रही हैं उन सभी घटनाओं का चित्रण प्रेमचंद के साहित्य में बरबस दिखाई पड़ता है ।विनय मामूली बुद्धि द्वारा हास्य व्यंग्य काव्य ने सबको हंसाया तो अनुज बेचैन की कविता हृदय के गहराइयों तक पहुंची ।जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री धनंजय जयपुरी की छंदबद्ध कविताएं आत्मिक दिशा का बोध कराने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी ।हिमांशु चक्रपाणि के गजल ने लोगों को भाव विभोर कर दिया ।अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा गया कि प्रेमचंद का साहित्य जन जन से जुड़ी है एवं उनकी रचनाएं आमजन को प्रेरित करने वाली होती हैं ।जिला परिषद के पूर्व अध्यक्ष पंकज पासवान ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक कुरीतियों को दूर करने वाली होती है ।राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित साहित्यकार आफताब राणा ने शायराना अंदाज में प्रेमचंद को श्रद्धांजलि दी। धन्यवाद ज्ञापन सुरेश विद्यार्थी द्वारा किया गया।

सांसद प्रतिनिधि राकेश सिंह व आईजी विकास वैभव को किया सम्मानित

छपरा कार्यालय। परसा मस्तिचक अखंड ज्योति आँय हॉस्पिटल प्रांगण मे हो रहे शिष्य शिरोमणि संत महोत्सव यज्ञ मे आईजी विकास भैभव और साथ मे प्रदेश कार्य समिति सदस्य सह सांसद प्रतिनिधि राकेश सिंह भी यज्ञ शामिल हुए और पूजा अर्चना किया और यज्ञ मे अयोध्या से आये हुए बाबा से आशीर्वाद लिया और खुशहाली की कामना की इस अवसर पर दोनों लोगो को मंच पर यज्ञ समिति द्वारा अंग वस्त्र और माला से जोरदार स्वागत किया गया और आईजी विकास भैभव ने कहा की यज्ञ मे आने से आत्मा को शांति मिलती है और मन प्रशन हो जाता है और उन्होंने हॉस्पिटल परिसर मे घूम कर हॉस्पिटल के बेवस्था का जायजा लिया और बेवस्था देखकर काफी खुश हुए इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष भूलन जी हॉस्पिटल बेवस्थापक अमित सिंह छाया कुमारी मोनू सिंह सुमंत तिवारी जीतेन्द्र गिरी टोनू सिंह अभिषेक जी महेश राय रामबाबू राय नितेश कुमार सहित सैकड़ो लोग उपस्थित थे ज्ञात हो परसा जाने के क्रम मे रास्ते मे बेला मे मुखिया प्रतिनिधि छोटू ओझा के आवास पर सामजिक कार्यकर्त्ता विजय ओझा द्वारा आईजी विकास भैभव और सांसद प्रतिनिधि राकेश सिंह का अंग वस्त्र से स्वागत किया गया इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि विशाल श्रीवास्तव मुखिया प्रतिनिधि अजय राम मुकेश सिंह धनजय बाबा गौरव सिंह सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

07 अगस्त को राजधानी पटना में सफाई अभियान और कार्यशाला आयोजित करेगा सेवामो

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। सेवामो इंटरप्राइजेज एलएलपी , नीति आयोग द्वारा वित्त पोषित भारत का अग्रणी सफाई स्टार्टअप, स्टार्टअप इंडिया 7 अगस्त, 2024 को शाम 4 बजे से 7 बजे तक एनआईटी घाट, पटना में एक नदी सफाई अभियान और कार्यशाला आयोजित कर रहा है। सेवामो पटना वसियों को इसमें शामिल होने और इस सफाई अभियान को सफल बनाने के लिए आमंत्रित कर रहा है। इसने सफाई के इस बड़े आंदोलन में शामिल होने और बिहार को भारत का सबसे स्वच्छ राज्य बनाने के लिए हाउसकीपिंग और कीट नियंत्रण कंपनियों जैसी सुविधा प्रबंधन कंपनियों को भी आमंत्रित किया है। सेवामो की संस्थापक और सीईओ निश्का रंजन एक उत्साही सामाजिक उद्यमी हैं और उनका ध्यान भारत को दुनिया का सबसे स्वच्छ देश बनाने पर है, उन्होंने कहा, 1.4 अरब लोगों के देश में हमें निश्चित रूप से संसाधनों के संकट का सामना करना पड़ेगा, लेकिन अगर सभी 1.4 अरब लोग न केवल हमारे घरों बल्कि हमारे देश की सफाई की दिशा में एक छोटा सा कदम उठायें, वह दिन दूर नहीं होगा जब हम जापान जैसे देशों के बराबर होंगे जहां एक पूरा समुदाय अपने देश की परवाह करता है जो जापान को सबसे स्वच्छ देशों की सूची में शीर्ष पर रखता है। 2047 में एक विकसित और सुपर स्वच्छ अर्थव्यवस्था बनने के हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, अभी कदम उठाने की जरूरत है।

पारस एचएमआरआई ने कैंसर सरवाइवर्स को किया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

डॉक्टर बोले, समय पर इलाज शुरू हो तो ठीक हो सकता है कैंसर

पटना। पारस एचएमआरआई, पटना ने शुक्रवार को कैंसर से जंग जीत चुके मरीजों के जज्बे को सलाम करते हुए एक विशेष कार्यक्रम उम्मीद का आयोजन किया। इस मौके पर पारस एचएमआरआई के फेसिलिटी डायरेक्टर अनिल कुमार, श्री नीतीश मिश्रा उद्योग व पर्यटन मंत्री बिहार सरकार ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का आरंभ किया। इस कार्यक्रम में कैंसर के कठिन दौर में भी हौसला नहीं खोने वाले मरीजों को सम्मानित किया गया। इसमें वैसे मरीज शामिल थे जो चार-पांच साल पहले ही कैंसर से उबर चुके हैं और फिलहाल कैंसर से जुड़ा कोई इलाज नहीं करा रहे हैं। इन सभी मरीजों का इलाज पारस एचएमआरआई में ही हुआ है।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कैंसर मरीजों और उनके परिजनों को यह संदेश देना था कि कैंसर एक लाइलाज बीमारी नहीं है। समय रहते पता चलने और उचित इलाज से कैंसर को पूरी तरह से मात दी जा सकती है। कार्यक्रम में मौजूद कैंसर सरवाइवर्स ही इस बात की जीती जागती मिसाल हैं। कार्यक्रम में कैंसर से जूझने और उस पर विजय पाने वाले मरीजों ने भी अपने अनुभव साझा किए। पारस एचएमआरआई के एचओडी मेडिकल ऑन्कोलॉजी डॉ. अभिषेक आनंद ने बताया कि पारस एचएमआरआई लगातार ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है ताकि लोगों में कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके। उन्होंने कहा कि कैंसर के बारे में लोगों में कई तरह की भ्रांतियां होती हैं। इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को सही जानकारी देने की कोशिश की गई है। मौके पर एचओडी रेडिएशन ओन्कोलॉजी डॉ. शेखर केसरी ने इस बात पर जोर दिया कि कैंसर एक गंभीर बीमारी है, लेकिन इसका इलाज संभव है। बशर्ते कि सही समय पर इसका सही जगह और समुचित इलाज हो। उन्होंने कहा कि कैंसर जितनी जल्दी पकड़ में आ जाए, उसका इलाज उतना ही कारगर होता है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे नियमित स्वास्थ्य जांच करवाते रहें ताकि किसी भी बीमारी को शुरूआती चरण में ही पकड़ा जा सके। कार्यक्रम में फैसिलिटी डायरेक्टर अनिल कुमार ने कहा कि पारस एचएमआरआई परिवार के लिए यह गर्व का समय है कि हमने इन मरीजों को स्वस्थ जीवन देने में अपना योगदान दिया है। उन्होंने सम्मानित होने वाले लोगों को कहा कि आप सभी कैंसर से जूझ रहे मरीजों के लिए एक प्रेरणा हैं। इस मौके पर डॉ. अविनाश सिंह (हेमेटोलॉजी विभागाध्यक्ष एवं सीनियर कंसल्टेंट), डॉ. आर.एन. टैगोर (मुख्य कंसल्टेंट, मेडिकल ऑन्कोलॉजी), डॉ. राहुल चौधरी (मुख्य कंसल्टेंट, सर्जिकल ऑन्कोलॉजी), डॉ. स्नेहा झा (मुख्य कंसल्टेंट रेडिएशन ऑन्कोलॉजी), डॉ. शिव शंकर मिश्रा (कंसल्टेंट रेडिएशन ऑन्कोलॉजी) डॉ. मोसर्रत शाहीन (कंसल्टेंट मेडिकल ऑन्कोलॉजी) ने भी अपनी बातें रखीं। पारस एचएमआरआई के बारे में पारस एचएमआरआई, पटना बिहार में 2013 से कार्यरत है। पारस इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर केयर बिहार में अपनी विशेषज्ञता, बुनियादी ढांचे और कैंसर देखभाल प्रदान करने के लिए जाना जाता है।

42 लीटर देसी शराब के साथ दो गिरफ्तार, प्राथमिकी दर्ज

प्रात : किरण संवाददाता

तरैया। थाना क्षेत्र के सरेया बसंत गंडक नहर के समीप पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर 42 लीटर देसी शराब बरामद कर लिया है ।जबकि दो शराब विक्रेता पुलिस को चकमा देकर फरार हो गये ।इस संबंध में एएसआई अप्पू कुमार ने एक प्राथमिकी दर्ज कराई है ।दर्ज प्राथमिकी में कहा गया है कि भटौरा सरेया बसंत गंडक नहर के रास्ते एक व्यक्ति बोरा में 20-20 लीटर के बाल्टी में देसी शराब लेकर जा रहा था।

जिसे पुलिस बल के सहयोग से पीछा किया गया लेकिन शराब विक्रेता शराब फेंककर फरार हो गया ।वहीं बेलहरी से पचौड़र जानेवाली मुख्य सड़क से एक व्यक्ति बाइक से झोला में पॉलीथिन में बंधा हुआ दो लीटर 800 एमएल देशी शराब लेकर जा रहा था जिसे पुलिस ने बरामद कर लिया है ।बाइक व शराब छोड़कर शराब विक्रेता झाड़ी का लाभ उठाते हुए भाग गया ।पुलिस दोनों शराब विक्रेता पर प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई में जुट गयी है।

आगजनी के आरोपी को पांच साल की सजा और दस हजार जुर्माना

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एडिजे दो धनंजय कुमार मिश्रा ने बारूण थाना कांड संख्या -109/13 में सजा के बिन्दु पर सुनवाई करते हुए एक मात्र अभियुक्त रंजन पासवान मस्तूल बारूण को सजा सुनाई है। एपीपी राजाराम चौधरी ने बताया कि वाद सूचक प्रयाग राम मस्तूल बारूण के घर नष्ट करने के आशय से आगजनी का आरोपी रंजन पासवान मस्तूल बारूण को 24/07/24 को दोषी ठहराया गया था और बंधपत्र विखंडित कर जेल भेज दिया गया था आज आरोपी को भादंवि धारा -436 में पांच साल की सजा और दस हजार जुमार्ना लगाया गया है अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि एगआरह साल पहले 16/05/13 को सूचक ने प्राथमिकी दर्ज कराई थी।

तीस लीटर देशी शराब बरामद, प्राथमिकी दर्ज

मकेर(सारण) थाना क्षेत्र के एकडेरवा मसूरिया गांव से देशी शराब बरामद किया है ,इस संबंध में थाना अध्यक्ष रवि रंजन कुमार ने बताया कि सूचना मिली थी कि एकडेरवा मसूरिया डीह पर दो लोग दारू पी रहे हैं । पुलिस गस्ती दल ने त्वरित कार्यवाही करते हुए मौके से दो लोगो को जरकिन में शराब रखे हुए थे ,पुलिस वाहन देख गैलन छोर फरार हो गए ।उपस्थित लोगों से जानकारी प्राप्त करने के पश्चात संजीव कुमार पिता रामनाथ प्रसाद ,ग्राम बनौता थाना परसा निवासी बताए जाते हैं जबकि दूसरा व्यक्ति नीतीश कुमार पिता दिनेशर महतो ग्राम कोहरा मठिया निवासी हैं के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर अग्रेतर करवाई की जा रही हैं।

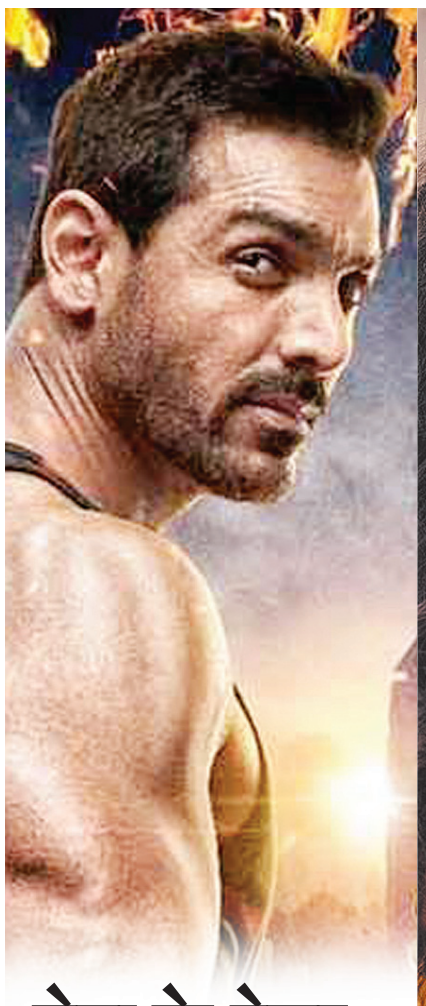

वेदा के ट्रेलर लॉन्च पर जॉन अब्राहम ने खोया अपना आपा

जॉन अब्राहम अभिनीत फिल्म वेदा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर यानी 15 अगस्त को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। आज एक ग्रैंड इवेंट में फिल्म का ट्रेलर रिलीज किया गया। ट्रेलर एक्शन से भरपूर है। फिल्म में जॉन के साथ-साथ शरवरी वाघ भी दमदार अंदाज में नजर आने वाली हैं। हालांकि, इसी बीच जॉन अब्राहम एक बार फिर सुर्खियों में आ गए हैं। अभिनेता हाल ही में वेदा के ट्रेलर लॉन्च पर अपना आपा खो बैठे। जॉन उस समय नाराज हो गए जब उन्हें बताया गया कि उनकी फिल्में दोहराव वाली हैं। उन्होंने लोगों से कहा कि वे सिर्फ ट्रेलर से फिल्म का आंकलन न करें। वेदा के लिए प्रेस कॉन्फ्रेंस में, जॉन को कुछ नया करने के लिए कहा गया, जिससे वह अपना आपा खो बैठे। उन्होंने जवाब दिया, क्या आपने फिल्म देखी है? क्या मैं बुरे प्रश्नों के लिए आपको बेवकूफ बुला सकता हूं। यह बताए जाने के बाद कि ट्रेलर से संकेत मिलता है कि यह उस तरह की एक्शन फिल्में हैं जो वह आमतौर पर करते हैं।

इस पर अभिनेता ने कहा, नहीं मैं तो आपको सिर्फ सीधे कहना चाहता हूं कि ये फिल्म अलग है। मेरे हिसाब से तो यह एक बहुत ही गहन प्रदर्शन है जो मैंने किया है। बेशक आपने अभी तक फिल्म देखी नहीं है। इसके बाद जॉन थोड़ा शांत दिखे और उन्होंने मजाक में कहा, फिल्म देखिये आप, उसके बाद मैं आपका हूं, चाहे आप कुछ भी कहें। लेकिन अगर तुम गलत हो, तो मैं पलट कर तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। वेदा एक युवा लड़की की कहानी है जिसका किरदार शरवरी वाघ ने निभाया है। उनका किरदार उन अत्याचारियों के खिलाफ सामाजिक न्याय चाहता है जिन्होंने जाति और अस्पृश्यता के आधार पर दलित समुदायों पर अत्याचार किया। निखिल आडवाणी द्वारा निर्देशित एक्शन-थ्रिलर में अभिषेक बनर्जी खलनायक की भूमिका में हैं। फिल्म में तमन्ना भाटिया और मौनी रॉय भी कैमियो भूमिका में हैं।

ट्रायथलॉन आयरनमैन रेस में हिस्सा लेंगी सैयामी, ट्रेनिंग के साथ जारी रखेंगी आगामी फिल्म की शूटिंग

बॉलीवुड अभिनेत्री सैयामी खेर जल्द ही सनी देओल की अगली फिल्म जट्ट में नजर आएंगी। इसके साथ ही वह जर्मनी में अपनी आयरनमैन ट्रायथलॉन रेस में हिस्सा लेंगी। अपनी आगामी आयरनमैन ट्रायथलॉन रेस की तैयारी को जारी रखते हुए वह सनी देओल की फिल्म जट्ट की शूटिंग करेंगी। वह इस कठोर ट्रेनिंग के लिए फिल्म की शूटिंग से छुट्टी नहीं ले रही हैं। सैयामी खेर जर्मनी में ट्रायथलॉन आयरनमैन दौड़ की तैयारी के अंतिम चरण की तैयारी करेंगी। इस दौड़ में प्रतिभागियों को 3.86 किमी तैराकी, 180.25 किमी बाइकिंग और 42.20 किमी मैराथन दौड़ पूरी करनी होती है। सैयामी हैदराबाद में अपनी आगामी फिल्म जट्ट के बिजी शूटिंग शेड्यूल के साथ अपने गहन प्रशिक्षण को संतुलित कर रही हैं। वह धीरे-धीरे अपनी तैयारी का समय बढ़ा रही हैं।

अभिनेत्री ने हाल ही में एक बातचीत में कहा, एक अभिनेत्री और एक एथलीट दोनों के रूप में मुझे हमेशा अपनी सीमाओं से आगे बढ़ने का शौक रहा है। ट्रायथलॉन आयरनमैन दौड़ में भाग लेना मेरे लिए एक सपने के सच होने जैसा है। यह दौड़ दुनिया में सबसे अधिक मांग वाली शारीरिक चुनौतियों में से एक है। मैं इसमें अपना सब कुछ देने के लिए दृढ़ संकल्पित हूं। उन्होंने आगे कहा, अपनी ट्रेनिंग के साथ अपने अभिनय करियर को संतुलित करना अविश्वसनीय रूप से फायदेमंद रहा है। मगर जैसे-जैसे दौड़ नजदीक आ रही है, मुझे यह सुनिश्चित करने के लिए और अधिक समय की आवश्यकता है कि मैं पूरी तरह से तैयार हूं। मेरी टीम और फैंस का जबर्दस्त समर्थन रहा है और मैं इसके लिए आभारी हूं। मैं अपनी ट्रेनिंग पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूं।

बॉलीवुड में काम पाने के लिए संघर्ष का मृणाल को मिला फल

मृणाल ने बॉलीवुड के अलावा साउथ की फिल्मों में भी काम किया है। फिल्मों में काम करने से पहले मृणाल कई हिट टीवी शो में भी अपने अभिनय का जलवा बिखेर चुकी हैं। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत साल 2012 में सीरियल मुझसे कुछ कहती....ये खामोशियां से की। इसके बाद वे कई टीवी सीरियल में नजर आईं लेकिन उन्हें कुछ खास पहचान नहीं मिली। इसके बाद जी टीवी के हिट शो कुमकुम भाग्य में नजर आईं और फिर उन्होंने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। टीवी की दुनिया में मशहूर होने के बाद मृणाल ने फिल्मों की तरफ अपना रुख किया। उन्होंने बॉलीवुड में काम पाने के लिए काफी संघर्ष किया और आज उस संघर्ष का फल उन्हें मिल रहा है। मृणाल ने खुद एक इंटरव्यू में बताया था कि शुरुआत में वे कई बार निराश होकर रोने लग जाती थीं। तब उनके माता-पिता उन्हें हौसला देते थे और कहते थे एक दिन तुम दुनिया के लिए मिसाल बनोगी मृणाल।

मृणाल ठाकुर की फिल्मों की बात करें तो जिस 'सुपर 30' में मृणाल के किरदार को दर्शकों ने काफी पसंद किया था। इसके बाद वे जॉन अब्राहम के साथ 'बाटला हाउस' और फिल्म 'तूफान' में वे फरहान अख्तर की पत्नी के रोल में नजर आईं। वे साउथ की फिल्मों का भी हिस्सा रह चुकी हैं। वहीं मृणाल ठाकुर के नेट वर्थ की बात करें तो अभिनेत्री एक लग्जरी लाइफ जीती हैं। सूत्रों की मानें तो मृणाल ठाकुर प्रति फिल्म 2 करोड़ रुपये कमाती हैं और उनकी मासिक आय 60 लाख है। उनकी सालाना आय 7 करोड़ रुपये है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो उनकी कुल संपत्ति लगभग 33 करोड़ है और पिछले कुछ वर्षों में इसमें लगातार वृद्धि हुई है।

कृति खरबंदा ने सिनेमा में अपने 15 साल पूरे किए

अपकमिंग फिल्म रिस्की रोमियो में नजर आने वाली एक्ट्रेस कृति खरबंदा ने सोशल मीडिया पर एक कविता के जरिए अपने पति अभिनेता पुलकित सम्राट से प्यार का इजहार किया है। हाल ही में उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर पति के साथ अपनी एक तस्वीर शेयर की। उन्होंने तस्वीर पर लिखा, नींद आ रही है नींद जा रही है पति कमाल है। कृति और पुलकित ने इस साल मार्च में दिल्ली एनसीआर के आईटीसी ग्रैंड भारत में शादी की थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक उन्होंने अपने मेहमानों के लिए देश के अलग-अलग हिस्सों के व्यंजनों से भरा खास फूड मेन्यू तैयार किया था।

बाद में उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर की, जिसमें एक प्यारा सा नोट भी था। शादी से पहले दोनों ने कुछ सालों तक एक-दूसरे को डेट किया। बता दें कि पुलकित की शादी पहले श्वेता रोहिरा से हुई थी। वर्क फ्रंट के बारे में बात करें तो पुलकित को पिछली बार कॉमेडी फिल्म 'फुकरे 3' में देखा गया था। कृति 'रिस्की रोमियो' में नजर आएंगी जिसमें वह सनी सिंह के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी।

एक्ट्रेस ने हाल ही में सिनेमा में अपने 15 साल पूरे किए हैं। उन्होंने इसके लिए दर्शकों और अपने साथियों के प्रति आभार व्यक्त किया था। उन्होंने लिखा था, मैंने पिछले 15 साल एक कलाकार के रूप में बिताए हैं। पहचान पाने के लिए एक शौक के रूप में जो शुरू हुआ था वह धीरे-धीरे एक जुनून में बदल गया। यह एक ऐसा जुनून था, जिसके बारे में मुझे पता भी नहीं था कि वह मेरे अंदर मौजूद है।

देवरा से लेकर वार 2 तक, इन फिल्मों में साथ आएंगे नॉर्थ और साउथ के सितारे

भारतीय सिनेमा में एकजुटता देखने को मिल रही है। साउथ और नॉर्थ की दूरियां अब खत्म हो रही हैं। बीते कुछ समय से साउथ फिल्मों में बॉलीवुड स्टार्स का दबदबा देखने को मिल रहा है। वहीं, अब हिंदी फिल्मों में भी साउथ स्टार्स की धाक देखने को मिल रही है। इतना ही नहीं हिंदी बेल्ट की फिल्में अब साउथ में धमाल मचा रही हैं और साउथ की फिल्मों को भी हिंदी दर्शकों का बेशुमार प्यार मिल रहा है। आने वाले दिनों में भी यह सिलसिला जारी रहने वाला है।

जूनियर एनटीआर की 30वीं फिल्म देवरा को लेकर प्रशंसकों का उत्साह सातवें आसमान पर है। फिल्म के निर्देशन की कमान कोरताला शिवा ने संभाली है। इस मूवी से बोनी कपूर और दिवंगत अभिनेत्री श्रीदेवी की बेटी जान्हवी कपूर अपना साउथ डेब्यू करने जा रही हैं। इस फ्रेश जोड़ी को सिल्वर स्क्रीन पर देखने के लिए साउथ और नॉर्थ दोनों फिल्मों के दर्शक बेताब हैं। साउथ सुपरस्टार यश अपनी ब्लॉकबस्टर फिल्म केजीएफ और केजीएफ 2 की अपार सफलता के बाद इसकी अगली कड़ी केजीएफ 3 को लेकर हेडलाइंस में हैं। खबरों की मानें तो पैन इंडिया स्टार साल 2025 में केजीएफ 3 की शूटिंग शुरू करेंगे और यह मूवी साल 2026 में सिनेमाघरों में दस्तक देगी। रिपोर्ट्स की मानें तो केजीएफ 3 में 70 के दशक का अंत और 80 के दशक की शुरुआत दिखाई जाएगी। इसमें बॉलीवुड स्टार्स रवीना टंडन और संजय दत्त भी नजर आएंगे। बॉलीवुड अभिनेता संजय कपूर की बेटी शनाया कपूर भी साउथ इंडस्ट्री में कदम रखने के लिए तैयार हैं। शनाया साउथ अभिनेता मोहनलाल की फिल्म वृषभ के साथ साउथ फिल्मों में अपना डेब्यू करने जा रही हैं। शनाया कपूर सबसे पॉपुलर स्टारकिड्स में से एक हैं। वह सोशल मीडिया पर काफी सक्रीय रहती हैं। शनाया के डेब्यू के लिए उनके प्रशंसक काफी ज्यादा उत्साहित हैं। ऋतिक रोशन की स्पाई यूनिवर्स की फिल्म वॉर 2 अपने एलान के बाद से ही सुर्खियों में है। फिल्म का एलान करते हुए यह बताया गया कि इसमें ऋतिक रोशन के साथ साउथ सुपरस्टार जूनियर एनटीआर भी नजर आएंगे। वॉर 2 जूनियर एनटीआर की डेब्यू फिल्म होगी। साउथ समेत नॉर्थ पट्टी के लोग भी जूनियर एनटीआर को बॉलीवुड फिल्म में देखने के लिए काफी ज्यादा उत्साहित हैं।

सोच-समझकर करती हूं एंडोर्समेंट

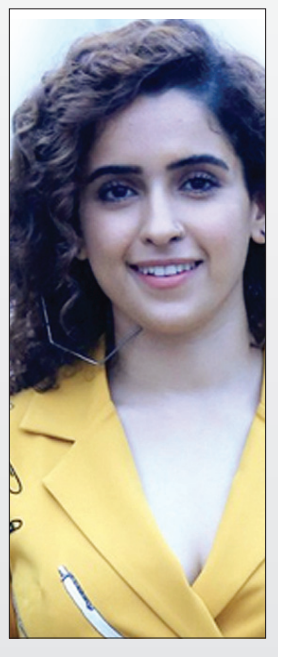

सान्या मल्होत्रा काफी समय से फिल्म इंडस्ट्री का हिस्सा हैं। अमूमन सिलेब्रिटीज पर इस तरह के इल्जाम लगते हैं कि वे ऐसे प्रॉडक्ट्स का ऐड करते हैं, जिनको वे खुद इस्तेमाल नहीं करते। लेकिन उनसे प्रभावित होकर फैंस प्रॉडक्ट को खरीद लेते हैं। प्रोबायोटिक मिल्क याकुल्ट के नए फ्लेवर को लॉन्च करने राजधानी पहुंची सान्या से जब हमने इस बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया, मैं इस प्रॉडक्ट को काफी अरसे से इस्तेमाल कर रही हूं। मैं सोशल मीडिया पर पहले से ही इसके बारे में पोस्ट करती रहती हूं। मैं दूसरे किसी प्रॉडक्ट को एंडोर्स करते वक्त भी इस बात का ध्यान रखती हूं कि मैं अपने फैंस को किसी ऐसे प्रॉडक्ट को खरीदने के लिए ना कहूं, जिससे मैं पूरी तरह वाकिफ नहीं हूं। मेरे लिए यह बेहद महत्वपूर्ण है कि अगर मेरे वैल्यूज किसी ब्रैंड के साथ नहीं मैच करते हैं, तो मैं उसके साथ जुड़ने को सही नहीं मानती। उन्होंने आगे बताया, इसके चलते मैंने कई प्रोडक्ट्स के साथ जुड़ने से इनकार कर दिया। मेरी इस सोच के चलते मेरी टीम भी मुझसे खुश नहीं रहती। दरअसल, बतौर सिलेब्रिटी आपके पास अलग अलग तरह के प्रॉडक्ट्स के ऐड के ऑफर आते हैं, लेकिन मैं इन चीजों को लेकर काफी सोच विचार करती हूं। शुरुआत में कुछ एंडोर्समेंट करने के बाद मुझे लगता था कि ये मुझे नहीं करना चाहिए था। अब मुझे लगता है कि आप उम्र के साथ इन चीजों को और ज्यादा सीखते हो।

बॉलीवुड को हो क्या गया है? आप लोग हीरो बनना भूल गए

हैं बॉलीवुड बनाम साउथ सिनेमा की बहस आए दिन चलती है। एक बार फिर इस मसले ने ध्यान खींचा है। एक वजह तो ये है कि इस साल बॉलीवुड फिल्मों का खास हल्ला नहीं हुआ है। इनके मुकाबले साउथ सिनेमा की फिल्मों का प्रदर्शन ज्यादा बेहतर रहा है। बीते वर्ष जवान, गदर और एनिमल जैसी हिट फिल्मों के साथ बॉलीवुड का बोलबाला रहा, लेकिन इस बार फिर गेंद साउथ इंडस्ट्री के पाले में है। मुख्य रूप से तेलुगु भाषी फिल्म कल्कि 2898 एडी अभी तक इस साल की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बन गई है। साउथ और हिंदी सिनेमा की बहस के बीच अक्सर दोनों इंडस्ट्री के सितारों की टिप्पणियां भी सामने आती रहती हैं। बॉलीवुड को लेकर साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन का कहना है कि आखिर बॉलीवुड को हो क्या गया है? फिल्म निर्माता निखिल आडवाणी ने हाल ही में इस बात का खुलासा किया है। निखिल आडवाणी ने गलाटा इंडिया से बातचीत में खुलासा किया कि अल्लू अर्जुन ने एक बार एक महत्वपूर्ण मुद्दे की ओर इशारा किया था, जिसे वे आज बॉलीवुड में देखते हैं। फिल्म निर्माता ने बताया कि अल्लू से जब वे मिले थे तो एक्टर ने कहा था, जानते हो बॉलीवुड के साथ दिक्कत क्या है? आप सभी भूल गए हैं कि हीरो कैसे बनना है?। निखिल आडवाणी ने अल्लू अर्जुन की बातों को और विस्तार से बताते हुए कहा कि दक्षिण भारतीय फिल्मों ने वीरता की मूल भावनाओं को सफलतापूर्वक उभारा है, यहां तक कि पानी की सिंचाई जैसे प्रतीत होने वाले सांसारिक विषयों पर भी ध्यान केंद्रित किया है। दक्षिण भारतीय इंडस्ट्री इन विषयों को शानदार एक्शन और वीरता के पलों के साथ पेश करती है, जिससे वे दर्शकों के साथ गहराई से जुड़ जाते हैं। दिलचस्प बात यह है कि अल्लू अर्जुन ने अपने पिछले इंटरव्यू में बॉलीवुड की खूब तारीफ की है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विभिन्न भारतीय फिल्म उद्योगों के अभिनेता एक-दूसरे के काम के प्रति सम्मान रखते हैं और वे भाई-भाई हैं। उन्होंने दक्षिण सिनेमा पर बॉलीवुड के प्रभाव को स्वीकार किया और कहा कि बॉलीवुड की हालिया चुनौतियों के बावजूद, इसने छह दशकों से भी अधिक समय तक बेहतरीन सिनेमा का निर्माण किया है।

तेलुगु एक्ट्रेस श्रीलीला ने छोड़ दी वरुण धवन की फिल्म, प्रोड्यूसर ने कहा- अभी फिल्म की कास्टिंग चल रही है

तेलुगु एक्ट्रेस श्रीलीला के बारे में खबरें हैं कि उन्होंने वरुण धवन स्टारर एक अपकमिंग कॉमेडी फिल्म छोड़ दी है। कहा जा रहा है कि श्रीलीला के बिना फिल्म का पहला शेड्यूल पूरा कर लिया गया है। अब इन खबरों पर फिल्म के प्रोड्यूसर रमेश तौरानी ने सफाई दी है। उन्होंने टिप्स फिल्म्स की तरफ से स्टेटमेंट जारी करके कहा, हमने अभी किसी को अप्रोच ही नहीं किया है। हम अब भी फिल्म की कास्टिंग पूरी करने की प्रोसेस में हैं। हम जैसे ही किसी का नाम तय कर लेंगे वैसे ही ऑफिशियल अनाउंसमेंट कर देंगे। तब तक हम ऑडियंस से गुजारिश करते हैं कि वो किसी भी तरह की अफवाहों पर भरोसा न करें। श्रीलीला की बात करें तो वो कम समय में ही तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में पहचान बना चुकी हैं। 2019 से 2023 तक उन्होंने दस हिट फिल्में दी हैं जिनमें धमाका, स्कंद, आदिकेशव और गुंटूर कारम शामिल हैं। श्रीलीला 22 साल की हैं।

डेविड धवन हैं डायरेक्टर

इस फिल्म को वरुण के पिता डेविड धवन डायरेक्ट कर रहे हैं। वरुण के साथ 2 अन्य हीरो भी अहम किरदारों में नजर आने वाले हैं। इनके साथ दो एक्ट्रेसेस भी फिल्म में नजर आएंगी। रिपोर्ट के अनुसार इस फिल्म को अगले साल के आखिर में या 2025 के शुरुआती महीनों में रिलीज किया जा सकता है।

संक्षिप्त खबरें

सात नामजद अभियुक्त में से दो को पुलिस ने किया गिरफ्तार

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। पुलिस सूत्रों के अनुसार अभिनंदन सिंह उर्फ शैंपू सिंह की निर्मम हत्या के मामले में मृतक के भाई के आवेदन पर शामपुर थाने की पुलिस ने 7 लोगों को नामजद बनाया है प्राप्त जानकारी के अनुसार जिसमें पुलिस ने दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है हालांकि श्यामपुर पुलिस अभी कोई खुलासा नहीं कर रही है उसने एक महिला और एक पुरुष को गिरफ्तार किया है पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार मामले में सरोज मंडल और सरोजनी देवी को श्यामपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जो पति-पत्नी है वहीं श्यामपुर थाना अध्यक्ष नीतीश कुमार ने बताया कि शुक्रवार को इस हत्याकांड मामले में खुलासा किया जाएगा प्लीज कॉन्फ्रेंस में हत्या से जुड़ी जानकारी और दोनों अभियुक्त की गिरफ्तारी कहां और किस परिस्थिति में की गई इसकी जानकारी साझा की जाएगी।

हाजीपुर स्टेशन सलाकार समिति की बैठक में सदस्यों ने दिए कई सुझाव

हाजीपुर। हाजीपुर स्टेशन के स्टेशन प्रबंधक कक्ष में स्टेशन सलाहकार समिति की बैठक हुई। बैठक में स्टेशन प्रबंधक हाजीपुर कुमार राकेश रंजन, मुख्य वाणिज्य निरीक्षक धनंजय कुमार, स्टेशन सलाहकार समिति सदस्य प्रेम सिंह, सदस्य नन्द किशोर सिंह, सदस्य संजीव चौरसिया, सदस्य हिमांशु शेखर भाष्करम थे। बैठक के दौरान स्टेशन सलाहकार समिति के माननीय सदस्यों द्वारा कई सुझाव दिया गया। इनमें गाड़ी संख्या 12423/24 (राजधानी एक्स) 12487/88 (सीमांचल एक्स) 12505/06 (नॉर्थ ईस्ट) के ठहराव, हाजीपुर से पटना के बीच 06.00 बजे मेमू डेमू चलाने, मुख्य गेट के पास पार्किंग को अन्यत्र जगहों पर शिफ्ट करने, मेन गेट के पास अतिक्रमण को हटाने, स्टेशन पर चल रहे निर्माण कार्य में तेजी लाने, सकुलेटिंग एरिया में अप्रोच रोड का चौड़ीकरण करने, मुख्य द्वार पर प्रवेश करते समय काफी बदबू रहती हैं। वहाँ शौचालय का अविलंब निर्माण कार्य कराने, प्लेटफॉर्म से 01 का फर्श बदलने सहित अन्य सुझाव थे।

सीवीआरयू विश्वविद्यालय में 3डी प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी पर विशेषज्ञ व्याख्यान

हाजीपुर। डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय वैशाली बिहार, ने एक विशेष विशेषज्ञ व्याख्यान और संवाद सत्र का आयोजन किया, जिसमें नई पीढ़ी की 3डी प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यक्रम में छात्रों और शिक्षकों को 3डी प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी के नवीनतम विकासों से परिचित कराया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ एम एल गौर ने उद्घाटन भाषण में 3डी प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी की महत्ता पर प्रकाश डाला और बताया कि यह प्रौद्योगिकी कैसे विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति ला सकती है। उन्होंने यह भी बताया कि 3डी प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी न केवल विज्ञान और इंजीनियरिंग में, बल्कि चिकित्सा, वास्तुकला, और कला जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। डॉ योगी गांधी, पीएच.डी. - सीईओ - यूएस इंस्टीट्यूट ऑफ 3डी टेक्नोलॉजी ओरिंडा, कैलिफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने विश्व स्तर पर 40 से अधिक वर्षों का अनुभव का लाभ डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय के सभी प्रोफेसरों, तकनिकी अधिकारीयों, विषय विशेषज्ञों, विभिन्न संकायों के छात्र - छात्राओं को साझा किया। कार्यक्रम में यूएस इंस्टीट्यूट ऑफ 3डी टेक्नोलॉजी के तहत देश के ७० से भी अधिक विश्व विद्यालयों में इस तरह के प्रयासों से भी अवगत कराया गया एवं बिहार जैसे राज्य में इस 3डी प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी की अपार संभावनाओं को परिलक्षित किया गया।

शाहिद जवान रघुवंश कुमार के प्रतिमा का अनावरण

बिदुपुर। प्रखंड के ताजपुर खरिका निवासी बिहार एसटीएफ के प्रथम शाहिद जवान रघुवंश कुमार के प्रतिमा का अनावरण आज खरिका शिव मंदिर के निकट समाजसेवी अरुण सिंह और लोजपा रामविलास पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश रौशन किए। प्रतिमा अनावरण समारोह की अध्यक्षता ग्रामीण युवा समाजसेवी सुरजीत सिंह तथा संचालन भाजपा पूर्व मंडल अध्यक्ष टिंकज कुमार सिंह किए। समारोह में सैंकड़ों ग्रामीण आस पास के बुद्धिजीवी लोग शामिल होकर उनके प्रतिम पर माल्यार्पण किए। जे. सी. 160 शाहिद रघुवंश कुमार बिहार पुलिस सेवा में 1999 में योगदान दिए थे। पटना जिला के बाढ़ थाना क्षेत्र अंतर्गत कुख्यात अपराधी गिरोह से करीब पांच घंटे हुए मुठभेर में रघुवंश कुमार अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपराधियों से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए। एसटीएफ के गठन 1998 के बाद बिहार एसटीएफ के प्रथम शाहिद श्री रघुवंश कुमार बचपन से ही साहसी थे। उनके ग्रामीण साथियों ने उक्त जानकारी दी। इस अवसर पर मुखिया प्रतिनिधि नरेश ठाकुर, सरपंच प्रतिनिधि राजाराम कुमार, प्रिंस कुमार, अजय सिंह नम आंखों से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित किए।

प्रधानमंत्री सहित मुख्यमंत्री आवास योजना भ्रष्टाचार के कारण नहीं कर पा रहा है लक्ष्य को पूरा

प्रात: किरण/ सदानंद झा बिरही

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। जिले में मुख्यमंत्री आवास योजना दलालों अधिकारियों और पंचायत जनप्रतिनिधियों के भ्रष्टाचार और लापरवाही से लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सकता है वहीं आवास सहायता योजना का लक्ष्य भी पूरा नहीं हो पाया है। जिला उप विकास आयुक्त कार्यालय सूत्रों के अनुसार मुंगेर जिले को राज्य सरकार द्वारा मुख्यमंत्री आवास योजना में 2566 निर्माण का लक्ष्य दिया गया लेकिन अभी तक मात्र 1430 आवास का निर्माण हो पाया है वहीं मुख्यमंत्री आवास सहायता योजना के जिले में 1064 लक्ष्य का अधिकारियों की लापरवाही व भ्रष्टाचार के कारण 546 आवास का मरम्मत हो पाया है। मुख्यमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों ने बताया कि जिले के सभी प्रखंडों में सभी पंचायतों में दलाल लगा रहता है और लाभुकों को भय दिखाकर प्रति लाभुक आवास सहायकों को 10000 प्रथम भुगतान के बाद लाभुकों से खाता से निकलवा कर ले लिया करते हैं। लाभुकों ने बताया कि दलालों द्वारा कहा जाता है कि अगर पैसा 10000 नहीं दोगे तो दूसरा किस्त का भुगतान नहीं किया जाएगा। दलाल और आवास सहायक अकाउंट को इस गरीबों का क्या हाल है या तो गरीबों के घर पर जाने पर पता चलता है। लाभुकों का कहना है कि अगर राज्य सरकार मुख्यमंत्री आवास योजना की जांच सीबीआई से कराकर देखेगा तो कई आवास सहायक और कई अधिकारियों को जेल की हवा खानी पड़ सकती है। लाभुक बताते हैं की आवास योजना मुख्यमंत्री आवास योजना हो या फिर प्रधानमंत्री आवास योजना हो भ्रष्टाचार इस तरह की आवास चयनित लाभुकों को डरा धमकाकर और दलाल एवं आवास सहायकों पंचायत जनप्रतिनिधियों द्वारा गरीबों का भया दोहन व शोषण किया जा रहा है। लाभुकों का आरोप है कि जो पैसा लाभुकों से आवास सहायक पंचायत जनप्रतिनिधि दलालों के द्वारा लिया जाता है वह राशि गरीब लाभुक आवास के पराक्रम से ही घटना है जिससे भवन निर्माण पूरा करने उन गरीब लोगों को मकान पूरा करने के लिए महाजनों से 05 रुपये सैकड़ा कर्ज लेकर पूरा करना पड़ता है और इस गरीब को कम के सूद के दलदल में फासते चले जाते हैं। सूत्रों ने बताया की हवेली खड़कपुर में 799 लक्ष्य था पूर्ण 443 हुआ बाकी 356 अपूर्ण अवस्था में है। टैटिया बंम्बर में लक्ष्य 273 पूर्ण 132 अपूर्ण 141 असरगंज प्रखंड का लक्ष्य 171 पूर्ण 90 धरहरा लक्ष्य 309 पूर्ण 188 अपूर्ण 112 बरियारपुर प्रखंड से 281 पूर्ण 186 अपूर्ण 95 जमालपुर प्रखंड लक्ष्य 267 पूर्ण 114 अपूर्ण 153 मुंगेर सदर लक्ष्य 204 पूर्ण 137 अपूर्ण 153 संग्रामपुर लाख 112 50 पूर्ण 62 अपूर्ण तारापुर प्रखंड इलेक्ट्रिक 159 पूर्ण 90 का पूर्ण 69 मुख्यमंत्री आवास योजना में 1136 अपूर्ण आवास आज भी है जिस पर अधिकारियों ने ना तो किसी लाभुकों को पूर्ण करने का नोटिस जारी किया है ना ही इन लोगों के खिलाफ प्राथमिक की ही दर्ज की है वहीं मुख्यमंत्री सहायता योजना के तहत लक्ष्य था हवेली खड़गपुर का 216 पूर्ण 115 अपूर्ण अवस्था में है मुंगेर सदर 91 पूर्ण 83 अपूर्ण बरियारपुर 161 पूर्ण 82 अपूर्ण से 79 असरगंज लक्ष्य 45 पूर्ण 21 अपूर्ण 24 धारा लक्ष्य 142 पूर्ण 70 अपूर्ण 72 जमालपुर 176 पूर्ण 71 105 अपूर्ण संग्रामपुर लक्ष्य 63 पूर्ण तारापुर प्रखंड लक्ष्य 76 पूर्ण 16 अपूर्ण टेटिया बम्बर प्रखंड लक्ष्य 94 पूर्ण 38 अपूर्ण 56 असरगंज प्रखंड लक्ष्य 45 पूर्ण 21 अपूर्ण 24 पूरे जिले में दलाल अधिकारियों और आवास सहायकों जनप्रतिनिधियों की लापरवाही और भ्रष्टाचार के कारण यह सरकारी आंकड़े बता रहे हैं की विभागीय पदाधिकारी की उदासीनता और भ्रष्टाचार में इन गरीबों का भाया दोहन शोषण योजनाओं के जरिए किया जा रहा है। मुंगेर जिले के डीसी अजीत कुमार सिंह ने मुख्यमंत्री आवास योजना की चाल धीमी है राशि लेकर मकान नहीं बनाने वाले लाभुकों पर कार्रवाई होने की बात कहते हैं लेकिन यह उप विकास कार्यालय के संचिकाओं में ही दबी पड़ी रह जाती है। क्योंकी इस योजना में व्यापक भ्रष्टाचार और मनमानी ही हुआ है लाभुकों ने बिहार के मुख्यमंत्री से योजनाओं की जांच उच्च स्तरीय करने की मांग की है।

रेल निर्माण कारखाना संघर्ष मोर्चा ने पूर्व रेलवे महाप्रबंधक को ज्ञापन सौंपा

प्रात: किरण ब्यूरो

मुंगेर (बिहार)। रेलवे महाप्रबंधक मिलिंद के देउस्कर अपने विंडो इंस्पेक्शन के दौरान जमालपुर मॉडल स्टेशन पहुंचा और निरीक्षण किया। जहां रेलवे के सवालों को लेकर वर्षो से संघर्षरत जमालपुर रेल निर्माण कारखाना संघर्ष मोर्चा में शामिल विभिन्न दलों के नेताओं ने मोर्चा के संयोजक सह सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव के साथ राजद के प्रधान महासचिव पंकज यादव वीआईपी के प्रदेश उपाध्यक्ष जफर अहमद बसपा के जिला र कृष्णानंद राहुल आप के जिला अध्यक्ष दिनेश कुमार सिंह जाप के जिला अध्यक्ष पप्पी कुमार उर्फ पप्पू यादव रविकांत झा सहित अन्य नेताओं ने अपने 17 सूत्री मांगों का ज्ञापन सौंपा जिसमें रेलवे कारखाना को निर्माण का दर्जा जमालपुर कारखाना को पूर्व मध्य रेलवे में शामिल एफ ओ बी के माध्यम से पूर्व एवं पश्चिम दिशा को जोड़कर स्टेशन पर उतारने वाई लेग हॉस्पिटल सफियाबाद हॉल्ट स्टेशन के पूर्वी क्षेत्र के तरफ मुख्य द्वार एवं टिकट काउंटर सहित अन्य मांगे शामिल थी ज्ञापन सौंपने के दौरान मोर्चा के संयोजक सह जिला अध्यक्ष पप्पू यादव ने कहा की अधिकारी आते हैं और आश्वासन का घुट पिलाते हैं और निकल जाते हैं लेकिन अब अगर हमारे कारखाना के विकास को पंख नहीं लगेगा तो ठप्प होगा रेलवे लाइन वहीं जीएम ने मोर्चा के नेताओं का आश्वस्त करते हुए कहा कि मोर्चा की हर मांग हमारी प्राथमिकता है।

आपकी एक मांग हॉस्पिटल पर हम लोग बेहद गंभीर है एक सुपर स्पेशलिटी अस्पताल जल्द ही जमालपुर के रेलकर्मी को मिलेगा और अन्य मांग भी हमारी प्राथमिकता में रहेगी। मौके पर मनोज क्रांति अमर शक्ति दिनेश साहू सत्यजीत पासवान राजकुमार कुणाल सहित अन्य लोग शामिल थे।

पुलिस अधीक्षक ने किया जमालपुर थाना का निरीक्षण बेहतर पुलिसिंग और बेहतर व्यवहार की दी नसीहत

प्रात: किरण संवाददाता

मुंगेर। मुंगेर के पुलिस अधीक्षक सैयद इमरान ने शुक्रवार को आदर्श थाना जमालपुर का वाचन निरीक्षण किया इस दौरान उन्होंने बेहतर पुलिसिंग करने और थाना पहुंचने वाले लोगों के साथ बेहतर व्यवहार करने की नसीहत दी इसके साथ ही पूरे थाना परिसर की साफ सफाई एवं अन्य व्यवस्था का मूल्यांकन किया। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि मुख्यालय के निर्देश के आलोक में सभी थाना का निरीक्षण किया जाना है इस सिलसिले में जिला मुख्यालय के विभिन्न पदाधिकारी को जिम्मेदारी दी गई है जबकि स्वयं वह जमालपुर थाना और बरियारपुर थाना की देखरेख करेंगे उन्होंने बताया कि निरीक्षण के क्रम में विभिन्न रजिस्टर में त्रुटि पाई गई जिसे सुधारने का आदेश दिया गया इसके साथ ही जमालपुर को आदर्श थाना का स्टेटस मिला हुआ है इसलिए यहां पर सब कुछ आदर्श होना चाहिए उन्होंने गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की जानकारी एक बोर्ड पर डिस्प्ले करने के लिए बोर्ड लगाने निर्देश दिया किसी प्रकार महिला हेल्प डेस्क के लिए बड़ा बोर्ड लगाकर डिस्प्ले करने को कहा महिला हेल्प डेस्क पर महिला प्रभारी का मोबाइल नंबर भी डिस्प्ले किया जाना आवश्यक होगा बाद में उन्होंने बताया कि निरीक्षण के क्रम में उन्होंने वारंट कुर्की निष्पादन की स्थिति का जायजा लिया महिला हेल्प डेस्क की स्थिति का निरीक्षण किया इसके अतिरिक्त 112 का जो वाहन है और उसे पर जो पदाधिकारी और कांस्टेबल हैं वह सही रूप से कम कर रहे हैं या नहीं इसका भी मूल्यांकन किया गया उन्होंने बताया कि इसके अतिरिक्त जो मुंगेर जिला में बीट पुलिसिंग आरंभ किया गया है उसके अंतर्गत बीट ऑफीसर अलग-अलग बीट पर जो काम करना आरंभ किए हैं उनकी स्थिति क्या है और वे लोग किस प्रकार से कम संपादित कर रहे हैं उसका भी निरीक्षण किया गया इसके अतिरिक्त थाना की साफ सफाई और रखरखाव का भी निरीक्षण किया गया जमालपुर थाना में और इंप्रूवमेंट लाने की आवश्यकता है।

बरियारपुर मुख्य बाजार को कराया जा रहा अतिक्रमण मुक्त

प्रात: किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)। बरियारपुर प्रखंड के मुख्य सड़क को चौड़ीकरण निर्माण में आ रही बाधाओं को दूर करने के लिए सड़क को अतिक्रमण मुक्त कराया जा रहा है। सड़क अतिक्रमण मुक्त कराए जाने से अतिक्रमण करनेवाले के बीच हड़कंप मच गया है। जबकि अंचल अधिकारी रवीना गुप्ता के द्वारा 28 जुलाई तक अतिक्रमण मुक्त करने के लिए अतिक्रमणकारी को नोटिस भी दिया गया था परंतु किसी ने भी सड़क मार्ग को अतिक्रमण मुक्त नहीं किया था उसे अतिक्रमण मुक्त करने के लिए और तीन दिन का समय दिया साथ ही साथ लाउडस्पीकर से बुधवार को प्रचार भी करवा दिया गया था कि जो स्वयं सड़क मार्ग को अतिक्रमण मुक्त नहीं करेंगे उनका मकान शुक्रवार को जेसीबी से तोड़कर सड़क मार्ग को अतिक्रमण मुक्त करवाया जाएगा अतिक्रमण मुक्त करवाने के लिए जिला से आई पुलिस बल के साथ ब्लॉक मोड़ से बरियारपुर बाजार के बीच अतिक्रमण मुक्त करवाया जा रहा है बरियारपुर क्षेत्र के अंतर्गत एनएच मार्ग को अतिक्रमण मुक्त करवाने में कई दिनोंका समय लग सकता है अब देखना यह है कि एक दिन ही अतिक्रमण मुक्त अभियान चला कर बंद हो जाती है या आगे भी अतिक्रमण मुक्त अभियान जारी रहेगी।

25हजार का इनामी अपराधी विकास को पुलिस ने किया गिरफ्तार

हाजीपुर। वैशाली पुलिस ने कई जिलों का आतंक और 25हजार का इनामी अपराधी को गिरफ्तार करने में सफलता पाई है। वैशाली एसपी हरिकिशोर राय ने प्रेसवार्ता कर जानकारी दिया कि सूचना प्राप्त हुई की कुछ अपराधी गोरौल थाना क्षेत्र में घूम रहे हैं। जिस पर महुआ एसडीपीओ के नेतृत्व में टीम गठित किया गया। गोरौल थाना अध्यक्ष और डीआइओ की टीम द्वारा वहां छापामारी किया गया। वेलवर जाने वाली पक्की सड़क से छापेमारी कर दो अपराधी को गिरफ्तार किया गया है। पकड़ाए व्यक्ति के तलाशी के क्रम में विकास कुमार के पास से एक लोडेड पिस्तौल जिसके मैगजीन खोलने पर एक जिंदा गोली बरामद किया गया है। बरामद मोटरसाइकिल एवं हथियार का कागजात मांगने पर उक्त व्यक्ति द्वारा कोई कागज प्रस्तुत नहीं किया गया। पकड़े दोनों व्यक्तियों से अवैध हथियार लेकर घूमने के संबंध में पूछने पर बताया कि सुनसान रोड या जगह पर राहगीरों को हथियार का भय दिखाकर लूटपाट की घटना के लिए निकले थे। विकास कुमार द्वारा महिसौर थाना क्षेत्र में 7/12/23 को शराब के पैसे के बंटवारे को लेकर गोली मारकर मैनेजर सनी की हत्या की गई थी। पकड़े गए अपराधी विकास कुमार पर समस्तीपुर और वैशाली में लूट रंगदारी हत्या के कई मामले दर्ज है।

बरहरवा से किऊल तक तीसरी और चौथी रेल लाइन सर्वे कार्य को मिली स्वीकृति : महाप्रबंधक

प्रात: किरण संवाददाता

मुंगेर/जमालपुर। बरहरवा से किऊल तक तीसरी और चौथी लाइन सर्वे का कार्य सैंक्शन हो चुका है और उसे पर काम किया जा रहा है इस बात की जानकारी पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक मिलिंद देवस्कर ने शुक्रवार को जमालपुर स्टेशन पर दी. वह यहां जमालपुर स्टेशन का वार्षिक निरीक्षण के क्रम में पहुंचे थे।

उन्होंने बताया कि भागलपुर से जमालपुर के बीच भी तीसरी और चौथी लाइन का लोकेशन सर्वे सैंक्शन हो चुका है जमालपुर और रतनपुर रेलवे स्टेशनों के बीच तीसरी और चौथी रेलवे लाइन को लेकर अलग से सुरंग का निर्माण भी किया जाएगा एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि मालदा रेल मंडल के किऊल इंड पर रामपुर हॉल्ट और झाझा लाइन के महेश लेटा बंशीपुर के बीच नया वायलेग का निर्माण कार्य पूर्व मध्य रेलवे के क्षेत्राधिकार की बात है पूर्व रेलवे का इससे कोई कनेक्शन नहीं है।

जमालपुर कारखाना का बढ़ाया जा रहा कार्यभार : उन्होंने बताया कि रेल इंजन कारखाना जमालपुर वर्तमान में 600 वैगन का पीओएच करता है जमालपुर कारखाना को जीवित बनाए रखने के लिए यहां कार्यभार में बढ़ोतरी की जा रही है और कारखाना को 800 बैगन के पीओएच का कार्यभार दिया गया है उन्होंने कहा कि रेलवे में लाखों वैगन बढ़ते जा रहे हैं रेलवे में लोडिंग का काम भी बढ़ रहा है वर्ष 2030 तक रेलवे को 3000 मिलियन टन लोडिंग का लक्ष्य है ऐसे में अधिक से अधिक रेलवे वैगन के पीओएच करने की आवश्यकता है यदि जमालपुर वर्कशॉप की क्षमता नहीं बढ़ेगी तो फिर हम लोग लोडिंग का काम पूरा नहीं कर पाएंगे इसलिए जो टारगेट है जमालपुर कारखाना के लिए उसे हम लोग और बढ़ा रहे हैं।

डीजल शेड जमालपुर को भी और मिलेंगे इलेक्ट्रिक लोको : डीजल शेड के बारे में पूछे गए एक प्रश्न के जवाब में महा प्रबंधक ने बताया कि रेलवे का इलेक्शन जल्दी हो गया इसकी तुलना में इलेक्ट्रिक लोगों का निर्माण नहीं हो पाया है हमारे यहां अभी भी डीजल इंजन है हमने 40 से 50 इलेक्ट्रिक इंजन रेलवे बोर्ड से मांगे हैं प्रत्येक वर्ष इलेक्ट्रिक लोको वर्कशॉप में 1000 से 1200 इलेक्ट्रिक लोको बना रहे हैं ऐसे में जैसे ही इलेक्ट्रिक लोको मिलेंगे वैसे ही जमालपुर के डीजल शेड को भी इलेक्ट्रिक लोको उपलब्ध करा दिया जाएगा।

रेल इंजन कारखाना जमालपुर में नहीं बनेंगे 175 टन क्रेन : रेल इंजन कारखाना जमालपुर में 175 टन हाइड्रोलिक क्रेन का निर्माण कार्य अब तक आरंभ नहीं हो पाने के प्रश्न के एक जवाब में महाप्रबंधक ने स्पष्ट बताया कि रेल इंजन कारखाना जमालपुर में फिलहाल 175 टन क्रेन का निर्माण नहीं किया जाएगा उन्होंने कहा कि भारतीय रेल में सभी जगह 140 टन क्रेन से कम लिया जा रहा है और 140 टन क्रेन ही भारतीय रेल के लिए उपयोगी साबित हो रहा है इसलिए जमालपुर कारखाना में 175 टन क्रेन का निर्माण नहीं होगा

तीसरी बार चौथी रेल लाइन निर्माण के साथ जमालपुर में बढ़ेगी प्लेटफार्म की संख्या : महा प्रबंधक ने बताया कि जब जमालपुर में तीसरी और चौथी रेल लाइन का काम आरंभ होगा तब निश्चित रूप से जमालपुर में दो नए प्लेटफार्म बनाए जाएंगे फिलहाल प्लेटफार्म की कमी के कारण रेल ट्रैफिक को प्रभावित नहीं होने दिया जाएगा इस मौके पर मालदा रेल मंडल के डीआरएम मनीष कुमार गुप्ता तथा रेल इंजन कारखाना के मुख्य कारखाना प्रबंधक विनय प्रसाद बरनवाल उपस्थित थे।

स्वतंत्रता सेनानी अयोध्या प्रसाद सिंह की याद में मुंगेर में बफ्टा द्वारा काव्य गोष्ठि, गीत संगीत व देश भक्ति कार्यक्रम

प्रात: किरण ब्यूरो

मुंगेर। वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय अयोध्या प्रसाद सिंह की याद में मुंगेर के राजवीर हाउस स्थित बफ्टा कार्यालय में शुक्रवार को काव्य गोष्ठि, गीत संगीत और देश भक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बिहार फिल्म ऐंड टेलीविजन आर्टिस्ट एसोसिएशन ट्रस्ट रजिस्टर्ड के अंतर्गत हुए इस प्रोग्राम में महान स्वतंत्रता सेनानी को याद किया गया। उनके पौत्र हीरो राजन कुमार सहित इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने अयोध्या प्रसाद सिंह की तस्वीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित करके उस महान स्वतंत्रता सेनानी की कुबार्नी को याद किया। राजन कुमार अपने दादा फ्रीडम फाइटर अयोध्या प्रसाद सिंह के कार्यों को याद करते हुए भावुक हो गए। उन्होंने बताया कि 05 अगस्त को कलाग्राम टेटिया बम्बर मुंगेर में भी उनकी याद में कार्यक्रम किया जाएगा वहीं 10 अगस्त को बिहार की राजधानी पटना में भी कार्यक्रम होगा। अपनी जान दांव पर लगाकर और अपने परिवार से दूर रहकर भी और आजादी मिलने के बाद भी अयोध्या प्रसाद सिंह देश के लोगों के लिए लगातार काम करते रहे। इस कार्यक्रम में उनकी तस्वीर पर फूलमाला चढ़ा कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। स्वतंत्रता सेनानी अयोध्या प्रसाद सिंह के नक्शे कदम पर चलते हुए उनके पौत्र हीरो राजन कुमार हमेशा "देश सर्वोपरि है" के सिद्धांत पर काम करते रहे हैं और देश को जोड़ कर चलते हैं। उन्होंने कई बार भारत की कला व संस्कृति को दुनिया के सामने रिप्रेजेंट किया है। इसलिए देश दुनिया में उनकी ख्याति है। इलेक्शन कमीशन ऑफ इंडिया ने उन्हें अपना आइकॉन भी बनाया है। अयोध्या प्रसाद सिंह के पौत्र राजन कुमार उनसे प्रेरणा लेकर ही समाजसेवा और देशसेवा करते हैं। शहर मसीहा नहीं, नमस्ते बिहार जैसी कई फिल्मों के हीरो राजन कुमार ने कहा कि मेरे दादा अयोध्या प्रसाद सिंह ने परिवार से दूर होकर देश की आजादी में हिस्सा लिया। उन्होंने अपनी जमीन को सरकारी कार्य के लिए दान स्वरूप भारत सरकार को लिख दिया जिसपर स्कूल और अस्पताल बने, लाखों लोग इसका लाभ ले रहे हैं।

उत्क्रमित मध्य विद्यालय हाजीपुर (पूर्वी) मे मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

हाजीपुर। उत्क्रमित मध्य विद्यालय हाजीपुर (पूर्वी) मे छात्राओं एवं शिक्षिकाओ द्वारा मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें वर्ग 6,7,8 की छात्राओं ने भाग लिया एवं अपने हाथो पर विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक त्रिवेणी कुमार ने कहा कि विद्यालय में इस तरह का आयोजन समय-समय पर होते रहना चाहिए, इससे छात्राओ का मनोबल बढ़ता है एवं बच्चों में जागृति आती है। शिक्षा के साथ-साथ इस तरह की गतिविधियाँ बराबर होती रहनी चाहिए जिससे कि बच्चो का सर्वांगिण विकास हो सके। इस कार्यक्रम में सोनम कुमारी, रिया कुमारी, संजना कुमारी, रानी कुमारी, आयषा कुमारी, संध्या कुमारी, अर्चना कुमारी, सुहानी कुमारी, शिवानी कुमारी, सपना कुमारी, रीति कुमारी, आलिया खातुन, तबस्सुम, के अलावे शिक्षिका सोनी कुमारी, ज्योति कुमारी, साहिजा, शिक्षक-ब्रजभूषण कुमार, विनय कुमार, सूरज कुमार, अंकित कुमार एवं अभिषेक कुमार आदि के अलावे पोषक क्षेत्र के अभिभावकों ने भी भाग लिया।

बिजली विभाग के मनमानी के खिलाफ एआईएसएफ ने महुआ बिजली ऑफिस पर किया प्रदर्शन

प्रात: किरण संवाददाता

महुआ। ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन ने महुआ बिजली ऑफिस का घेराव कर अपनी कई सूत्री मांगों को लेकर घंटो प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व एआईएसएफ के जिला अध्यक्ष छात्र नेता प्रकाश प्रियदर्शी ने किया। बिजली ऑफिस घेराव करने से पहले दर्जनों छात्रों ने महुआ बाजार के मिश्रा पेट्रोल पंप से जुलूस निकालकर पुरानी बाजार, थाना चौक, पुल रोड, गांधी स्मारक चौक होते हुए बिजली ऑफिस पहुंचा। बिजली ऑफिस के बाहर तैनात पुलिस कर्मियों ने गेट बंद कर दिया इसके बाद छात्रों ने घंटो सभा किया, नारा लगाया। सभा को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष प्रकाश प्रियदर्शी ने कहा कि आने वाले कुछ महीनों में बोर्ड की परीक्षा है, कई प्रतियोगी परीक्षा है लेकिन महुआ में पढ़ने के समय में ही बिजली गुल रहती है जिससे छात्रों को तैयारी प्रभावित हो रही है। महुआ में 24 घंटा बिजली देने की गारंटी करनी होगी। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए एआईएसएफ के राज्य परिषद सदस्य सफदर इरशाद ने कहा कि क्षेत्र के लोगो को गलत बिल थमाया जा रहा है और बिजली 10 से 12 घंटो तक ठप रहती है जिससे यहां के लोगों में भारी आक्रोश है। हमारी मांग पूरा करने तक आंदोलन जारी रहेगा।

घंटो प्रदर्शन करने के बाद बिजली ऑफिस के एसडीओ, महुआ के सीओ, थाना प्रभारी ने छात्रों से धरना स्थल पर मुलाकात किया छात्रों के सभी सवाल के जवाब में आश्वासन दिया उसके बाद प्रदर्शन को समाप्त कराया गया।

इस कार्यक्रम में इस कार्यक्रम में आदर्श रंजन यादव, उत्कर्ष महाराज उर्फ बच्चा बाबू, विकास दास, अमित कुशवाहा, रितिक कुमार, धीरज कुमार, सुशांत कुमार, नितेश कुमार, प्रियांशु कुमार, सोनू कुमार, रौनित कुमार, पंकज कुमार समेत दर्जनों छात्र उपस्थित थे।

लोकमंच के संस्थापक ठाकुर अमर सिंह की पुण्यतिथि मनाई गई

प्रात: किरण संवाददाता

हाजीपुर। समाजवादी नेता पूर्व सांसद लोकमंच के संस्थापक ठाकुर अमर सिंह की पुण्यतिथि भारतीय लोकमंच के तरफ से हाजीपुर छोटी मड़ई आर एन कॉलेज रोड कार्यालय में मनाया गया। जिसमें लोकमंच राष्ट्रीय प्रधान महासचिव वैशाली लोकसभा के पूर्व सांसद प्रत्याशी कुणाल सिकंद ने पूर्व सांसद लोकमंच के संस्थापक स्व: अमर सिंह के तल चित्र पर पुष्प अर्पित किये और कार्यक्रम की शुरूवात किया। उसके बाद एक-एक कर लोकमंच के सभी कार्यकताओं और सामाजिक कार्यकताओं ने मिल कर उनके तस्वीर पर पुष्प अर्पित किये। लोकमंच के तरफ से समाजिक कार्यकर्ताओ को उनके समाज के प्रति दिये गये योगदान को सहराते हुयें। जढुआ निवासी सूरज कुमार शर्मा, अनवरपुर निवासी जगरनाथ कुमार, शर्किट हाउस हाजीपुर निवासी नीरज कुमार, अनवरपुर निवासी सूरज कुमार रंजन, महुआ भरतपुर निवासी नवीन कुमार आदि रक्तवीरो तिलक, पुष्पों की माला गमछा और पौधा प्रदान कर उन सभी को सम्मानित किया गया। कुणाल सिकंद ने कहा लोकमंच के संस्थापक लोकमंच का गठन इस लिए किये थे कि समाज के अंतिम पैदान पर खड़े लोगो तक मदद की हाथ पहुँच सके और आज वो हो रहा है। कार्यक्रम में चंदन कुमार, छात्र संगठन सचिव सह सारण प्रभारी प्रिंस कुमार सिंह, पूर्व छात्र प्रदेश महासचिव राजू राज, सुजीत कुमार महुआ प्रखंड संयोजक देवानंद दास, संजय कुमार आदि लोग महजूद थें।

एनसीसी यूनिट के लिए कैडेटों के नए बैच के स्क्रीनिंग और सेलेक्शन की प्रक्रिया पूरी

हाजीपुर। राज नारायण महाविद्यालय, हाजीपुर के एनसीसी यूनिट के लिए कैडेटों के नए बैच के स्क्रीनिंग और सेलेक्शन की प्रक्रिया महाविद्यालय प्रांगण में पूरी की गई। स्क्रीनिंग की पूरी प्रक्रिया बिहार 32 बटालियन एनसीसी, मुजफ्फरपुर की टीम द्वारा आयोजित की गई, जिसमें सूबेदार कुशल सिंह और नायब सूबेदार रणजीत सिंह शामिल थे। एनसीसी के वरिष्ठ कैडेट पीयूष कुमार, आशीष कुमार और प्रभात कुमार ने इस प्रक्रिया में सक्रिय सहयोग दिया, जबकि प्राचार्य डॉ. रवि कुमार सिन्हा ने स्वयं स्क्रीनिंग प्रक्रिया की निगरानी की और महाविद्यालय के प्रतिभागी छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन किया। प्राचार्य ने बताया कि इस वर्ष एनसीसी में शामिल होने के लिए कुल 103 छात्रों ने आवेदन किया था, जिनमें से 102 छात्र शारीरिक परीक्षण और लिखित परीक्षा में शामिल हुए। शारीरिक परीक्षण के उपरांत- जिसमें ऊंचाई मापना, दौड़ना, पुश-अप और गेट-अप शामिल था- 46 छात्रों को लिखित परीक्षा में उपस्थित होने के लिए योग्य घोषित किया गया। लिखित परीक्षा कुल 75 अंकों की सामान्य ज्ञान पर आधारित थी जिसका मूल्यांकन, मुजफ्फरपुर में होगा। लिखित परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर कुल 37 कैडेटों का अंतिम रूप से चयन किया जाएगा।

आमजनों की समस्याओं के समाधान में लापरवाही एवं उदासीनता बरतने वाले अधिकारियों एवं कर्मियों के विरूद्ध की जायेगी सख्त कार्रवाई : जिलाधिकारी

प्रात: किरण संवाददाता

बेतिया (कुमार अभिजितम)। जिलाधिकारी कार्यालय प्रकोष्ठ में शुक्रवार को जनता दरबार का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय ने लोगों की समस्याओं एवं शिकायतों को बारी-बारी से सुना। जनता दरबार में कई समस्याओं एवं शिकायतों का ऑन-द-स्पॉट समाधान कराया गया। साथ ही कई मामलों में संबंधित प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों को फोन कर समस्याओं का समाधान करने के लिए शीघ्र समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी के जनता दरबार में कुल-75 मामले आए। जिन मामलों का समाधान आज नहीं हो सका, उसे संबंधित विभाग/अधिकारियों को भेजते हुए त्वरित गति से नियमानुकूल समाधान कराने हेतु निर्देशित किया गया। शुक्रवार को जनता दरबार में जिन लोगों द्वारा अपनी समस्याओं से जिलाधिकारी को अवगत कराया गया उनमें ओमप्रकाश चौधरी, रमेश प्रसाद चौरसिया, मो0 उस्मान, विजय कुमार कुशवाहा, नैनपति देवी, गिरधारी राम, अकलीमा खातुन, रंजू चौधरी, यमुना यादव, नंदकिशोर पाण्डेय आदि के नाम शामिल हैं। जनता दरबार में आये कुछ लोगों ने जिलाधिकारी को बताया कि प्रखंड स्तर के अधिकारी, कर्मी उनकी बातों को नहीं सुन रहे हैं।

इस पर जिलाधिकारी ने नराजगी व्यक्त की और संबंधित अधिकारियों को फोन कर उन्हें सख्त हिदायत दिया कि समस्याओं के समाधान हेतु प्रखंड/अंचल कार्यालय पहुंचने वाले लोगों को अच्छे से बैठाकर उनकी बातों को गंभीरता से सुने, उनके साथ अच्छा व्यवहार करें एवं अविलंब विधिसम्मत कार्रवाई करें। जिलाधिकारी ने जिले के सभी अधिकारियों को निर्देशित किया है कि जिलाधिकारी के जनता दरबार कार्यक्रम के दौरान सभी अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मियों के साथ कार्यालय में अचूक रूप से उपस्थित रहेंगे और अपने-अपने मोबाईल फोन ऑन रखेंगे ताकि किसी भी प्रकार का निर्देश दिये जाने पर त्वरित रूप से कार्रवाई हो सके।

कोच अंशुमन गायकवाड़ के सम्मान में

श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में भारतीय क्रिकेट टीम काली पट्टी बांध कर उतरी

कोलंबो (एजेंसी)। कोलंबो के प्रेमदासा स्टेडियम में श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी काली पट्टी बांधकर मैदान पर उतरे। मेजबान टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया था। इसके बाद फील्डिंग के लिए जैसे ही रोहित शर्मा की अगुवाई में टीम इंडिया मैदान पर आई तो सभी क्रिकेटरों के कंधे पर काली पट्टी बंधी हुई दिखी। टीम इंडिया ने यह पट्टी भारत के पूर्व क्रिकेटर, कोच अंशुमन गायकवाड़ के सम्मान में बांधी है। अंशुमन का 71 वर्ष की आयु में बुधवार रात वडोदरा के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया था। गायकवाड़ लंबे समय से कैंसर से जूझ रहे थे और इलाज में आर्थिक तंगी का सामना करने के बाद वह खबरों में भी आए थे। गायकवाड़ ने दिसंबर 1974 से दिसंबर 1984 तक भारत के लिए 40 टेस्ट मैच खेले और 15 वनडे मैचों में भी हिस्सा लिया। अपने खेल करियर के अलावा, गायकवाड़ ने दो अलग-अलग कार्यकालों में भारतीय क्रिकेट टीम के कोच के रूप में कार्य किया। उनके मार्गदर्शन में

भारत 2000 चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में पहुंचा। गौरतलब है कि 1983 विश्व कप विजेता टीम, बीसीसीआई सचिव जय शाह द्वारा भारत के पूर्व क्रिकेटर के लिए 1 करोड़ की वित्तीय सहायता की घोषणा करने से पहले, अंशुमान गायकवाड़ के लिए धन जुटाने के लिए आगे आई थी। अगले दोपहर, गायकवाड़ का उनके गृहनगर गुजरात के वडोदरा में अंतिम संस्कार किया गया। टीम इंडिया आज पूर्व भारतीय क्रिकेटर और कोच औंशुमन गायकवाड़ के लिए काली पट्टी बांध रही है, जिनका बुधवार को निधन हो गया।

दोनों टीमों की प्लेइंग 11

श्रीलंका – पथुम निसांका, अविष्का फर्नांडो, कुसल मेंडिस (विकेटकीपर), सदीरा समरविक्रमा, चैरिथ असलांका (कप्तान), जेनिथ लियानगे, वानिंदु हसरंगा, डुनिथ वेलालेज, अकिला धनंजय, असिथा फर्नांडो, मोहम्मद शिराज।

भारत – रोहित शर्मा (कप्तान), शुबमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल (विकेटकीपर), शिवम दुबे, वाशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह, मोहम्मद सिराज।

ओलंपिक 2024

बलराज पंवार रोइंग के अंतिम डी में पांचवें स्थान पर रहे

पेरिस (एजेंसी)। भारत के बलराज पंवार पेरिस ओलंपिक में पुरुष एकल स्कल्स स्पर्धा के फाइनल डी में 7~02.37 का समय के साथ पांचवें स्थान पर रहे। इसी के साथ भारत का रोइंग अभियान समाप्त हो गया।

25 वर्षीय सेना के जवान ने केवल चार साल पहले इस खेल में हिस्सा लेना शुरू किया था, वह अपने ओलंपिक पर्दापण में कुल मिलाकर 23वें स्थान पर हैं। हालांकि, वह ओलंपिक में रोइंग में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर सके। यह रिकॉर्ड अभी भी अर्जुन लाल जाट और अरविंद सिंह की पुरुषों की लाइटवेट डबल स्कल्स जोड़ी के नाम दर्ज है, जो टोक्यो 2020 में 11वें स्थान पर रहे थे। उल्लेखनीय है कि पंवार ने इस वर्ष अप्रैल में दक्षिण कोरिया के चुंगजू में एशियन और ओसिनियन रोइंग ओलंपिक क्वालिफिकेशन रेगाटा में कांस्य पदक जीतकर पेरिस ओलंपिक 2024 का कोटा हासिल किया था।

भारतीय तीरंदाजी मिश्रित टीम क्वार्टर फाइनल में पहुंची

पेरिस (एजेंसी)। भकत और धीरज बोम्मदेवरा की भारतीय तीरंदाजी मिश्रित टीम ने शुक्रवार को पेरिस ओलंपिक के राउंड ऑफ 16 मुकाबले में इंडोनेशिया के डायनांदा चोइरुनिसा और आरिफ पंगेस्टु की जोड़ी को 5-1 से हराकर अगले दौर में जगह बना ली है। आज हुई प्रतियोगिता में भकत-बोम्मदेवरा की जोड़ी ने क्रमश~ 37-36 और 38-37 के स्कोर के साथ पहला और तीसरा सेट जीता। दूसरा सेट 38-38 से बराबरी पर रहा। भारतीय जोड़ी ने प्री-क्वार्टर फाइनल जीत के दौरान पांच बार 10 के निशाने लगाए। क्वार्टरफाइनल में भारतीय जोड़ी का मुकाबला स्पेन से होगा।

आईपीएल टीमों की बीसीसीआई से मांग

अनुपलब्ध रहने पर विदेशी खिलाड़ियों पर लगे दो वर्ष का प्रतिबंध

मुम्बई (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के टीम मालिकों ने कहा है कि नीलामी में खरीदे जाने के बाद बिना किसी ठोस वजह अनुपलब्ध रहने वाले विदेशी खिलाड़ियों को पर दो साल का प्रतिबंध लगना चाहिए। टीम मालिकों और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के बीच बुधवार को हुई बैठक में फैंचाइजियों ने यह मांग की।

इसके साथ ही उन्होंने आईपीएल के सामने विदेशी खिलाड़ियों को बड़ी नीलामी के लिए पंजीकरण कराने को अनिवार्य करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों के अनुपलब्ध रहने का असर उनके प्रदर्शन पर भी पड़ता है क्योंकि टीम की रणनीति उन विदेशी खिलाड़ियों को ध्यान में रखकर बनाई जाती है।

उन्होंने कहा कि अगर खिलाड़ियों को बोर्ड

ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने के लिए कहा जाता है, या उन्हें चोट लग जाती है या फिर परिवार में किसी काम से वह टीम से अगर नहीं जुड़ पाते हैं, तो वो ऐसी स्थिति में खिलाड़ियों को अनुमति दे सकती हैं लेकिन खिलाड़ियों की अनुपलब्धता का पता उन्हें नीलामी समय पता चल जाए तो बेहतर होगा। उन्होंने कहा कि कई बार बेस प्राइस पर खरीदे जाने वाले खिलाड़ी नीलामी के बाद अपना नाम वापस ले लेते हैं।

उन्होंने एक खिलाड़ी का उदाहरण भी दिया जिसमें खिलाड़ी के मैनेजर ने यह शर्त रखी थी अधिक पैसे देने की स्थिति में वह खिलाड़ी खेलने के लिए तैयार हो सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि नीलामी के पिछले दो चक्र (2018-24) के दौरान कई ऐसे घटनाक्रम हुए हैं जब विदेशी खिलाड़ी छोटी नीलामी में मोटी रकम हासिल करने के लिए बड़ी नीलामी में उपलब्ध नहीं रहे। उन्होंने कहा कि कुछ खिलाड़ी और उनके मैनेजर इस प्रणाली का लाभ उठाने का प्रयास करते हैं और ऐसे में इस पर लगाम लगाने के लिए कुछ प्रावधान करने की दरकार है।

जूडो खिलाड़ी तूलिका मान पहले दौर में हार के साथ बाहर

पेरिस (एजेंसी)। भारतीय जूडो खिलाड़ी तूलिका मान पेरिस ओलंपिक की महिलाओं की 78 किग्रा से अधिक स्पर्धा के पहले दौर में शुक्रवार को यहां लंदन ओलंपिक की चैंपियन क्यूबा की इडेलिस ओर्टिज के खिलाफ शिकस्त के साथ बाहर हो गईं। राष्ट्रमंडल खेल 2022 की रजत पदक विजेता दिल्ली की 22 साल की तूलिका को क्यूबा की खिलाड़ी के खिलाफ इप्पोन से 0-10 से शिकस्त का सामना करना पड़ा। क्यूबा की खिलाड़ी के नाम चार ओलंपिक पदक हैं जिसमें एक स्वर्ण, दो रजत और एक कांस्य पदक शामिल हैं। ओर्टिज के खिलाफ तूलिका सिर्फ 28 सेकेंड की मुकाबले में टिक सकीं। तूलिका की हार के साथ जूडो में भारत का अभियान खत्म हो गया क्योंकि वह पेरिस खेलों में इस प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र खिलाड़ी थीं। इप्पोन दांव में जुडो खिलाड़ी अपने विरोधी को मैट पर काफी ताकत और गति से उसकी पीठ के बल गिराता है। इप्पोन तब दिया गया है जब कोई खिलाड़ी विरोधी को 20 सेकेंड तक अपनी गिरफ्त में रखता है या फिर विरोधी खिलाड़ी हार मान लेता है।

ओलंपिक 2024

भारत के तीन पदक, चीन सबसे ज्यादा गोल्ड के साथ पहले स्थान पर

पेरिस (एजेंसी)। अपना पहला ओलंपिक खेल रहे भारत के स्वप्निल कुसाले ने एक अगस्त को पेरिस ओलंपिक में पुरूषों की 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशंस में भारत के लिए पहली बार कांस्य पदक जीता। इसी के साथ ही भारत के अब तीन पदक हो चुके हैं और तीनों शूटिंग में आए हैं।

इससे पहले मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक में भारत को दूसरा पदक दिलाते हुए 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित स्पर्दा इवेंट में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचा। इसी के साथ ही भाकर एक ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बन गई है। मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक में भारत को पहला पदक दिलाते हुए महिला 10 मीटर एयर पिस्टल इवेंट में 28 जुलाई को कांस्य पदक अपने नाम किया था। वह 10 मीटर एयर पिस्टल में कांस्य पदक के साथ ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला निशानेबाज बनी।

पदकों के मामले में भारत 44वें स्थान पर है। चीन 21 पदकों के साथ पहले स्थान पर है। अमेरिका (27 पदक) दूसरे स्थान पर है। फ्रांस कुल 27 पदकों के साथ तालिका में तीसरे स्थान पर है। ऑस्ट्रेलिया और जापान चौथे और पांचवें स्थान पर हैं जिनके नाम अब तक क्रमशः 18-16 पदक हैं।

दिल्ली कैपिटल्स के मालिक हैम्पशर काउंटी में बड़ी हिस्सेदारी खरीदने के लिए सहमत

लंदन (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल्स के सह-मालिक जीएमआर ग्रुप ने इंग्लिश काउंटी टीम हैम्पशायर के साथ 120 मिलियन पाउंड (लगभग 1278 करोड़ रुपये) में बहुलांश हिस्सेदारी खरीदने के समझौते पर सहमति व्यक्त की है।

हैम्पशायर ऐसे में किसी विदेशी इकाई के स्वामित्व वाली पहली काउंटी टीम बन जाएगी। इससे जीएमआर समूह के पास इस टीम के 51 प्रतिशत शेयरों पर नियंत्रण होगा। एक रिपोर्ट में बताया, 'समझा जाता है कि दिल्ली कैपिटल्स के मालिकों ने आईपीएल के अपने प्रतिद्वंद्वी लखनऊ सुपरजायंट्स की बोली को पछाड़ दिया।

जीएमआर समूह के पास इसके साथ ही यूटिलिटा बाउल (हैम्पशायर में क्रिकेट स्टेडियम), हिल्टन होटल और उसी स्थान पर एक गोल्फ कोर्स का भी नियंत्रण होगा। दिल्ली कैपिटल्स के सह-मालिक होने के अलावा जीएमआर समूह के पास दुबई कैपिटल्स (आईएलटी20, यूएई) का स्वामित्व और मेजर लीग क्रिकेट (अमेरिका) की फ्रेंचाइजी सिएटल ऑर्कास में भी हिस्सेदारी है।

इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी), हैम्पशायर क्लब के अधिकारी और नये मालिक जल्द ही इस सौदे के बारे में आधिकारिक घोषणा करेंगे। इस अधिग्रहण के बाद उम्मीद है कि हैम्पशायर को 'द हंड्रेड'जैसे घरेलू टूर्नामेंट के लिए दिल्ली कैपिटल्स के कुछ युवा खिलाड़ियों तक पहुंच मिलने की संभावना भी खुल जाएगी।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) हालांकि सक्रिय भारतीय क्रिकेटरों को विदेशी टूर्नामेंटों में खेलने की अनुमति नहीं देता है। एक अन्य महत्वपूर्ण घटनाक्रम में, एक अन्य इंग्लिश काउंटी टीम यॉर्कशर ने हेडिंग्ले स्थित क्लब के संभावित अधिग्रहण के लिए राजस्थान रॉयल्स के साथ अपनी बातचीत फिर से शुरू कर दी है। इसके लिए मतदान के माध्यम से यॉर्कशर के 6000 सदस्यों की सहमति की आवश्यकता होगी।

40 साल बाद मार्टिनेज की ओलंपिक में वापसी

अब लॉस एंजिल्स खेलों पर नजर

शेटराउ (फ्रांस) (एजेंसी)। ओलंपिक खेलों में 40 साल बाद वापसी करने वाले 60 बरस के ट्रैप निशानेबाज लियोनेल मार्टिनेज के लिए उम्र सिर्फ एक संख्या है और वह अपने करियर को अगले ओलंपिक तक आगे बढ़ाने के लिए तैयार है। मार्टिनेज पेरिस खेलों की पुरुषों की ट्रैप प्रतियोगिता में 125 में से नौ निशाने चूक कर 28वें स्थान पर रहे।

1984 के लॉस एंजिल्स ओलंपिक के बाद यह इन खेलों में यह उनकी दूसरी उपस्थिति है। अगले ओलंपिक का आयोजन 2028 में लॉस एंजिल्स में किया जाएगा और मार्टिनेज का कहा कि वह अपने ओलंपिक करियर पर वहीं विराम लगाना चाहेंगे जहां उन्होंने इसकी शुरुआत की थी। उन्होंने कहा, 'मेरे अंदर एक रोशनी है जो मुझे लॉस एंजिल्स 2028 के लिए मार्गदर्शन कर रही है। यह मेरे लिए भविष्य है। इसके लिए काम अभी शुरू होगा। मैं अपने शरीर और दिमाग से काम करूंगा। यह खेल 90 प्रतिशत मानसिक मजबूती पर आधारित है।

खेल में विज्ञान को ज्यादा तवज्जो नहीं देते मार्टिनेज – खेल में विज्ञान को ज्यादा तवज्जो नहीं देने वाले मार्टिनेज ने कहा, 'मैं हर दिन जिम जाता हूं, मैं अपने शरीर को गतिशील रखता हूं। मैं उस चिकित्सा विज्ञान में विश्वास नहीं करता जो कहता है कि 40 या 50 साल की उम्र में आपको कुछ चीजें नहीं करनी चाहिए। यह उन लोगों के लिए सच हो सकता है जो इस पर विश्वास करते हैं, लेकिन मेरे लिए उम्र सिर्फ एक संख्या है।

हिरोशी सबसे लंबे अंतराल पर ओलंपिक में हिस्सा लेने वाले –सबसे लंबे अंतराल पर ओलंपिक में हिस्सा लेने के मामले में मार्टिनेज से आगे सिर्फ जापान के घुड़सवार होकेत्सु हिरोशी है। ड्रेसेज राइडर हिरोशी ने तोक्यो 1964 ओलंपिक में प्रतिस्पर्धा करने के 44 साल बाद बीजिंग ओलंपिक 2008 में भाग लिया था। उन्होंने इसके चार साल बाद 70 वर्ष की उम्र में लंदन ओलंपिक में भी भाग लिया था।

15 वर्षों के लिए खेल से दूर रहे मार्टिनेज – मार्टिनेज 1984 में 20 साल की उम्र में लॉस एंजिल्स ओलंपिक में भाग लेने के बाद लगभग 15 वर्षों के लिए खेल से दूर हो गए थे। उन्होंने चिकित्सा आपूर्ति का व्यवसाय स्थापित किया और जीवन के अन्य पहलुओं में व्यस्त हो गए। एक दर्शक के तौर पर 2011 के पैन अमेरिकन खेलों को देखने के बाद ही उन्होंने फिर से प्रतिस्पर्धा करने की ठानी।

उन्होंने कहा, 'मेरी प्रेरणा निश्चित रूप से मेरा जुनून है। वापसी के लिए प्रयास करने में ज्यादा हिम्मत नहीं लगती। आप अगर किसी चीज को लेकर जुनूनी होते हैं तो चीजें अपने आप होने लगती है। उन्होंने कहा, 'मैं संन्यास से वापसी करना चाहता था। मैंने अतीत में जो अनुभव किया था उसे फिर से करना चाहता था। इस जोश को आप अभी भी महसूस कर सकते हैं। खेल का यही मतलब है।

वर्ल्ड रैपिड और ब्लिट्ज़ टीम चैंपियनशिप 2024

कज़ाकिस्तान में डिंग लीरेन और कार्लसन की टक्कर

कज़ाकिस्तान (एजेंसी)। विश्व शतरंज एक बार फिर पांच दिवसीय आयोजन के लिए तैयार है, जहां दुनिया के शीर्ष खिलाड़ी एक साथ खेलते हुए नजर आएंगे । वर्ल्ड रैपिड और ब्लिट्ज टीम चैंपियनशिप के खिताब के लिए 39 टीमों के 350 खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। इनमें वर्तमान विश्व चैंपियन डिंग लिरेन और एक दशक से दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी और पाँच बार के विश्व चैम्पियन मैग्नस कार्लसन शामिल हैं।

टूर्नामेंट निदेशक पावेल ट्रेगुबोव ने कहा, हम इस आयोजन की तैयारी लंबे समय से कर रहे हैं यह शतरंज की दुनिया के लिए बहुत ही रोमांचक और नाटकीय होने वाला है।

शीर्ष टीमें – पिछले साल की विजेता टीम, डबल्यूआर चैस क्ष्क्र ष्द्धद्गद्दह्वद्ग , इस बार और भी मजबूत लाइनअप के साथ वापसी कर रही है। इस टीम में तीन पूर्व विश्व चैंपियन - मैग्नस कार्लसन, अलेक्जेंड्रा कोस्टेनियुक, और हाउ यिफ़ान - के साथ-साथ दो बार के विश्व चैंपियन उम्मीदवार इयान नेपोमनिशी और पोलिश सुपरस्टार जान-क्रिज़्टोफ़ डूडा शामिल हैं। टीम के कप्तान जर्मन जीएम जान गुस्ताफ़सन हैं और टीम में पूर्व विश्व रैपिड चैंपियन नोदिरबेक अब्दुस्सत्तोरोव, भारतीय प्रतिभा आर प्रज्ञानंदा, और जर्मन प्रतिभा विन्सेंट केमर शामिल हैं, जबकि गैर-पेशेवर खिलाड़ी वादिम रोसेनस्टीन भी टीम का हिस्सा हैं।

इनके खिलाफ प्रतिस्पर्धा में चेस्सी टीम है, जिसके कप्तान जीएम एमिल सुतोवस्की हैं। इस टीम में शीर्ष खिलाड़ी रिचर्ड रैपोर्ट, विदित संतोष गुजराती, अलेक्सी सराना, जोर्डन वैन फोरेस्ट, और शीर्ष महिला खिलाड़ी अन्ना मुझ्यचुक और हम्पी कोनेरू शामिल हैं।

मां बनने के दो साल के अंदर तीन महिलाओं ने ओलंपिक में जीते पदक, बच्चों के साथ मनाया जश्न

पेरिस (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक में तीन माताओं के लिए नौकायन स्पर्धा में पदक जीतने के बाद अपने बच्चों के साथ जश्न मनाना बेहद खास रहा। ब्रिटेन की अनुभवी हेलेन ग्लोवर, न्यूजीलैंड की लुसी स्पूर्स और ब्रूक फ्रांसिस बच्चे को जन्म देने के दो साल से भी कम समय के अंदर ओलंपिक पदक जीतने में सफल रहीं। स्पूर्स तथा फ्रांसिस की जोड़ी ने महिला युगल स्कल्स में स्वर्ण पदक जीता, जबकि तीन बच्चों की मां ग्लोवर महिला फोर स्पर्धा में रजत पदक हासिल करने में सफल रही। स्पूर्स और फ्रांसिस के जीत दर्ज करने के तुरंत बाद दर्शक दीर्घा में बैठे अपने बच्चों को गोद में उठा लिया।

बच्चों का पालन-पोषण करना आसान नहीं – फ्रांसिस – फ्रांसिस ने कहा, 'मैंने उन्हें स्टैंड में देखा और उन्हें गले लगाने में भी कामयाब रही। मुझे लगता है कि वे अपनी मां के वापस आने का इंतजार कर रहे थे।%- न्यूजीलैंड की ये दोनों खिलाड़ी अपने बच्चों की देखभाल के मुश्किल समय के दौरान एक-दूसरे को प्रेरित करने के लिए अभ्यास सत्र के दौरान बच्चों के गीत गाते थे। वे अपने परिवारों को पेरिस ले आए ताकि प्रतियोगिता पर ध्यान केंद्रित कर सकें। फ्रांसिस ने कहा, 'यह शानदार एहसास है। बच्चों का पालन-पोषण करना आसान नहीं है। हमें इसमें परिवार और दूसरे खिलाड़ियों का भी साथ मिला हैं। यह इसे और भी अधिक खास बनाता है। हमारा परिवार यहां है और हमारे बच्चों को अब यह विरासत देखने को मिलती है।%-

इससे हमें अच्छा करने की और अधिक प्रेरणा मिली – स्पूर्स – स्पूर्स ने कहा कि उन्हें और फ्रांसिस को प्रतिस्पर्धियों और अन्य टीमों से समर्थन के संदेश मिल रहे थे, जिसमें कहा गया था कि वे उनका कितना सम्मान करते हैं। स्पूर्स ने कहा, 'फ्रांसिस और मेरी स्थिति बिल्कुल एक जैसी है। मुझे लगता है कि हम जानते हैं कि हम दोनों किस दौर से गुजर रहे हैं। इससे हमें अच्छा करने की और अधिक प्रेरणा मिली।

मां बनने के बाद वापसी कर सकते हैं–ग्लोवर – ग्लोवर ने अभ्यास के दौरान अपने बच्चों को स्तनपान कराने की चुनौती के बारे में बात की है। वह अपनी रेस पूरी करने के बाद सीधे अपने बच्चों को हाई-फाइव करने गईं। उन्होंने पदक समारोह के बाद भी अपने बच्चों गले लगाया। ग्लोवर ने कहा, 'उन्हें यह (मेरा दूसरे स्थान पर रहना और पदक मिलना) बहुत अच्छा रहा है। ग्लोवर ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि उनकी उपलब्धि अन्य खिलाड़ियों को सकारात्मक संदेश देगी।

उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि इसे (स्तनपान) सामान्य बनाना वास्तव में महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि यह दिखाता है कि आप (मां बनने के बाद) वापसी कर सकते हैं, चाहे वह कुछ भी हो, चाहे वह काम हो, शौक हो, खेल हो या कुछ और। आप बच्चे होने के बावजूद उत्कृष्टता प्राप्त नहीं कर सकते। मुझे लगता है कि यह समाज के लिए एक संदेश है और महिलाएं जो चाहती हैं वह बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

हरियाणा चुनाव में 25 पर्सेंट नए चेहरे उतारेगी भाजपा

चंडीगढ़ , एजेंसी। हरियाणा में 2014 के विधानसभा चुनाव में भाजपा पूर्ण बहुमत से सत्ता में आई थी। इसके बाद 2019 में उसे गठबंधन सरकार बनाने का मौका मिला और अब ऐंटी-इनकम्बैंसी बढ़ने का खतरा है। आम चुनाव में उसे राज्य की 10 में से 5 सीटें ही मिल पाईं। ऐसे में माना जा रहा है कि पार्टी को विधानसभा चुनाव में और ज्यादा चुनौती मिल सकती है। इसे देखते हुए भाजपा ने रणनीति बनाना शुरू कर दिया है। मंगलवार को हरियाणा चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान के आवास पर देर रात तक दिल्ली में मीटिंग चली थी। इसके अलावा अब कैंडिडेट्स को लेकर भी मंथन तेज हो गया है। राज्य में भाजपा अकेले ही उतरने की तैयारी में है। सूत्रों का कहना है कि विधानसभा चुनाव में भाजपा कम से कम 25 पर्सेंट नए चेहरे उतार सकती है। यानी करीब 22 से 23 सीटों पर भाजपा उन चेहरों पर दांव लगाएगी, जो अब तक विधायक नहीं रहे हैं। पार्टी रणनीतिकारों का मानना है कि इससे आधार को बढ़ाने में मदद मिलेगी और अब तक सक्रिय रहे नेताओं के खिलाफ ऐंटी-इनकम्बैंसी की भी काट की जा सकेगी। कई सीटों पर तो मंत्रियों को भी टिकट की रेस से बाहर किया जा सकता है। खबर है कि सभी मौजूदा विधायकों के अलावा मंत्रियों और उन नेताओं का भी रिपोर्ट कार्ड तैयार हो रहा है, जो टिकट की दावेदारी में जुटे हैं। खासतौर पर ऐसे लोगों पर ही फोकस है, जो जीत दिला पाएं। पार्टी सूत्रों ने कहा कि भाजपा ने 2019 का चुनाव भी अकेले ही लड़ा था। तब 90 सीटों पर लड़ने वाले कैंडिडेट्स में से एक चौथाई को रिप्लेस किया जा सकता है। उनकी जगह पर सामाजिक समीकरणों को साधते हुए नए चेहरे दिए जा सकते हैं। खबर है कि खुद प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली भी चुनाव में नहीं उतरेंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि उन पर पूरे राज्य में प्रचार का जिम्मा रहेगा। वहीं कुछ मंत्रियों को नॉन-परफॉर्मर होने के चलते बाहर किया जा सकता है।

समर स्पेशल ट्रेनों की अवधि बढ़ी, दिसंबर तक चलेंगी

जयपुर, एजेंसी। कोटा रेल मंडल ने यात्रियों को सुविधा देने के लिए रेलवे ने 12 समर स्पेशल ट्रेन की समय अवधि बढ़ाई है। इन ट्रेनों में कोटा से बड़ोदरा, मऊ, अहमदाबाद, पटना, वैष्णो देवी, मुंबई, वाराणसी और काठगोदाम जाने वाली ट्रेनें शामिल हैं। इनमें कुछ ट्रेनों को सितंबर और कुछ को दिसंबर तक बढ़ाया गया है। जिससे यात्रियों को वेटिंग का सामना नहीं करना पड़ेगा। इन ट्रेनों की समय सीमा जुलाई में समाप्त होने वाली थी, लेकिन आने वाले दिनों में राखी और अन्य त्योहार भी आने वाले हैं। कोटा रेल मंडल के वरिष्ठ वाणिज्य अधिकारी रोहित मालवीय ने बताया कि रेल प्रशासन ने अतिरिक्त यात्री भीड़ को क्लीयर करने के उद्देश्य से कोटा होकर संचालित 6 जोड़ी समर स्पेशल ट्रेनों की अवधि को बढ़ाया गया है. पहले जारी अधिसूचना के अनुसार ये स्पेशल ट्रेन 31 जुलाई तक ही संचालित की जानी थी, जिसे अब बढ़ा दिया गया है.

अग्निवीर ने 6 दोस्तों संग बच्ची को बनाया हवस का शिकार, ड्यूटी से गिरफ्तार

अलवर। अलवर में नाबालिक छात्रा से गैंगरैप का आरोपी अग्निवीर को अलवर पुलिस ने उत्तराखंड से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने आरोपी अग्निविर को 15 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। कठूमर डीएसपी जोगेंद्र राजावत ने बताया की क्षेत्र में एक नागाबिक के साथ गैंग रेप का मामला सामने आया था। पीड़िता की शिकायत पर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। पुलिस ने पीड़िता का मेडिकल कराने के बाद जांच शुरू की। आरोपी गैंगरेप की घटना के बाद से फरार हो गए थे। डीएसपी जोगेंद्र राजावत ने बताया कि जब मामले की जांच की तो सामने आया की आरोपी भावेश अग्निवीर योजना के तहत सेना में भर्ती हो चुका है। गैंगरेप की घटना के बाद से वह फरार था।

देवेंद्र फडणवीस को दी चुनौती तो भड़के एकनाथ शिंदे, उद्धव ठाकरे से कहा- जो घर से नहीं निकले वो ये बात कर रहे हैं

मुंबई , एजेंसी।
महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शिवसेना चीफ उद्धव ठाकरे पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि कभी घर से बाहर नहीं निकलने वाले अब किसी को खत्म करने की बात कर रहे हैं। दरअसल, एक दिन पहले ही उद्धव ने राज्य के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को चुनौती दी थी कि राजनीति में दोनों में से कोई एक ही बचेगा। साथ ही उद्धव ने फडणवीस पर उन्हें और उनके बेटे आदित्य ठाकरे को जेल भेजने की साजिश के आरोप लगाए।

शिंदे ने कहा, बहुत अजीब बात है कि जो कभी अपने घरों से बाहर नहीं निकले, वो अब रणभूमि और दूसरों को खत्म करने की बात कर रहे हैं। इससे पहले भारतीय जनता पार्टी भी उद्धव के बयान पर आपत्ति जाहिर कर चुकी है। महाराष्ट्र भाजपा के प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा था, कई बार जन्म लेने के बाद भी उद्धव राजनीतिक रूप से फडणवीस को खत्म नहीं कर पाएंगे।

बावनकुले ने नागपुर में संवाददाताओं से कहा कि ठाकरे की भाषा उनके मानसिक दिवालियापन को दर्शाती है। बावनकुले ने कहा, ठाकरे कोंकण और मुंबई में अपनी पार्टी के गिरते मत प्रतिशत को लेकर चिंतित हैं। जिस दिन उन्होंने कांग्रेस के साथ गठबंधन किया, उनके समर्थकों ने उनका साथ छोड़ दिया। जब वे भाजपा के साथ गठबंधन में थे, तो उन्होंने 18 लोकसभा सीट जीती थीं, लेकिन अब सीट की संख्या में गिरावट आई है। ठाकरे इतना नीचे गिरकर और फडणवीस पर हमला करके अपना मानसिक दिवालियापन दिखा रहे हैं।

शिंदे ने यह भी कहा कि राजनीति में किसी को भी दूसरों को पूरी तरह से खत्म करने की बात नहीं करनी चाहिए। उन्होंने ने कहा, जो लोग चुनौती देने की बात

करते हैं, उन्हें समझना चाहिए कि हम कहां खड़े हैं। इसके लिए किसी व्यक्ति को ताकत की जरूरत होती है। बेतरतीब टिप्पणी करने की तरह, कोई भी दूसरे को खत्म नहीं कर सकता।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष (जेपी नड्डा की जगह जो अब केंद्रीय मंत्री हैं) पद पर फडणवीस के नाम पर विचार किए जाने की अटकलों के बारे में पूछे जाने पर बावनकुले ने कहा कि उन्हें नहीं पता कि केंद्रीय नेतृत्व क्या फैसला करेगा। उन्होंने कहा, हालांकि, देवेंद्र फडणवीस के पास बहुत बड़ा संगठनात्मक अनुभव है। उन्होंने महाराष्ट्र भाजपा अध्यक्ष के रूप में काम किया है और उन्हें राष्ट्रीय संगठनात्मक अनुभव भी है, लेकिन महाराष्ट्र को देवेंद्र फडणवीस की दृष्टि की जरूरत है। ठाकरे ने कहा था, अनिल देशमुख ने अब खुलासा कर दिया है कि कैसे फडणवीस ने मुझे और आदित्य ठाकरे को जेल में डालने की साजिश की थी। मैंने सब कुछ सहन किया, लेकिन बहादुरी से मजबूती के साथ खड़ा रहा। तो अब या तो आप (फडणवीस) राजनीत में रहेंगे या मैं रहूंगा। आज मेरे पास कोई पार्टी, चिह्न या पैसा नहीं है, लेकिन मैं मेरे साथ खड़े शिवसैनिकों की बहादुरी की वजह से भापा को चुनौती दे रहा हूं।

जल्द करेंगे लागू- सुप्रीम कोर्ट के एससी, एसटी कोटा फैसले पर बोले नायडू और रेवंथ रेड्डी

विजयवाड़ा , एजेंसी।
आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू और तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने एससी/एसटी कोटा के सब कैटेगराइजेशन पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत किया है। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए एससी एसटी रिजर्वेशन कोटे में सब कैटेगराइजेशन को सही ठहराया है और कहा है कि यह जरूरी है कि सभी वर्ग समान रूप से आरक्षण का लाभ उठा सके। साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने ओबीसी के कोटे की तरह ही अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कोटे में भी क्रीमी लेयर लागू करने की बात की है। इस फैसले पर खुशी जताते हुए रेवंथ रेड्डी ने विधानसभा के बजट सत्र के दौरान कहा है कि यह फैसला जल्द लागू किया जाएगा और इसके तहत मडिगा समुदाय को नई घोषित सरकारी भर्ती में आरक्षण मिलेगा। रेड्डी ने कहा कि मडिगा समुदाय पिछले 27 सालों से

उप-वर्गीकरण के लिए संघर्ष कर रहा है। इस मामले में सदन से सरकार का समर्थन करने का अनुरोध करते हुए उन्होंने कहा कि अगर जरूरी हुआ तो कोटा को जल्द से जल्द लागू करने के लिए अध्यादेश भी लाया जाएगा।

चंद्रबाबू नायडू ने भी फैसले पर जताई खुशी: वहीं आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने भी इस फैसले पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने कहा है कि यह टीडीपी ही थी जिसने हाशिए पर मौजूद वर्गों के लाभ के लिए सब कैटोगराइजेशन की जरूरत को सबसे पहले पहचाना था। टीडीपी ने इसे लागू भी किया था लेकिन कुछ वजहों से अदालत ने इस पर रोक लगा दी थी।

टीडीपी सरकार ने किया था कमिटी का गठन: चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि एससी कैटेगरी के अंदर मौजूद कुछ समूहों की जरूरतों को पहचानते हुए टीडीपी सरकार ने जस्टिस पी रामचंद्र राजू आयोग का गठन किया था।

विदेशी धरती पर साजिश, राहुल गांधी पर हो सकता है हमला; संजय राउत का बड़ा दावा

मुंबई , एजेंसी।
राहुल गांधी ने संसद में 29 जुलाई को महाभारत में चक्रव्यूह का जिक्र करते हुए भाषण दिया था। इसके बाद आज राहुल गांधी ने एक पोस्ट किया है जो खूब चर्चा में है। उन्होंने दावा किया कि ईडी के एक अंदरूनी सूत्र ने उन्हें बताया कि उन पर छापा मारा जा सकता है। राहुल गांधी ने दावा किया कि दोनों में से एक मेरे चक्रव्यूह भाषण से सहमत नहीं था।

इसके बाद संजय राउत ने इसे लेकर बड़ा आरोप लगाया है। शिवसेना नेता संजय राउत ने कहा है कि कुछ भी हो सकता है, राहुल गांधी पर हमला भी हो सकता है। उनके खिलाफ विदेशी धरती पर भी साजिश हो रही है। राहुल गांधी ने कहा था बहुत लोगों को चक्रव्यूह के संदर्भ में मेरा भाषण पसंद नहीं आया। ईडी के एक सूत्र ने मुझे बताया कि अब आप पर छापा पड़ने वाला है। इस संबंध में योजना तैयार की जा रही है। मैं तैयार हूं, ईडी का इंतजार कर रहा हूं। चाय और बिस्किट मेरी तरफ से। ऐसा ही एक सांकेतिक पोस्ट राहुल गांधी ने किया है. इसके बाद संजय राउत केंद्री

सरकार पर हमला किया है। उन्होंने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि मशाल के निशान ने महाराष्ट्र में बीजेपी की सीट में आग लगा दी है। उन्होंने कहा, बालासाहेब ठाकरे की शिव सेना उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में अच्छा प्रदर्शन कर रही है। हम मशाल चुनाव चिन्ह पर ही चुनाव लड़ने जा रहे हैं। यह मशाल का निशान ही था जिसने भाजपा की महाराष्ट्र सीट में आग लगा दी। हमारा प्रतीक मशाल, बिगुल और कांग्रेस का हाथ है। हम साथ मिलकर चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि धनुष और तीर अब चोरों के पास है। लोकसभा में धनुष और बाण के दम पर उन्होंने कुछ चोरियां कर लीं लेकिन अब विधानसभा में नहीं सफल हो पाएंगे।

गेस्ट हाउस में लाया गया था बम, दो महीने की प्लानिंग और हानिया ढेर

बेरूत , एजेंसी। हमास चीफ इस्माइल हानिया की मौत के बाद मध्य पूर्व एशिया क्षेत्र में तनाव काफी बढ़ चुका है। ईरान ने इजरायल पर हमला करने की धमकी दी है। वहीं, इजरायली सेना लगातार गाजा पट्टी में सैन्य कार्रवाई कर रही है। लेबनान में मौजूद हिजबुल्लाह भी इजरायल पर हमला कर रहा है। इस्माइल हनिया की मौत पर रूस, तुर्किए जैसे देशों ने चिंता जाहिर की है। हालांकि, इजरायल ने आधिकारिक तौर पर इस बात को कबूल नहीं किया है कि उसकी सेना ने हमास चीफ को मौत के घाट उतारा है।

इसी बीच समचार पत्र न्यू यॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, हमास चीफ इस्माइल हानिया की मौत एक विस्फोट की वजह से हुई थी। विस्फोटक डिवाइस को दो महीने पहले तेहरान के उस गेस्ट हाउस में छिपाकर रखा गया था, जहां हानिया ठहरने वाला था। रिपोर्ट में दावा किया गया कि जब हानिया अपने वीवीआईपी भवन पहुंचा तो रिमोट कील मदद से ब्लास्ट कर दिया गया। रिपोर्ट में ईरानी सेना इस्लामिक रिवोल्यूशनी गार्ड कॉर्प्स के दो सदस्यों सहित कई अधिकारियों के हवाले से जानकारी दी गई है। रिपोर्ट में आगे ये भी जानकारी दी गई कि तस्करी के जरिए गेस्ट हाउस में बम लाया गया था। दावा किया गया कि कातिल ने हानिया के शेड्यूल को फॉलो किया और उसके ठिकानों का पता लगाया। रिपोर्ट के मुताबिक, हानिया तेहरान में नेशहत नामक आईआरजीसी के कंपाउंड में ठहरा हुआ था। इस कंपाउंड में सीक्रेट मीटिंग्स का आयोजन किया जाता था। वहीं, हानिया जैसे हाई प्रोफाइल गेस्ट को ठहराया जाता था।रिपोर्ट में हादसे के समय की जानकारी भी दी गई है। धमाका स्थानीय समयानुसार तड़के दो बजे हुआ था। रिपोर्ट के मुताबिक, बम धमाके के बाद हमास के एक वरिष्ठ अधिकारी खलील अल-हाया मौके पर पहुंचे। उसने घटना की जानकारी ईरान के सुप्रीम लीडर अयातोल्लाह अली खामेनेई को दी। बताते चलें कि हानिया राष्ट्रपति के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए ईरान पहुंचा था।

बांग्लादेश ने जमात-ए-इस्लामी पार्टी व उसकी छात्र शाखा पर लगाया प्रतिबंध

ढाका , एजेंसी।
बांग्लादेश ने देशव्यापी अशांति के चलते जन सुरक्षा के लिए उत्पन्न खतरे का हवाला देते हुए आतंकवाद रोधी कानून के तहत जमात-ए-इस्लामी और इसकी छात्र शाखा 'इस्लामी छात्र शिबिर पर बृहस्पतिवार को प्रतिबंध लगा दिया। गृह मंत्रालय के सार्वजनिक सुरक्षा प्रभाग द्वारा जारी एक अधिसूचना में इस्लामिस्ट पार्टी पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की गई। यह पार्टी पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया की बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी की प्रमुख सहयोगी है। जमात, छात्र शिबिर और अन्य संबद्ध समूहों पर प्रतिबंध आतंकवाद रोधी कानून की धारा 18(1) के तहत एक आदेश के माध्यम से लगाया गया।

प्रधानमंत्री शेख हसीना ने बृहस्पतिवार को कहा, ''उन्होंने छात्रों को अपनी ढाल के रूप में इस्तेमाल किया। प्रधानमंत्री हसीना ने यह बात तब कही जब इतालवी राजदूत एंटोनियो एलेसांद्रो ने यहां उनके सरकारी आवास गणभवन में उनसे मुलाकात की। बांग्लादेश सरकार ने सरकारी नौकरियों में आरक्षण को लेकर देशभर में हुए छात्रों के हिंसक विरोध प्रदर्शन के बाद मंगलवार को जमात-ए-इस्लामी पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया। सरकार ने आरोप लगाया कि जमात-ए-इस्लामी उस आंदोलन का फायदा उठा रही है, जिसमें कम से कम 150 लोग मारे गए। यह

घटनाक्रम प्रधानमंत्री शेख हसीना की अवामी लीग के नेतृत्व वाले 14-दलों गठबंधन की बैठक के बाद हुआ है। इस बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया गया था कि जमात को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।

जमात पर प्रतिबंध लगाने का हालिया निर्णय 1972 में ''राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धर्म का दुरुपयोग करने के कारण लगाए गए प्रारंभिक प्रतिबंध के 50 वर्ष बाद आया है। सत्तारूढ़ अवामी लीग के शीर्ष नेताओं ने मुक्ति संग्राम में जमात की भूमिका के कारण इस पर प्रतिबंध का समर्थन किया है। जमात का पंजीकरण रद्द होने और अदालती फैसलों के कारण चुनावों में हिस्सा लेने से प्रतिबंधित होने के बावजूद यह सक्रिय रही। सरकार ने प्रतिबंध लगाने का कारण हालिया प्रदर्शनों में पार्टी की संलिप्तता का उल्लेख किया है। कानून मंत्री अनीसुल हक ने मंगलवार को कहा था कि यह प्रतिबंध कोटा सुधार आंदोलन से जुड़ी हालिया हिंसा के कारण लगाया जा रहा है और इसे एक कार्यकारी आदेश के जरिए लागू किया जाएगा।

अमेरिका और रूस ने की बड़े कैदियों की अदला-बदली, अमेरिकी एवैन गेरशकोविच और पॉल व्हेलन हुए रिहा

वॉशिंगटन , एजेंसी।
अमेरिका और रूस के बीच बड़ी संख्या में कैदी आदान-प्रदान की प्रक्रिया चल रही है। इस अदला-बदली में वॉल स्ट्रीट जर्नल के पत्रकार एवैन गेरशकोविच और पूर्व अमेरिकी मरीन पॉल व्हेलन समेत कई अमेरिकी शामिल हैं। एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के अनुसार, दोनों पक्षों ने कैदी आदान-प्रदान के लिए सहमति बना ली है और कैदियों को अमेरिकी अधिकारियों की देखरेख में सौंपा जाएगा। यह आदान-प्रदान गुरुवार को पूरा होने की उम्मीद है। ब्लूमबर्ग समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार रूस ने एक बहुराष्ट्रीय कैदी आदान-प्रदान के हिस्से के रूप में अमेरिकी पत्रकार एवैन गेरशकोविच और पूर्व अमेरिकी मरीन पॉल व्हेलन को रिहा कर दिया है।

इस समझौते से पॉल व्हेलन के लिए पांच साल से अधिक और एवैन गेरशकोविच के लिए एक साल से अधिक समय तक चले बुरे सपने का अंत हो गया। दोनों को अमेरिकी विदेश विभाग ने गलत तरीके से हिरासत में लिया गया था। गुरुवार का यह आदान-प्रदान मॉस्को और वाशिंगटन के बीच महीनों की शांत और जटिल वार्ताओं के बाद हुआ जिसमें अमेरिकी राजनयिकों ने रूस को अमेरिकी कैदियों को रिहा करने के लिए प्रोत्साहन देने के लिए दुनिया भर में प्रस्तावों की खोज की। एवैन गेरशकोविच को मार्च 2023 में येकातेरिनबर्ग में रिपोर्टिंग यात्रा के दौरान गिरफ्तार किया गया था। उन्हें 19 जुलाई को एक रूसी अदालत ने जासूसी का दोषी पाया और 16 साल की सजा सुनाई। अमेरिकी सरकार, उनके अखबार और समर्थकों ने इस मुकदमे को दिखावा करार दिया है। पॉल व्हेलन जो अमेरिकी, आयरिश, ब्रिटिश और कनाडाई नागरिक हैं, को दिसंबर 2018 में मॉस्को के एक होटल में रूसी अधिकारियों ने हिरासत में लिया था, जिन्होंने

आरोप लगाया था कि वह एक खुफिया अभियान में शामिल थे। पूर्व अमेरिकी मरीन को जासूसी के आरोप में 16 साल की सजा सुनाई गई थी, जिसे उन्होंने सख्ती से नकारा है। वह मॉस्को से आठ घंटे की ड्राइव पर स्थित मॉर्डोविया में एक श्रम शिविर में अपनी सजा काट रहे थे, जहां उन्होंने जून 2021 में सीएनएन को बताया कि वह अपना दिन एक कपड़ा फैक्ट्री में काम करते हुए बिताते हैं, जिसे उन्होंने पसीना घर कहा। व्हेलन के लिए यह विशेष रूप से लंबा इंतजार रहा है, जो पहले कई आदान-प्रदान में शामिल नहीं थे। वह 2022 के दो समझौतों का हिस्सा नहीं थे। उस वर्ष अप्रैल में, मॉस्को ने पूर्व अमेरिकी मरीन ट्रेवर रीड को रूसी नागरिक और दोषी ड्रग तस्कर कोंस्टेंटिन यारोशेंको के बदले में रिहा किया था। दिसंबर में, ड्डह्लक्कस्टार ब्रिटनी ग्रिनर को रूसी हथियार डीलर विक्टर बाउट के बदले में बदला गया था।

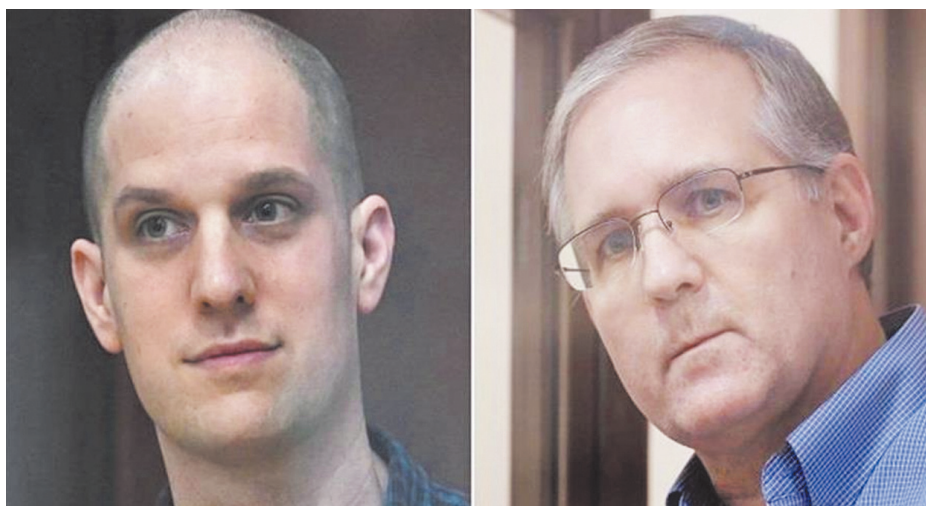

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129